चैत्र मास शुक्ल पक्ष, 22 वर्ष, अंक 102, पृष्ठ 8, मूल्य 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | गुरूवार 11 मई 2023 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को दुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

नाथद्वारा की धरा पर मोदी-मोदी के जयकारों से हुआ पीएम का स्वागत

उदयपुर/राजसमंद। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन पर वैष्णव तीर्थ नाथद्वारा की धरा मोदी-मोदी के नारों से गुंजायमान हो गई। बुधवार सुबह जैसे ही प्रधानमंत्री नाथद्वारा पहुंचे और कार से मंदिर मार्ग की तरफ बढ़े, दोनों ओर बड़ी संख्या में उमड़े जनसैलाब ने पुष्पवर्षा से उनका स्वागत किया। दोनों तरफ से पुष्पवर्षा के साथ थाली-मांदल की गूंज और मोदी-मोदी के नारे लगातार गूंजते रहे। प्रधानमंत्री मोदी करीब सवा ग्यारह बजे मंदिर में पहुंचे। उन्होंने मोती महल के द्वार से मंदिर में प्रवेश किया। उन्होंने भगवान श्रीनाथजी की राजभोग की झांकी के दर्शन किए। प्रधानमंत्री महाप्रभुजी की बैठक में पहुंचे जहां महाप्रभुजी की गादी को नमन के बाद तिलकायत विशाल बावा ने परम्परानुसार उन्हें रजाई ओढ़ाकर, प्रसाद, पान का बीड़ा आदि भेंटकर समाधान किया। इस दौरान उन्होंने वहीं बैठकर तिलकायत से चर्चा भी की। प्रभु श्रीनाथजी के दर्शन के दौरान मोदी ने ललाट पर वल्लभ सम्प्रदाय का प्रतीक तिलक भी लगाया। साथ ही, वहां वैदिक मंत्रोच्चार कर रहे बटुकों के समक्ष भेंट भी अर्पित की। दर्शनोपरांत लौटने के दौरान भी मार्ग के दोनों ओर खड़े जनसमुदाय ने पुष्प बरसाए और नारे लगाए। लोग उनकी झलक पाने के लिए बेताब नजर आए। इस दौरान चौपाटी पर कड़ा पुलिस बंदोबस्त नजर आया।

पीएम राइट टू सोशल सिक्योरिटी एक्ट लागू करने पर करें विचार: गहलोत

उदयपुर/राजसमंद। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी से राइट टू सोशल सिक्योरिटी एक्ट लागू करने पर विचार करने का आग्रह किया है। इसके साथ ही उन्होंने प्रधानमंत्री के सामने मांगों की फेहरिस्त रखते हुए राजस्थान की झोली को भरने का आग्रह किया। राजसमंद जिले के नाथद्वारा में बुधवार को प्रधानमंत्री मोदी की सभा में मुख्यमंत्री गहलोत ने तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के कार्यकाल में देश में लागू किए गए राइट टू इनफोरमेशन, राइट टू एजुकेशन, नरेगा, फूड सिक्योरिटी के साथ राजस्थान में लागू मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बीमा योजना चिरंजीवी तथा राइट टू हेल्थ का जिक्र किया। गहलोत ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी राइट टू सिक्योरिटी योजना को पूरे देश में लागू करने पर विचार करें। गहलोत ने उबर-ओला-जोमेटा-स्वीगी जैसी कम्पनियों में डिलीवरी बॉय के रूप में कार्य कर रहे असंगठित क्षेत्र के युवाओं पर भी प्रधानमंत्री से नीति बनाने का आग्रह किया। गहलोत ने कहा कि इसके लिए राजस्थान में उनकी सरकार ने सोशल सिक्योरिटी पर विचार शुरू किया है। उज्ज्वला योजना अच्छी योजना थी जिसमें फ्री में गैस कनेक्शन दिए गए, लेकिन सिलेंडर महंगे होते चले जाने से सिलेंडर लेना मुश्किल हो गया। राजस्थान ने उज्ज्वला योजना के गैस कनेक्शन धारकों को 500 रुपये में सिलेंडर देने का निर्णय किया है। गहलोत ने प्रधानमंत्री से इस सम्बंध में विचार का आग्रह किया।

गहलोत ने करौली-सरमथुरा-गंगापुरसिटी, डूंगरपुर-बांसवाड़ा-रतलाम, नसीराबाद-टोंक की अटकी पड़ी रेल परियोजनाओं को भी गति देने की प्रधानमंत्री से अपील की। तत्कालीन रेल मंत्री और वर्तमान विधानसभा अध्यक्ष डॉ. सीपी जोशी के कार्यकाल में भीलवाड़ा में रेलवे कोच फैक्टरी की घोषणा हुई थी, लेकिन वह कार्य आगे नहीं बढ़ा है। गहलोत ने ईआरसीपी पर भी जोर देते हुए राजस्थान की इस समस्या को दूर करने के लिए प्रधानमंत्री से इस ओर ध्यान देने की मांग की। गहलोत ने आर्थिक विकास में राजस्थान के दूसरे नंबर का राज्य होने पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि राजस्थान अब देश का सबसे बड़ा राज्य है और अपनी भौगोलिक परिस्थितियों के कारण यहां हर परियोजना की लागत तुलनात्मक रूप से अन्य राज्यों से अधिक होती है। इस ओर भी प्रधानमंत्री का ध्यान दिलाते हुए।

पांच एग्जिट पोल में कांग्रेस को बहुमत के आसार, दो ने भाजपा की वापसी का जताया अनुमान

नई दिल्ली: कर्नाटक में एक बार फिर त्रिशंकु विधानसभा के आसार दिखाई दे रहे हैं। इस बीच कई एग्जिट पोल में कांग्रेस और भाजपा को बहुमत भी दिखाया है। फिलहाल पांच एग्जिट पोल ऐसे हैं, जिनमें कांग्रेस को बहुमत मिलता दिखाया गया है। इसके साथ ही दो एग्जिट पोल में भाजपा की सत्ता वापसी की उम्मीद जताई गई है। बाकी में कोई भी दल भाजपा-कांग्रेस के आसपास नहीं दिखाई दे रही है। हालांकि, दावा किया जा रहा है कि जेडीएस एक बार फिर किंगमेकर बन सकती है।

किसकी-किससे टक्कर?: कर्नाटक में इस बार भाजपा और कांग्रेस के बीच मुख्य मुकाबला है। जनता दल (सेक्यूलर) भी चुनावी मैदान में अपना भाग्य आजमा रही है। 'आप', सपा, बसपा, एनसीपी समेत कई छोटे दल भी चुनावी मैदान में हैं। कई निर्दलीय उम्मीदवार भी अपनी दावेदारी पेश की है।

कितने प्रत्याशी मैदान में? 224 विधानसभा सीटों पर कुल 2,615 उम्मीदवारों ने नामांकन किया है। इसमें 901 निर्दलीय हैं। भाजपा ने सभी 224 सीटों पर अपने उम्मीदवार उतारे हैं, **तो कांग्रेस ने 221 सीटों पर। जेडीएस के 208, आम आदमी पार्टी के 208, बसपा के 127 प्रत्याशी मैदान में हैं। समाजवादी पार्टी ने 14, एनसीपी ने नौ प्रत्याशियों को मैदान में उतारा है। अन्य राजनीतिक दलों के 669 प्रत्याशी चुनाव लड़ रहे हैं।**

2018 में कैसे थे परिणाम?: इससे पहले 2018 के कर्नाटक चुनाव में 224 सीटों वाली विधानसभा में किसी भी पार्टी को स्पष्ट

कर्नाटक विधानसभा के लिए 66 प्रतिशत मतदान

नई दिल्ली: कर्नाटक की 224 विधानसभा सीटों के लिए बने 58,545 मतदान केन्द्रों पर बुधवार को मतदान शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हुआ। कहीं से किसी भी अप्रिय घटना का समाचार नहीं है। शाम 6 बजे तक चले मतदान का प्रतिशत लगभग 65.87 रहा। लोकतंत्र के पर्व में प्रदेशभर के मतदाताओं ने उत्साह से भागीदारी की और अपने मताधिकार का प्रयोग किया। चुनाव आयोग ने 80 से अधिक आयु के वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांग वोटरों के लिए घर से ही वोटिंग की सुविधा दी थी। कर्नाटक में पहली बार 94 हजार से अधिक वरिष्ठ नागरिकों और दिव्यांगजनों ने घर से वोट डाला। इसके अलावा, जालंधर लोकसभा सीट पर हुए उपचुनाव में 50.27 प्रतिशत और मेघालय की सोहिओंग सीट पर टाले गए चुनाव से जुड़े मतदान में 91.39 फीसदी वोट पड़े। वहीं विधानसभा सीटों पर हो रहे उपचुनाव की बात की जाए तो ओडिशा की झारसुगुड़ा सीट पर 68.12 प्रतिशत, उत्तर प्रदेश में मिजार्पुर स्थित छानबे सीट पर 39.51 प्रतिशत और रामपुर जिले की स्वार सीट पर 44.95 प्रतिशत मतदान हुआ है। मुख्य चुनाव आयुक्त राजीव कुमार ने कर्नाटक के मतदाताओं को धन्यवाद देते हुए कहा कि गुजरात, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, नगालैंड, त्रिपुरा और अब कर्नाटक राज्य में हुए 6 चुनावों के दौरान 1.26 लाख से अधिक मतदान केंद्रों में से नगालैंड में केवल 4 मतदान केन्द्रों पर ही पुनर्मतदान कराया गया। वहीं एक घटनाक्रम में बेल्लारी के कोरलगुंडी गांव से दुर्लभ घटना की सूचना मिली।

राष्ट्रपति बाइडेन पीएम मोदी के सम्मान में देंगे रात्रि भोज

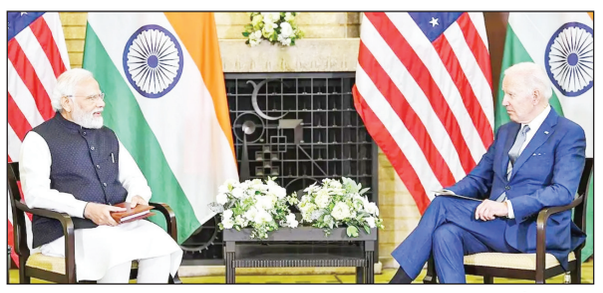

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आधिकारिक राजकीय यात्रा पर अमेरिका जायेंगे। अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन 22 जून को उनके सम्मान में राजकीय रात्रिभोज की मेजबानी करेंगे। व्हाइट हाउस की ओर से यह जानकारी दी गई है। आधिकारिक बयान के अनुसार अमेरिकी राष्ट्रपति जो बाइडेन और प्रथम महिला जिल बाइडेन 22 जून को आधिकारिक राजकीय यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की मेजबानी करेंगे और उनके सम्मान में राजकीय रात्रिभोज देंगे। बयान के अनुसार प्रधानमंत्री मोदी की आगामी यात्रा दोनों देशों के संबंधों के मजबूत होने की पुष्टि करते हैं। यह यात्रा दोनों देशों की मुक्त, खुले, समृद्ध और सुरक्षित हिंद-प्रशांत के प्रति साझा प्रतिबद्धता और रक्षा, स्वच्छ ऊर्जा और अंतरिक्ष सहित हमारी रणनीतिक प्रौद्योगिकी साझेदारी को बढ़ाने के साझा संकल्प को मजबूत करेगी।

इमरान खान को 8 दिन की रिमांड में भेजा

इस्लामाबाद। पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के अध्यक्ष इमरान खान की कानूनी मुश्किलें बुधवार को तब और अधिक बढ़ गईं, जब एक जवाबदेही अदालत ने अल-कादिर ट्रस्ट मामले में उन्हें आठ दिन की फिजिकल रिमांड पर राष्ट्रीय जवाबदेही ब्यूरो (एनएबी) में भेज दिया।

रिपोर्ट्स के मुताबिक पूर्व प्रधानमंत्री खान को इस्लामाबाद पुलिस लाइंस में न्यायाधीश मोहम्मद बशीर के समक्ष पेश किया गया, जिसे मंगलवार देर रात एकबारगी व्यवस्था के तहत अदालत का दर्जा दिया गया था।

समलैंगिक विवाह: छह राज्यों ने व्यापक चर्चा की जरूरत बताई

नई दिल्ली। समलैंगिक विवाह को कानूनी मान्यता देने के मामले पर सुप्रीम कोर्ट में बुधवार को 9वें दिन भी सुनवाई हुई। एक पक्षकार ने चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ को इस मामले की सुनवाई से अलग करने की मांग उठाई, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने खारिज कर दिया। इस मांग पर सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने भी आपत्ति जताई। सुनवाई के दौरान राष्ट्रीय बाल अधिकार संरक्षण आयोग ने कहा कि जेंडर की अवधारणा परिवर्तनशील हो सकती है, लेकिन मां और मातृत्व नहीं। इस पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि भारतीय कानून अकेले व्यक्ति को भी बच्चा गोद लेने की अनुमति देता है। कोर्ट ने कहा कि एक बच्चे का कल्याण सर्वोपरि होता है। देश का कानून विभिन्न कारणों से गोद लेने की अनुमति प्रदान करता है। यहां तक कि एक अकेला व्यक्ति भी बच्चा गोद ले सकता है। ऐसे पुरुष या महिला, एकल यौन संबंध में हो सकते हैं। कोर्ट ने कहा कि अगर आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं तब भी आप बच्चा गोद ले सकते हैं। जैविक संतानोत्पत्ति की कोई अनिवार्यता नहीं है। केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि इस मुद्दे पर केंद्र को केवल सात राज्यों मणिपुर, आंध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, महाराष्ट्र, असम, सिक्किम और राजस्थान की प्रतिक्रिया मिली है। इसमें राजस्थान सरकार का कहना है कि हमने इस विषय का परीक्षण करके समलैंगिकों को मान्यता देने का विरोध किया है। मेहता ने कहा कि राजस्थान छोड़कर बाकी राज्यों ने कहा है कि उन्हें इस पर व्यापक चर्चा करने की जरूरत है।

जनप्रतिनिधियों को निराधार आरोपों से बचना चाहिए: लोकसभा अध्यक्ष

नई दिल्ली। लोक सभा अध्यक्ष ओम बिरला ने बुधवार को कहा कि जनप्रतिनिधियों को निराधार और तथ्यहीन आरोपों से बचना चाहिए। उन्हें जनता के भावना के अनुरूप काम करना चाहिए।

बिरला ने आज संसद भवन परिसर में हिमाचल प्रदेश विधान सभा के नवनिर्वाचित सदस्यों के लिए संसदीय लोकतंत्र शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान (प्राइड) की ओर से आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि जनप्रतिनिधियों को लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए निष्ठापूर्वक प्रयास करने चाहिए और यह सुनिश्चित करना चाहिए कि लोगों की जरूरतें पूरी हों । उन्होंने यह भी कहा कि लोगों ने अपने प्रतिनिधियों को बहुत सारी जिम्मेदारियां दी हैं और इसलिए उन्हें पूर्ण समर्पण भाव के साथ जन कल्याण के लिए कार्य करना चाहिए।

बिरला ने कहा कि विधान सभा एक ऐसा महत्वपूर्ण मंच है जिसके माध्यम से समाज के सबसे कमजोर वर्गों की भावनाओं को मुखरित किया जाता है और यह सुनिश्चित किया जाता है कि जनप्रतिनिधि लोगों की समस्याओं का समाधान करें ।

दिल्ली में अफसरों के ट्रांसफर-पोस्टिंग मामले में आज आएगा फैसला

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच दिल्ली और केंद्र सरकार के बीच अधिकारियों के ट्रांसफर-पोस्टिंग से जुड़े विवाद के मामले पर 11 मई को फैसला सुनाएगी। इस बेंच में शामिल जस्टिस एमआर शाह 15 मई को रिटायर हो रहे हैं। कोर्ट ने 18 जनवरी को फैसला सुरक्षित रख लिया था। सुनवाई के दौरान केंद्र सरकार ने सुप्रीम कोर्ट से कहा था कि स्वतंत्रता से पहले जब संविधान लागू नहीं हुआ था, उस समय संविधान सभा ने कहा था कि यह राष्ट्रीय राजधानी है और किसी राष्ट्र को उसकी राजधानी द्वारा जाना जाता है। इसलिए दिल्ली की विशेष जिम्मेदारी होनी चाहिए। केंद्र सरकार की ओर से सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता ने कहा था कि हम यह नहीं कह रहे हैं कि नौकरशाही को केंद्र के प्रति वफादार होना चाहिए, लेकिन केंद्र के पास नियंत्रण और उनका संज्ञान होना चाहिए। उन्होंने दिल्ली सरकार के उस तर्क पर सवाल उठाया था, जिसमें कहा गया कि जब एक बार जब कोई अधिकारी मंत्रालय में तैनात हो जाता है तो उसे यह बता दिया जाता है कि कौन सी रिपोर्ट देनी है और कौन सी फाइल भेजनी है, यह सही नहीं है। मेहता ने कहा था कि यूनियन सर्विस, यूनियन पब्लिक सर्विस और यूनियन पब्लिक सर्विस कमीशन यह सब आल इंडिया सर्विस के नियम के तहत आते हैं। यहां सवाल राष्ट्रीय राजधानी का है।

दिल्ली सरकार की ओर से पेश वकील शदान फरासत ने कहा था कि अगर दिल्ली सरकार कोई अस्पताल बनाती है ।

शिवसेना मामले पर 11 मई को फैसला सुनाएगा सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट के चीफ जस्टिस डीवाई चंद्रचूड़ की अध्यक्षता वाली बेंच शिवसेना मामले पर 11 मई को फैसला सुनाएगी। इस बेंच में शामिल जस्टिस एमआर शाह 15 मई को रिटायर हो रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट की पांच सदस्यीय संविधान बेंच ने इस मामले पर नौ दिन सुनवाई के बाद 16 मार्च को फैसला सुरक्षित रख लिया था। सुनवाई के दौरान कोर्ट ने इस बात पर सवाल उठाया था कि अगर शिंदे गुट के विधायकों को उद्धव के कांग्रेस-एनसीपी से गठबंधन पर एतराज था, तो वह तीन सालों तक सरकार के साथ क्यों रहे। कोर्ट ने शिवसेना विवाद मामले में महाराष्ट्र के राज्यपाल पर भी सवाल उठाया था। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में राज्यपाल की भूमिका को लेकर चिंता जताते हुए कहा था कि राज्यपाल को इस तरह विश्वास मत नहीं बुलाना चाहिए था। कोर्ट ने कहा था कि नया राजनीतिक नेता चुनने के लिए फ्लोर टेस्ट नहीं हो सकता है। कोर्ट ने कहा था कि किसी पार्टी में नीति संबंधी मतभेद है, तो क्या राज्यपाल विश्वास मत हासिल करने को कह सकते हैं। चीफ जस्टिस ने कहा था कि उनको खुद यह पूछना चाहिए था कि तीन साल की सुखद शादी के बाद क्या हुआ। उन्होंने कहा था कि राज्यपाल ने कैसे अंदाजा लगाया कि आगे क्या होने वाला है। सुप्रीम कोर्ट ने 22 फरवरी को शिवसेना के चुनाव चिह्न के मामले में निर्वाचन आयोग के आदेश पर रोक लगाने से इनकार कर दिया था। कोर्ट ने कहा था कि उद्धव ठाकरे गुट अस्थायी नाम और चुनाव चिह्न का इस्तेमाल जारी रख सकता है। कोर्ट ने एकनाथ शिंदे गुट और निर्वाचन आयोग को नोटिस जारी किया था। कोर्ट ने कहा था कि शिंदे गुट अभी ऐसा कुछ नहीं करेगा, जिससे उद्धव समर्थक सांसद और विधायक अयोग्य हो जाएं।

गडकरी ने की काजीरंगा एलिवेटेड रोड परियोजना की प्रगति समीक्षा

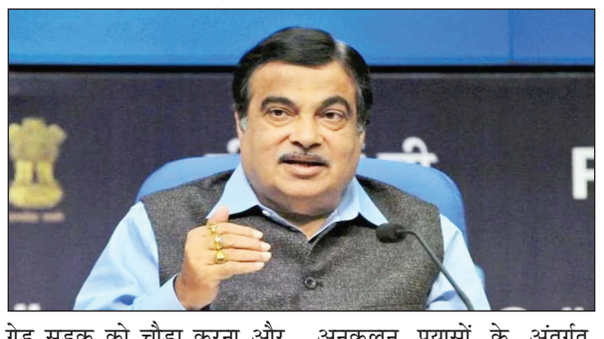

नई दिल्ली। केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने बुधवार को काजीरंगा एलिवेटेड रोड परियोजना की प्रगति की समीक्षा की। इस संबंध में गडकरी ने ट्वीट कर कहा कि यह पहल भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा चिन्हित उन स्थलों पर लगभग 34 किलोमीटर तक के ऊंची सड़कों के निर्माण पर बल देती है, जहां से पशु गुजरते हैं। इस परियोजना में लगभग 50 किलोमीटर कुल लंबाई वाली 4-लेन के राजमार्ग के बीच की एट-ग्रेड सड़क को चौड़ा करना और लगभग तीन किलोमीटर तक फैली सुरंगों का निर्माण करना शामिल है। गडकरी ने कहा कि लागत अनुकूलन प्रयासों के अंतर्गत, उन्होंने निर्देश दिया है कि सुरंगों के निर्माण को एक अलग परियोजना के रूप में माना जाए।

खबर संक्षेप

करवरिया बंधु की जमानत अर्जी खारिज

प्रयागराज। 13 अगस्त 1996 की शाम सिविल लाइंस में पूर्व सपा विधायक जवाहर पंडित हत्याकांड में सजा काट रहे करवरिया बंधु को कोर्ट से राहत नहीं मिल रही है। करवरिया बंधु की ओर से इलाहाबाद हाईकोर्ट में जमानत अर्जी लगाई गई थी लेकिन कोर्ट ने अर्जी ही खारिज कर दिया है। जवाहर हत्याकांड में सजायाफ्ता पूर्व सांसद कपिलमुनि करवरिया, पूर्व भाजपा विधायक उदयभान करवरिया व तीसरे भाई पूर्व एमएलसी सूर्यभान करवरिया के साथ रामचंद्र उर्फ कल्लू नैनी सेंट्रल जेल में बंद हैं। न्यायमूर्ति सलिल कुमार राय तथा न्यायमूर्ति अरुण कुमार देशवाल की खंडपीठ ने चारों सजायाफ्ता कैदियों की सजा के खिलाफ अपील पर दाखिल जमानत अर्जी खारिज करते हुए 22 मई को पेश करने का आदेश है। वहीं, अल्पकालिक जमानत पर छूटे उदयभान को कोर्ट ने 12 मई तक जेल जाने का आदेश दिया है, साथ ही उनका इलाज कराने का भी आदेश दिया गया।

इसौटा हत्याकांड ऑनर किलिंग भाई ने ही की थी बहन की हत्या

24 घंटे के अंदर पुलिस ने कियाअनावरण, आलाकत्ल एक कुल्हाड़ी के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

मेजा। गत सोमवार को इसौटा हत्या कांड का 24 घंटे के अंदर खुलासा करते हुए मेजा पुलिस ने आलाकत्ल एक कुल्हाड़ी सहित अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।गौरतलब है कि मेजा थाना अंतर्गत सोमवार को विजय शंकर मिश्र पुत्र स्व0 भूपति राम मिश्र नि0 इसौटा द्वारा अपनी पुत्री प्रिया मिश्रा की हत्या के सम्बन्ध में मेजा थाना में तहरीर दी गयी थी, जिसके आधार पर थाना मेजा में मु0अ0सं0 177/23 धारा 302 भादंवि0 बनाम नीरज पाण्डेय पुत्र रामाज्ञा पाण्डेय नि0 इसौटा के खिलाफ मुकदमा पंजीकृत किया गया था।मेजा पुलिस द्वारा विवेचना के दौरान यह तथ्य प्रकाश में आया कि मृतका प्रिया मिश्रा के छोटे भाई विवेक मिश्रा पुत्र विजयशंकर मिश्रा द्वारा अपनी बहन का नीरज पाण्डेय के साथ अफेयर होने के कारण आवेश में आकर अपनी इकलौती बहन प्रिया का सोमवार को सुबह अपने ही घर में हत्या कर घटना के साक्ष्य को नष्ट करने का भी प्रयास किया गया। विवेचना टीम में प्रभारी निरीक्षक मेजा ज्ञानेश्वर मिश्र,उ0नि0 अखिलेश कुमार सिंह चौकी प्रभारी कोहड़ार,हे0का0 अरविन्द चौबे, हे0का0 अजय कुमार सिंह और हे0का0 संजय पाण्डेय द्वारा बुधवार को अभियुक्त को उसके घर से गिरफ्तार कर अभियुक्त की निशानदेही पर आलाकत्ल एक कुल्हाड़ी बरामद की गयी। गिरफ्तार अभियुक्त के खिलाफ मेजा थाने में मु0अ0सं0 177/23 धारा 302/201 भादंवि0 के तहत मुकदमा पंजीकृत किया गया। आपको बता दें कि मेजा पुलिस द्वारा उसी दिन ऑनर किलिंग की शक की सुई मृतका के भाई पर ही घूम रही थी।बुधवार को विवेचना के दौरान पुलिस को पक्का सबूत मिला और घटना का 24 घंटे के अंदर अनावरण कर अभियुक्त को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया।

नशा मुक्ति केंद्र की छत से कूद कर भाग रहे नशेड़ी

छत से कूदते वक्त चार के टूटे पैर, हाथ नही है सुरक्षा के इंतजाम

झूंसी। क्षेत्र में स्थित नाश मुक्ति केंद्र से पखवारे भर के भीतर आधा दर्जन नशेड़ी कर्मचारियों से मारपीट कर भाग चुके हैं। सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम न होने की वजह से छत से कूद कर भागते वक्त कई नशेड़ियों ने तो अपने हाथ पैर भी तोड़ लिए है। नशा मुक्ति केंद्र नशे की लत छुड़वाने का केंद्र माना जाता है। परेशान लोग अपने लाडलो व परिचितों को इस उद्देश्य से यहां भर्ती कराते हैं कि उनकी नशे की लत छूट जाएगी। लेकिन आये दिन नशेड़ी नशा मुक्ति केंद्र से भागते रहते है। ऐसा ही मामला झूंसी के त्रिवेनिपुरम स्थित नशा मुक्ति केंद्र से सामने आया है। यहा 28 नशेड़ी भर्ती है जिनकी देख रेख के लिए छह कर्मचारी लगे है। भर्ती नशेड़ी प्रतापगढ़, फतेहपुर के साथ-साथ हंडिया, सहसों के भी है जिनमे 20 से 25 साल के युवाओ की संख्या अधिक है। सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम न होने की वजह से नशेड़ियों ने कर्मचारियों के साथ मारपीट कर भागने लगे इस दौरान वह छत से गिर गए और हाथ पैर तोड़ बैठे। घायलों में सहसो के दो व हंडिया का एक युवक शामिल है। जिनका निजी अस्पताल में इलाज चल रहा है। संस्था के डायरेक्टर पंकज सिंह ने बताया कि केवल एक ही युवक को चोट आई है।

पंचायत भवन का ताला तोड़कर लाखों की चोरी, दी तहरीर

अखंड भारत संदेश

सोरांव। स्थानीय थाना क्षेत्र के ग्राम पंचायत भवन मिजार्पुर उर्फ बरई शिव में बीती रात अज्ञात चोरों द्वारा पंचायत भवन का ताला तोड़कर अंदर दाखिल हुए तथा पंचायत भवन में रखा यूपीएस, टीएफटी, स्केनर सहित आलमारी में रखा आवश्यक दस्तावेज उठा ले गए। मामले में ग्राम पंचायत अधिकारी अखिलेश कुमार ने सोरांव थाने में लिखित तहरीर देकर कार्रवाई की मांग किया है। जानकारी के अनुसार मिजार्पुर उर्फ बरई शिव की पंचायत सहायक साधना सिंह बुधवार सुबह जब पंचायत भवन पर गई तो देखी कि भवन का ताला टूटा हुआ है। और अंदर रखा सारा सामान गायब है। इसकी सूचना ग्राम प्रधान रीता देवी व सचिव अखिलेश कुमार व पुलिस दिए। मामले में सोरांव पुलिस घटना स्थल पर पहुंच कर जांच किया। सचिव ने थाने पर लिखित तहरीर देकर अज्ञात चोरों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग किया है।

बाइकों से आए चोरों ने ट्यूबवेल की मोटर चुराया, तीन हिरासत में, सेंधमारी में प्रयोग औजार बरामद

मऊआइमा। मऊआइमा इलाके में चोरी का मामला जोरो पर है ।बीती रात कहली गांव स्थित एक ट्यूबवेल में दो बाइकों से आये चार चोरो ने सेंधमारी करके ट्यूबवेल की मोटर चोरी कर के जारहे थे। रास्ते में मोटर साइकिल खराब हो जाने पर खडी करके चले गए।बाद में बाइक लेने आये चोरों को ग्रामीणों ने दो बाइकों सहित पकड कर पुलिस के हवाले कर दिए। मऊआइमा थाना क्षेत्र के कहली करमह गांव निवासी शिवप्रसाद, चन्द्रिका प्रसाद पुत्रगण जगेश्वर की ट्यूबवेल में सेंधमारी करके चोरों ने मोटर चोरी कर ले गए। बताया गया है कि चोरों की एक बाइक बिगड़ जाने पर वह एक स्थान पर छोड कर चले गए। बुधवार को दोपहर में जब चोर बाइक लेने एक अन्य बाइक से आए तो ग्रामीणों ने बाइक सहित तीन चोरों को दबोच कर पुलिस के हवाले कर दिया। जिनके पास सेंधमारी करने का औजार भी बरामद हुआ है। ग्रामीणों ने बताया कि चोरो में राहुल पासी ,दीलीप, धन्यजय को पकड लिया गया। मान सिंह प्रजाति फरार है। पुलिस ने बताया की पकड़े गए तीनो चोरो से पूछ ताछ की जारही है।

धूमधाम से मनाई गई महाराणा प्रताप की जयंती

सुदिष्ट ब्रह्म बाबा महाराज सेवा समिति के तत्वावधान में हुआ आयोजन

अखंड भारत संदेश

सिरसा। मेजा क्षेत्र के परानीपुर गांव में सुदिष्ट ब्रह्म बाबा महाराज सेवा समिति के तत्वावधान में धूमधाम से महाराणा प्रताप की जयंती मनाई गई। इस दौरान समिति के सदस्यों ने महाराणा प्रताप के चित्र पर पुष्प अर्पित कर नमन किया।बता दें कि विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी मंगलवार 9 मई को महाराणा प्रताप जी का जयन्ती समारोह का आयोजन हुआ, यह आयोजन सुदिष्ट ब्रह्म बाबा महाराज के प्रांगड़ में बड़े हर्षो उल्लास के साथ मनाया गया। जिसमें राजपूत समाज एकत्रित होकर महाराणा प्रताप जी का जन्म दिन मनाया। इसमें राजपूत समाज में ओम प्रकाश सिंह (अध्यक्ष मंदिर समिति), संतोष कुमार सिंह (जिला अध्यक्ष करणी सेना), मीडिया प्रभारी बिवेक सिंह, अनुप सिंह, बिक्रम सिंह, जय सिंह, अभिषेक सिंह, विशू सिंह, केंद्र प्रताप सिंह, शुभम सिंह, शिवा सिंह, शिवम सिंह, सूरज सिंह, शैलेन्द्र सिंह, गौरव सिंह, शिवांग केशरी, रिषभ सिंह, भरत सिंह, रंजीत सिंह, निवेश भारतीया एवं समस्त राजपूत समाज बिसेनपुर परानीपुर गांव के सैकड़ों लोग मौजूद रहे।

मेजा में बिजली कर्मियों ने चलाया चेकिंग अभियान

प्रयागराज। मेजा में बिजली के बकाया भुगतान को लेकर निरीक्षण में पहुंचे एमडी की फटकार के बाद अधिकारी हरकत में आ गए हैं। क्षेत्र के नेवढ़िया विद्युत उपकेंद्र के अंतर्गत आने वाले बरहा कला, बहेलियापुर, आंधी, गरेथा, ऊँचडीह, सोनाई सहित तमाम इलाकों में इन दिनों बिल वसूली को लेकर विभागीय कैंप लगाया जा रहा है। इसके साथ ही चेकिंग अभियान के तहत बकायेदारों के कनेक्शन भी काटे जा रहे हैं। इससे उपभोक्ता में हड़कंप है। ऊँचडीह बस स्टॉप चौराहे पर बुधवार को अधीक्षण अभियंता प्रशांत सिंह, अधिशाषी अभियंता प्रदीप कुमार सोनकर के नेतृत्व में महाकैंप आयोजित किया गया। इस दौरान दर्जनों बकायेदारों से कुल 40 हजार रुपए की वसूली की गई। इसके अलावा नेवढ़िया उपकेंद्र के जेई अनुज अवस्थी ने टीम के साथ चेकिंग अभियान चलाया। इसमें 30 बड़े बकायेदारों का कनेक्शन काटा गया। साथ ही चार लोगों को बिजली चोरी के उपभोग में दबोचा गया। जिनके विरुद्ध कार्रवाई के लिए अधिकारियों ने निर्देशित किया है। जेई ने बताया कि प्रतिदिन बिजली चोरी में पकड़े जा रहे लोगों के विरुद्ध अभियोग दर्ज कराया जा रहा है। इस दौरान नोडल अधिकारी कृष्ण मोहन बिंद, रविशंकर, रमेश पटेल, संजय, पप्पू पटेल सहित तमाम बिजली कर्मी रहे।

बाजार से घर लौट रहे अधेड़ का रास्ता रोक दामाद ने किया हमला

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। नारीबारी बाजार से अपने घर लौट रहे अधेड़ का रास्ता रोककर उसके दामाद ने ही अपने दोस्तों के साथ हमला बोल दिया। हेलमेट और लाठी-डंडे से किए गए हमले में अधेड़ घायल हो गया। उसके सिर, नाक व आंख में चोट आई है। शंकरगढ़ पुलिस ने घायल को अस्पताल पहुंचाया। इस मामले में शंकरगढ़ पुलिस ने धरा 323, 504 के तहत केस दर्ज कर लिया है। जानकारी के मुताबिक शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के झंझरा चौबे (कटरा तालाब) निवासी गरुण मिश्र पुत्र स्व. मंडलीप्रसाद मिश्र घरेलू कार्य से नारीबारी बाजार गए थे। वापसी में जब वह भारत गैस एजेंसी नारीबारी अपने घर के तरफ मुड़े, वहां पहले से मौजूद दामाद शुभम दुबे ने अपने पिता दिवाकर प्रसाद दुबे व दो-तीन अज्ञात लोगों के साथ मिलकर हमला बोल दिया। हेलमेट व लाठी डंडे से किए गए हमले में गरुण मिश्र घायल हो गए। इसके बाद भुक्तभोगी लहूलुहान अवस्था में किसी तरह पुलिस चौकी नारीबारी पहुंचा, जहां चौकी प्रभारी संतोष कुमार सिंह को पूरे मामले की जानकारी दी। इसी दौरान हमले की जानकारी मिलने पर घायल की बेटी व अन्य रिश्तेदार मौके पर पहुंच गए। काफी हो-हुज्जत के बाद घायल को इलाज के लिए अस्पताल भेजा गया। दामाद के हमले में घायल हुए गरूण मिश्र ने बताया कि दामाद शुभम दुबे विवाह के बाद से ही बेटी के साथ मारपीट करता आ रहा है। बहुत समझाने व सामाजिक लोगों से समझौते का प्रयास किया गया, सभी विफल हुए। बेटी को जान से मारने का प्रयास कर चुका है। विगत दो वर्ष से घरेलू हिंसा व दहेज का मामला चल रहा है। बीच-बीच में दामाद चोरी-छिपे घर आकर धमकी देने के साथ-साथ अश्लील वीडियो वायरल करने की धमकी देता रहता है। इस मामले की नारीबारी पुलिस से शिकायत की गई, लेकिन अब तक कोई कार्यवाही नहीं हुई। इस मामले में चौकी प्रभारी नारीबारी संतोष कुमार सिंह ने बताया पुलिस के पास जब-जब आए हैं, पुलिस ने कार्यवाही की है। पिछले मामले में भी चार्जशीट दाखिल की गई है।

शंकरगढ़ पुलिस ने दर्ज किया केस, चौकी पुलिस पर मिली भगत का आरोप

श्रीराम प्रताप इंटर कालेज के टॉपरों को किया गया सम्मान

अखंड भारत संदेश

सिरसा। बुधवार को श्री राम प्रताप इंटर कॉलेज सिरसा प्रयागराज मैं उत्तर प्रदेश बोर्ड परीक्षा 2023 में हाईस्कूल एवं इंटरमीडिएट के प्रथम पांच स्थान प्राप्त छात्र-छात्राओं को विद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ शिव प्रकाश पाठक एवं अध्यापकों द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत किया गया। हाई स्कूल में आदित्य कुमार ओमनी पटेल श्लोक कुमार अंश तिवारी आकांक्षा तिवारी और इंटरमीडिएट में अंजली राज नमन कुमार अमित विजय यादव सत्यम यादव विपुल प्रजापति पुरस्कृत हुए। प्रधानाचार्य डॉक्टर शिव प्रकाश पाठक जी एवं वरिष्ठ प्रवक्ता उग्रेश सिंह रामाशंकर यादव राजनारायण लालमणि शुक्ला अवधेश कुमार केसरी आरजू मिश्रा शिल्पा देवी आशीष कुमार पांडे सुरेश कुमार सिंह विजय बहादुर सिंह एवं विद्यालय के समस्त अध्यापकों ने छात्रों के उज्जवल भविष्य एवं उनके लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रेरित किए और शुभकामनाएं तथा आशीर्वाद दिए।

महाराणा प्रताप ने अपने स्वभिमान से कभी समझौत नहीं किया

अखंड भारत संदेश

धूम धाम से मनाई गई राणा प्रताप की जयंती

हनुमानगंज। सृष्टि गार्डेन में महाराणा प्रताप की जयंती मंगलवार को धूमधाम से मनाई गई। महाराणा प्रताप सेवा संस्थान की ओर से बीकापुर गांव में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सेवानिवृत्त आईपीएस जेपी सिंह रहे। उन्होंने कहा कि महाराणा प्रताप ने कभी अपने स्वाभिमान से समझौता नहीं किया। अपने परिवार साथ जंगलों में रहे और घास की रोटी खाई, पर उन्होंने मुगलों आगे घुटने नहीं टेके। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि ने दीप प्रज्ज्वलन से किया। महाराणा प्रताप सेवा संस्थान के संस्थापक हंडिया के पूर्व विधायक स्व. महेश नारायण सिंह के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए गए। इस दौरान ठाकुर राम प्रताप सिंह बालिका इंटर कॉलेज की छात्राओं ने महाराणा प्रताप के जीवन पर आधारित नाटक प्रस्तुत किया। संयोजक हरि नारायण सिंह अतिथियों का स्वागत किया। हंडिया के पूर्व विधायक प्रशांत सिंह, पूर्व ब्लॉक प्रमुख राजकुमार सिंह ने धन्यवाद ज्ञापित कि इस मौके पर डॉ. शशिकेंद्र प्रताप सिंह, भूपेंद्र सिंह उर्फ पिंटू, अमित सिंह(हरि), लाल प्रभाकर सिंह, प्रधान कोटवा जयराम सिंह, अंकुर सिंह राणा, उत्तम तिवारी आदि मौजूद रहे। वही हबूसा मोड़ पर आयुष प्रताप सिंह के नेतृत्व में राणा प्रताप की जयंती मनाई गई। जयंती समारोह में पूर्व मंत्री नरेंद्र सिंह गोर, पूर्व जिलापंचायत अध्यक्ष रेखा सिंह, वातेंद्र त्रिलोकचंदी, पूर्व ब्लाक प्रमुख राकेश सिंह, विकास सिंह, आशीष प्रजापति, अवन सिंह आदि मौजूद रहे।

फूलपुर में किया गया निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का आयोजन

प्रयागराज। फूलपुर के उतराव बाजार में स्वास्थ्य परीक्षण व निशुल्क दवा वितरण शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें स्वास्थ्य टीम ने निशुल्क परीक्षण कर दवा का वितरण किया गया। जिसमें क्षेत्र के दर्जनों गांव के लोगों ने निशुल्क दवा व निशुल्क परीक्षण का लाभ उठाया। ज्यादातर मरीजों मे वायरल की समस्या देखने को मिली।क्षेत्र के समौधीपुर,उतराव, पौड़न,दायम गंज,प्यागीपुर,चका,नौबाजार आदि दर्जनों गांव के लोग परीक्षण कराकर निशुल्क दवा प्राप्त किये। डॉ काशिफ अली सिद्दीकी ने कहा की समाज की सेवा गरीब असहाय की मदद से ही इंसानियत की पहचान होती है। यदि कोई भी व्यक्ति किसी ऐसे पद पर कार्यरत हो जिसको समाज की सेवा करने का मौका मिले तो समाज की सेवा व गरीब असहाय की मदद निश्चित रूप से करनी चाहिए। किसी की सेवा का लाभ बहुत ही अच्छा मिलता है। स्वास्थ्य शिविर में डॉ सिद्दीकी के स्वास्थ्य टीम में डॉक्टर मोहम्मद रहमान, डॉक्टर विजय लक्ष्मी, डॉ रिया राय ,डॉक्टर अर्श अख्तर, डॉक्टर अहमद आदि टीम के साथ मौजूद रहे। इस दौरान वरिष्ठ समाजसेवी कैप्टन मोहम्मद कैश सिद्दीकी, सहाब, नजमुल मलिक, मूलचंद यादव, जज यादव आदि लोग मौजूद रहे।

केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन में बही काव्य रसधार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। केन्द्रीय रेल विद्युतीकरण संगठन में बुधवार को राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह एवं कवि सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। समारोह की अध्यक्षता महाप्रबंधक/कोर, प्रमोद कुमार ने की। मुख्य राजभाषा अधिकारी /कोर, एस.एस. नेगी ने अधिकारियों एवं कर्मचारियों का स्वागत करते हुए आशा व्यक्त की कि इस कवि सम्मेलन से कोर में हिन्दी प्रयोग प्रसार की दिशा में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होगा और हम सभी अपने सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिकाधिक प्रयोग करने के लिए संकल्पबद्ध होंगे । महाप्रबंधक महोदय ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में कहा कि पुरस्कार वितरण के साथ ही कवि सम्मेलन का जो आयोजन हो रहा है वह स्वस्थ एवं सुरूचिपूर्ण मनोरंजन होने के साथ-साथ अपनी भाषा पर गर्व करने का भी अवसर है। उन्होंने सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई दी। उन्होंने अधिकारियों एवं कर्मचारियों से आग्रह किया कि वे अपने कामकाज में हिंदी का ज्यादा से ज्यादा प्रयोग करें तथा विभिन्न पुरस्कार योजनाओं का लाभ उठाएं। इस अवसर पर भव्य कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसमें सर्वश्री राम किशोर तिवारी, श्लेष गौतम, शिव किशोर तिवारी 'खंजन' नागेश शांडिल्य एवं सुश्री रंजना सिंह 'हया' ने काव्य पाठ किया। कवि सम्मेलन का संचालन राम किशोर तिवारी ने किया। महाप्रबंधक महोदय ने अपने कर-कमलों से विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा हिंदी में प्रशंसनीय कार्य करने वाले कर्मचारियों को पुरस्कार प्रदान किए। समारोह में कोर के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी, अनुपम सिंघल, प्रमुख मुख्य इंजीनियर, संजय कुमार मिश्रा, प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक, विनय एन. अम्बाडे, प्रमुख मुख्य सिगनल एवं दूर संचार इंजीनियर, सुरेश कुमार, वरिष्ठ उप महाप्रबंधक, वी.के.गर्ग, प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी, के.के.सिंह, तथा रीवो की अध्यक्षा एवं सदस्याओं सहित कोर मुख्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे । समारोह का संचालन वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी श्रीमती सुनीला यादव एवं धन्यवाद ज्ञापन उपेन्द्र कुमार, उप मुख्य राजभाषा अधिकारी ने किया।

कृष्ण और रुक्मणी विवाह की सुंदर प्रसंग सुन श्रोता हुए भाव विभोर

अखंड भारत संदेश

सहसों। क्षेत्र के सिताऊ का पूरा गारापुर गांव में श्रीमद् भागवत महापुराण कथा ज्ञान यज्ञ के मुख्य यजमान चिंतामणि पांडे के संयोजन में आयोजित सात दिवसीय संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के छठे दिन कथा व्यास आचार्य कृष्ण कान्त शास्त्री ने अपने रस भरी वाणी से उधव चरित्र, महारासलीला व रुक्मिणी विवाह का सजीव वर्णन किया। कथा व्यास ने कहा कि रुक्मणी ने जब देवर्षि नारद के मुख से श्रीकृष्ण के रूप, सौंदर्य एवं गुणों की प्रशन्सा सुनी तो मन ही मन श्रीकृष्ण से विवाह करने का निश्चय किया। परन्तु रुक्मणी का बड़ा भाई रुक्मी श्रीकृष्ण से शत्रुता रखता था और अपनी बहन का विवाह चेदि नरेश दमघोष के पुत्र शिशुपाल से कराना चाहता था। परन्तु विधि के विधना अनुसार भगवान श्रीकृष्ण ने सभी राजाओं को हराकर विदर्भ की राजकुमारी रुक्मिणी को द्वारका में लाकर उनके साथ विधिपूर्वक पाणिग्रहण किया। कथा के सुंदर प्रसंग के दौरान आयोजक मंडली की ओर से आकर्षक वेश-भूषा में श्रीकृष्ण व रुक्मिणी विवाह की मनमोहक झांकी प्रस्तुत किया गया। कथा व्यास ने कहा कथा तो वह उपकरण है जो मनुष्य के जीवन की हर व्यथा दूर करती है जो भी मनुष्य भगवत कथा को तन मन और हृदय से श्रवण कर पालन करता है उसके जीवन की मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है। कथा का रसपान करते हुए पंडाल में मौजूद रस रसिक नर नारी श्रोता भक्त भाव विभोर हो उठे। कथा के उपरांत मुख्य यजमान एवं आयोजक मंडली द्वारा कथा व्यास पीठ एवं आवाहित देवी देवताओं की आरती उतारी गई तत्पश्चात श्रोता भक्तों में प्रसाद का वितरण किया गया। इस अवसर पर प्रमुख रूप से पंडित लवकेश मिश्रा अध्यक्ष नवयुवक ब्राह्मण समाज, रामकृष्ण दूबे, द्वारिका प्रसाद मौर्य प्रधान, विनोद शुक्ला पूर्व प्रधान, राजमणि शुक्ला, विजय तिवारी, मुन्ना पांडे, कल्लू दुबे दीपक शुक्ला सहित भारी संख्या में रसिक श्रोता नर नारी उपस्थित होकर कथा का रसपान किया।

खबर संक्षेप

इलाहाबाद हाईकोर्ट के अधिवक्ताओं ने पहलवानों का किया समर्थन

प्रयागराज। दिल्ली के जंतर मंतर पर भारतीय कुश्ती पहलवानों का धरना जारी है। बुधवार को इलाहाबाद हाई कोर्ट के अधिवक्ताओं ने धरने पर बैठे भारतीय पहलवानों को अपना समर्थन दिया और दोषी सांसद बृजभूषण शरण सिंह के विरुद्ध तुरंत कार्रवाई करने की भारत सरकार से मांग की।हाई कोर्ट चौराहे पर भीमराव अम्बेडकर की मूर्ति पर माल्यार्पण करने के बाद पूर्व संयुक्त सचिव प्रशासन अभिषेक शुक्ला ने बृजभूषण शरण सिंह की निन्दा की। उन्होंने कहा कि आज कई दिनों से दिल्ली के जंतर मंतर पर हमारे देश के स्वाभिमान धरना पर बैठे हैं। कुश्ती संघ के अध्यक्ष बृजभूषण शरण सिंह पर यौन उत्पीड़न का आरोप लगा रहे हैं। व्यक्ति स्वयं यह कहता है कि उसने हत्या की है। जिसके खिलाफ 50 आपराधिक मुकदमे दर्ज हों, जिसके खिलाफ भारत के अनेकों ओलंपियन यौन शोषण जैसा गंभीर आरोप लगा रहे हों और जिसके विरुद्ध माननीय सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर पॉक्सो एक्ट में एफआईआर दर्ज हो, उसे लोकतंत्र के सबसे बड़े मंदिर संसद भवन में बैठने का कोई अधिकार नहीं होना चाहिये। सरकार को ऐसे नेताओं के विरुद्ध सख्त कार्रवाई करनी चाहिए।

जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना स्थल का किया निरीक्षण

सभी आवश्यक व्यवस्थाएं चुस्त-दुरूस्त बनाये रखने के दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी संजय कुमार खत्री ने बुधवार को मुण्डेरा मण्डी स्थित मतगणना स्थल का निरीक्षण किया। उन्होंने मतगणना स्थल पर लाइट, पीने के पानी, शौचालय, साउण्ड सिस्टम सहित अन्य आवश्यक व्यवस्थायें चुस्त-दुरूस्त बनाये रखने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने सीसीटीवी कैमरा, वीडियोग्राफी की भी समुचित व्यवस्था बनाने के निर्देश दिए है। जिलाधिकारी ने साफ-सफाई एवं बैरिकेटिंग की व्यवस्था आदि को भी देखा तथा साफ-सफाई और बेहतर किये जाने के निर्देश दिये है। इस अवसर पर एडीएम प्रशासन हर्षदेव पाण्डेय, एडीएम वित्त एवं राजस्व जगदम्बा सिंह, एडीएम सिटी मदन कुमार सहित पुलिस विभाग के अधिकारीगण उपस्थित रहे। इसके उपरांत जिलाधिकारी/ जिला निर्वाचन अधिकारी ने संगम सभागार में राजनैतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक करते हुए मतगणना के सम्बंध में विचार-विमर्श किए। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी गौरव कुमार, एडीएम प्रशासन हर्षदेव पाण्डेय, एडीएम सिटी मदन कुमार, एडीएम वित्त एवं राजस्व जगदम्बा सिंह विभिन्न राजनैतिक दलों के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

पुलिस ने वांछित अभियुक्त को किया गिरफ्तार

प्रयागराज। प्रयागराज की उतराव पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर एक वांछित अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय के लिए चालान कर दिया। मुकदमे में वांछित चल रहे शिव कुमार उर्फ बुल्ले पुत्र ननकू राम को पुलिस ने गायत्री ढाबा के पास से गिरफ्तार किया और न्यायालय के लिए चालान कर दिया।पुलिस ने बताया कि अभियुक्त अपने सहयोगी अभियुक्ता सितारा देवी पत्नी महेंद्र कुमार निवासिनी बेलहरा मोहम्दाबाद व राजकुमारी पत्नी जलाल निवासिनी राजकुमारी पत्नी हिन्छ लाल निवासिनी खानापुर ममरेज के साथ मिलकर गांव समाज के संभ्रांत व्यक्तियों पर छेड़खानी और बलात्कार का फर्जी मुकदमा न्यायालय में दाखिल करने और लिखाने की धमकी देकर लोगों से धन उगाही करता था। मुकदमा दर्ज कर पुलिस तलाश में जुटी जिसको लेकर नीमी थरिया गाव निवासी मनोज पटेल की तहरीर पर पुलिस मुकदमा पंजीकृत कर तलाश में जुटी थी। गिरफ्तारी टीम में मुख्य रूप से उपनिरीक्षक महेश चंद्र, सिपाही राजीव कुमार व अमरजीत यादव रहे।

निर्माणाधीन मकान की छत गिरी, दो मजदूर दबे

अखंड भारत संदेश

झूंसी। कटका में एक जेलर के निमार्णाधीन मकान की छत बुधवार की दोपहर अचानक भरभरा कर गिर पड़ी। छत पर काम कर रहे दो मजदूर मलवे के नीचे दब गए इस वजह से मौके पर अफरातफरी का माहौल उत्पन्न हो गया आननफानन में दोनों मजदूरों को मलवे से निकल एम्बुलेंश से अस्पताल भेजा गया जहाँ उनका इलाज चल रहा है। कटका जीटी रोड के निकट एक जेलर के निमार्णाधीन मकान के छत की ढलाई चल रही थी। मजदूर छत की ढलाई में लगे थे तभी अचानक एक कमरे की छत बैठ गई और उसपर खड़े मजदूर छत से नीचे चले आये और मलवे में दब गए छत गिरने की वजह से और मजदूरों में भगदड़ मच गई किसी तरह मलवे में दबे मजदूरों को बाहर निकाला गया। 108 एम्बुलेंश से दोनों घायलों को एसआरएन में भर्ती कराया गया है। एक का नाम सुरेश व दूसरे घायल का नाम विनोद बताया जा रहा है। सूचना मिलने पर मौके पर पहुचे दरोगा अमित यादव ने पूछताछ की। किसी ने कोई शिकायत नही की है।

अतीक के वकील खान सौलत दोबारा पुलिस कस्टडी में

प्रयागराज पुलिस अतीक से जुड़े कई सवालों पर वकील से कर रही है पूछताछ

प्रयागराज। माफिया अतीक अहमद के वकील खान सौलत हनीफ को पुलिस दोबारा रिमांड पर लेने के लिए कोर्ट में अर्जी दाखिल की थी। कोर्ट ने चार घंटे के लिए रिमांड की मंजूरी दी है। अतीक अहमद से शाम सात बजे तक पुलिस अपने कस्टडी में लेकर पूछताछ जारी रखेगी। बताया जा रहा है कि अतीक से जुड़े कई सवाल खान सौलत से पूछे जाने हैं। बता दें कि आज खान सौलत हनीफ की न्यायिक हिरासत खत्म हो रही थी।उमेश पाल हत्याकांड में धूमनगंज पुलिस ने अतीक अधिवक्ता खान सौलत हनीफ को आरोपी बनाया है। तीन मई को धूमनगंज पुलिस ने अधिवक्ता खान सौलत हनीफ को पुलिस कस्टडी रिमांड पर लेकर पूछताछ हुई। उसकी निशानदेही पर 9 एमएम पिस्टल और तीन मोबाइल फोन भी बरामद किए गए थे, जिसमें एक आईफोन भी था। आईफोन की चैट हिस्ट्री से करोड़ों की लेनदेन का खुलासा भी हुआ था। पुलिस उस लेनदेन की हकीकत जानने के लिए पुलिस अधिवक्ता दोबारा कस्टडी में ली है।

28 मार्च को कोर्ट ने सुनाई थी उम्रकैद की सजा : उमेश पाल अपहरण केस में एमपी-एमएलए कोर्ट ने अतीक के साथ-साथ उसके वकील खान सौलत हनीफ को भी उम्रकैद की सजा सुनाई थी। उसे नैनी सेंट्रल जेल में रखा गया है। बीते मंगलवार को पुलिस उसे 12 घंटे के लिए पूछताछ के लिए रिमांड पर ली थी। बता दें कि उमेश पाल हत्याकांड की जांच के दौरान पुलिस ने सौलत को भी आरोपी बनाया है। उस पर साजिश रचने और तस्वीरें शूटर्स को भेजने का आरोप है। पुलिस जांच में यह भी सामने आया है कि उमेश पाल हत्याकांड के ठीक पांच दिन पहले सौलत हनीफ ने असद को उमेश की 10 अलग अलग तस्वीरें भेजी थी।

नगर कोतवाल का हुआ भव्य श्रृंगार एवं पूजन

ज्येष्ठ माह के पहले बड़े मंगलवार पर बड़े हनुमान जी का फूलों से किया गया श्रृंगार

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। नगर कोतवाल का हुआ भव्य पूजन ज्येष्ठ माह के पहले बड़े मंगलवार पर बड़े हनुमान मंदिर में भक्तो का तांता लगा रहा प्रयागराज के बड़े हनुमान मंदिर में बड़े हनुमान जी का भव्य श्रृंगार किया गया बाघंबरी मठ और बड़े हनुमान मंदिर के महंत बलबीर गिरी महाराज ने महाआरती की वहीं भक्तों ने सुंदर कॉड का पाठ किया गया सामूहिक सुंदर कांड का पाठ का हुआ आयोजन ज्येष्ठ माह बड़े मंगल के अवसर पर बड़े हनुमान मंदिर में विशेष पूजन हुआ। बड़े हनुमान मंदिर को फूलों से संजाया गया। साथ ही बड़े हनुमान जी महाराज का विशेष शंगार किया गया। ज्येष्ठ माह के पहले मंगलवार पर भगवान बड़े हनुमान जी के दर्शन के लिए दूर -दूर से श्रद्धालु पहुंचे। देर शाम तक भीड़ लगी रही। शाम साढ़े चार बजे महाआरती हुई इसके बाद सामूहिक सुंदर कांड का पाठ का आयोजन किया गयाबड़े हनुमान मंदिर में बड़े हनुमान जी का किया गया भव्य श्रृंगार वहीं भक्तों को धूप से बचाने के लिए टैंट की भी व्यवस्था की गई थी। साथ ही प्रत्येक मंगलवार की तरह भंडारा भी जारी रहा। श्री महंत बलबीर गिरी जी महाराज ने बताया कि बड़े हनुमान मंदिर में लेटे बजरंग बली को प्रयागराज के नगर कोतवाल के रूप में माने जाते हैं वही शरद जायसवाल मल्लू गुप्ता शिविन केसरवानी बबलू ने बताया कि दूर-दूर से भक्तगण यहां आते हैं हनुमान जी सब पर कृपा अपनी बनाए रखते हैं।

तलाक केस वापस लेने के लिए पति कर रहा बदनाम

प्रयागराज। प्रयागराज पुलिस कमिश्नरेट के धूमनगंज कोतवाली क्षेत्र में एक विवाहिता ने अपने पति जेठ और जेठानी के खिलाफ दहेज उत्पीड़न के साथ 67 आईटी एक्ट का मुकदमा दर्ज कराया है।महिला ने आरोप लगाया है कि उसके वॉट्सऐप का क्लोन लिंक बनाकर के उसके ससुराल वाले उसमें एडिटिंग करके अश्लील फोटो, वीडियो नात रिश्तेदारों को भेजकर उसे बदनाम कर रहे हैं। वहीं विरोध करने पर जान से मारने की धमकी दी जा रही है। तलाक का मुकदमा वापस लेने के लिए महिला और उसके बच्चों को धमकाया जा रहा है। जिससे वह परेशान पुलिस ने उसकी शिकायत पर एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।प्रयागराज नगर के धूमनगंज थाना अंतर्गत देव प्रयागम कॉलोनी झलवा की रहने वाली एक युवती की शादी 19 नवंबर 2010 को राजापुर, कैंट में एक युवक के साथ हुई थी। उसके दो बच्चे है। शादी के बाद से ही महिला को उसके पति और परिवार के लोग प्रताड़ित कर रहे हैं। आरोप है कि दहेज में फॉर्च्यूनर कार मांगा जा रहा है। न देने पर उसे ससुराल से निकाल दिया गया। मायके आने के बाद महिला ने पति से तलाक का मुकदमा कोर्ट में दाखिल किया था। जो अभी विचाराधीन है। महिला वर्तमान में अपने मायके में रह रही है।आरोप है कि उसके ससुराल वाले कह रहे हैं कि अगर वह मुकदमा वापस नहीं लेती है, तो ससुराल वाले उसका समाज में जीना मुश्किल कर देंगे। महिला की शिकायत पर धूमनगंज पुलिस ने चारों आरोपियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की है। जिसकी विवेचना इंस्पेक्टर संजय कुमार सिंह को सौंपी गई। उन्होंने ने बताया कि एफआईआर दर्ज कर मामले की जांच की जा रही है।

किशोरी लाल महादेयी विधि महाविद्यालय
पुरवा, पतेवरा, नैनी, प्रयागराज
(सम्बद्ध राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय प्रयागराज) उ. प्र.

आवश्यकता है

किशोरी लाल महादेयी विधि महाविद्यालय पुरवा, पतेवरा, नैनी, प्रयागराज में

L.LB (3 Years) के सभी विषयों में एक–एक पद प्रवक्ता एवं (B.A. L.LB) (5 Years) में विधि के समस्त विषयों के साथ ही राजनीति विज्ञान, दर्शनशास्त्र, अंग्रेजी विषयों में एक–एक पद प्रवक्ता हेतु स्थान रिक्त है, प्रवक्ता के साथ ही एक पद प्राचार्य हेतु भी स्थान रिक्त है।

योग्यता एवं वेतनमान राज्य सरकार विश्वविद्यालय के मानकानुसार। इच्छुक अभ्यर्थी एक सप्ताह के अन्दर अपना बायोडाटा एवं समस्त मूल दस्तावेजों के साथ महाविद्यालय में सम्पर्क करें।

प्रबन्धक
मो.: 9451360758, 9125404570

शराब की दुकान में घुसकर सेल्समैन की करी पिटाई, विरोध करने पर मारने की दी धमकी

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। प्रयागराज के सिविल लाइन्स में शराब की सरकारी दुकान में घुसकर सेल्समैन से मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। सेल्समैन का कहना है कि दारू का पैसा गुंडे से मांग लिया था। शिकायत के बाद हरकत में आई पुलिस ने मारपीट करने के आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। मारपीट की घटना सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। सिविल लाइंस पुलिस के मुताबिक राजेंद्र प्रसाद जायसवाल हॉट स्टफ चौराहे पर मॉडल शाप में सेल्समैन है। मॉडल शॉप पर 9 मई की शाम को एक युवक आया और शराब खरीदा। शराब लेने के बाद सेल्समैन ने जब पैसा मांगा तो वह दुकान के अंदर घुस गया और वहां मौजूद सेल्समैन राजेंद्र प्रसाद और दीपक कुमार को गाली-गलौज करते हुए कई थप्पड़ जड़ दिए। दोनों का दोष सिर्फ इतना था कि इन लोगों ने युवक से शराब का पैसा मांग लिया था। उसी में गुस्साए युवक ने दोनों सेल्समैन को पहले पीटा फिर गर्दन पकड़कर दबाने लगा और जान से मारने की धमकी दी।

पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

यह घटना वहां लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई। राजेंद्र प्रसाद सोनकर के तरफ से सिविल लाइन्स थाने में शिकायत पत्र दिया गया। जिसके आधार पर पुलिस ने सीसीटीवी कैमरा चेक किया। फुटेज के आधार पर आरोपी की शिनाख्त दीपक सोनकर निवासी सिविल लाइन्स के रूप में हुई। उसे गिरफ्तार कर लिया गया। संबंधित धाराओं में उसका चालान कर दिया गया है।

जमीनी विवाद को लेकर दो पक्षों में जमकर मारपीट

प्रयागराज। जमीन विवाद को लेकर मंगलवार शाम को दो पक्षों में जमकर लाठी डंडे और ईंट पत्थर चले। जिसमें आठ लोग घायल हो गए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने ग्रामीणों की मदद से घायलों को अस्पताल पहुंचाया। जिसमें तीन लोगों की हालत नाजुक देख उन्हें जिला अस्पताल के लिए रेफर कर दिया गया है।गंगापार के बहरिया थाना क्षेत्र में अभईपुर खजुहा निवासी सत्य नारायण और सन्तोष के बीच एक विवादित जमीन पर निर्माण को लेकर मंगलवार शाम को विवाद हो गया। पहले कहासुनी हुई फिर देखते ही देखते दोनों पक्षों में मारपीट शुरू हो गई। लाठी डंडा, ईंट पत्थर चलने लगे। जो खूनी संघर्ष में बदल गया। शोर शराबा सुनकर ग्रामीण दौड़े, लेकिन लाठी डंडा के आगे सभी लोग विवश नजर आए। मारपीट में दोनों तरफ से महिला समेत तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए।

पुलिस को देखकर झगड़ा करने वाले लोग भागे : घटना की सूचना पर पहुंची पुलिस को देखकर झगड़ा करने वाले लोग भाग निकले। ग्रामीणों की मदद से घायलों को पुलिस ने बहरिया सीएचसी भेजवाया। जहां से तीन लोगों को जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया। जिसमें अर्चना, बाबूलाल और रामकली है। वहीं अन्य घायल अनीता, मीरा देवी, उमा और अशोक कुमार को प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया। बहरिया पुलिस को दोनों पक्षों से तहरीर दिया गया है। गांव में बड़ी घटना न घटे इसलिए पुलिस तैनात है।बहरिया थानाध्यक्ष रमेश सिंह ने बताया कि दोनों ओर से उन्हें तहरीर मिली है। जांच के बाद दोषियों पर कड़ी कार्रवाई किया जाएगी।

आवश्यकता है

एस. आर. सिंह आर बी सिंह महाविद्यालय हण्डिया प्रयागराज (सम्बद्ध राजेन्द्र सिंह रज्जू भैया विश्वविद्यालय प्रयागराज)

प्राचार्य हेतु

योग्यता एवं वेतनमान राज्य सरकार विश्वविद्यालय के मानकानुसार आवेनद की अंतिम तिथि विज्ञापन के 15 दिन के अन्दर

प्रबन्धक : राम बहादुर सिंह
मो.: 8853264243

कार्यालय ग्राम पंचायत घोरहट, वि. ख. करछना प्रयागराज

पत्रांक: मेमो/ग्राम पं. वि. अ./कोटेशन/ 2023-24 — **टेण्डर/कोटेशन** — दिनांक : 10.05.2023

ग्राम पंचायत **घोरहट** में वित्तीय वर्ष 2023–24 में कराये जाने वाले कार्य, मनरेगा/15 वां वित्त/राज्य वित्त योजना अन्तर्गत ग्राम पंचायत **घोरहट** विकास खण्ड करछना में अद्योलिखित कार्यो के लिए इच्छुक पंजीकृत फर्मो से अल्प कालीन निविदा आमंत्रित की जाती है, आकड़न/प्राकलन के अनुसार यथा आवश्यक मात्रा में सामग्री कार्य स्थल पर प्राप्त आपूर्ति भाड़ा एवं कार्य की मजदूरी सहित पहुंचाकर आपूर्ति हेतु आपूर्तिकर्ता से सील बन्द लिफाफे में टेन्डर/कोटेशन अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय में दिनांक 11–05–2023 से दिनांक 24–05–2023 को अपराह्न 3 बजे तक आमंत्रित किया जाता है। उक्त तिथि के बाद प्राप्त किसी भी टेन्डर/कोटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा आपूर्तिकर्ता अपना कोटेशन/टेन्डर उक्त तिथि तक जमा कर सकते हैं । नियम व शर्तें किसी भी समय कार्यालय कार्यदिवस में देखी जा सकती है , तथा टेन्डर फार्म की बिक्री उक्त अवधि में कार्यालय समय 10 से 12 बजे तक प्रत्येक कार्यदिवस पर की जायेगी। किसी एक व समस्त टेन्डर/कोटेशन को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत में निहित होगा। टेन्डर/कोटेशन दिनांक 25–05–2023 को अपराह्न 4 बजे पूर्व निर्धारित कमेटी के समक्ष खोला जायेगा। टेण्डर /कोटेशन फार्म कार्यालय में ग्राम पंचायत विकास अधिकारी के पास दिनांक 25–05–2023 कार्यालय अवधि में समय 3.30 अपराह्न तक जमा किया जा सकता है। निम्नलिखित कार्य पर पर जिस–जिस सामग्री की आवश्यकता है उसका विवरण कार्यलय/नोटिस बोर्ड पर चस्पा है। उत्तर प्रदेश माल एवं सेवाकर अधिनियम के अन्तर्गत अनुमन्य जी.एस.टी. का भुगतान किया जायेगा, जिसके जमा करने का दायित्व आपूर्तिकर्ता का होगा, साथ ही जी.एस.टी जमा चालान की आपूर्तिकर्ता द्वारा स्वप्रमाणित प्रति भुगतान के एक माह के अन्दर अपरिहार्य रूप से जमा करना होगा। उसके उपरान्त ही अगला भुगतान किया जायेगा। उस भुगतान पर ही उक्त नियम व शर्तें लागू रहेगी। इसके विपरीत स्थिति पाने पर भविष्य के उक्त फर्म को काली सूची में डालने हेतु उचित विधिक कार्यवाही कर दी जायेगी।

क्र0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत श्रम एवं सामग्री अंश	सामग्री अंश आपूर्ति की अवधि
1.	ग्राम पंचायत घोरहट के पूर्व माध्यमिक विद्यालय (भगनपुर) में दिव्यांग शौचायल निर्माण कार्य	1.76 लाख	1 माह
2.	ग्राम पंचायत घोरहट में शिव मंदिर से विमलेश राय के घर तक इण्टरलाकिंग कार्य	3.76 लाख	1 माह

कृष्णा कली
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत घोरहट
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

कमल सिंह
सचिव
ग्राम पंचायत घोरहट
वि0 ख0 करछना प्रयागराज

दहेज के लिए बहू को निकाला

प्रयागराज। प्रयागराज में दहेज में एक करोड़ का फ्लैट न मिलने से नाराज ससुरालियों के द्वारा बहू को मारपीट कर घर से निकालने का मामला सामने आया है। आरोप है कि उन्होंने धमकी दी है कि अगर बिना डिमांड की रकम के लौटी तो जिंदा नहीं छोड़ेंगे। जिससे डरकर वह अपनी ससुराल से अपने मायके प्रयागराज लौट आई। ससुराल वालों का कुछ दिन इंतजार किया, लेकिन जब उनके व्यवहार में कोई बदलाव नहीं आया तो पुलिस की चौखट पर न्याय की गुहार लेकर पहुंच गई। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने उसके कारोबारी पति, ससुर, सास और देवर के खिलाफ दहेज उत्पीड़न, मारपीट, गाली-गलौज और जान से मारने की धमकी की धाराओं में एफआईआर दर्ज की है। सिविल लाइंस में रहने वाले राकेश अग्रवाल शहर के प्रतिष्ठित कारोबारी हैं। उन्होंने अपनी इकलौती बेटी निकिता अग्रवाल की शादी 24 जनवरी 2022 को वैवाहिक वेबसाइट के माध्यम से की थी। विधि से स्नातक और परास्नातक निकिता अग्रवाल मेधावी छात्राओं में गिनी जाती थी। उसकी शादी ग्रेटर नोएडा सेक्टर 27 में स्थित एक होटल से संपन्न हुई थी। उसके पिता ने 70 से 75 लाख रुपए खर्च किए थे। शादी में दान दहेज को लेकर उसके ससुराल वाले पहले दिन से ही असंतुष्ट दिखे और उसे उलाहना देना शुरू कर दिया था। उत्पीड़न से परेशान होकर आई मायके : 17 अप्रैल 2023 को पति, सास, ससुर और देवर ने निकिता अग्रवाल से कहा कि वह अपने पिता को फोन करके एक करोड़ रुपए मांगे। जिससे वह फ्लैट खरीदेंगे। निकिता द्वारा मना करने पर उसकी सास ने उसके भाई को फोन किया और फोन पर भाई से गाली गलौज किया। किसी तरह से वह अपनी जान बचाई और डायल 112 को सूचना दी। पुलिस पहुंची उसने तहरीर दी, लेकिन फिर भी ससुरालियों का उत्पीड़न नहीं थमा।

धरने पर बैठी पहलवानो के समर्थन में निकला कैंडल मार्च

उठी सांसद बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग

अखंड भारत संदेश

झूंसी। दिल्ली के जंतर मंतर पर सांसद बृजभूषण शरण सिंह के खिलाफ धरने पर बैठी महिला पहलवानो के समर्थन में जनतादल यूनाइटेड की ओर से कैंडल मार्च निकाला सांसद के खिलाफ कार्यवाही की मांग की गई। जनता दल यूनाइटेड इलाहाबाद की ओर से बुधवार की शाम झूंसी लालचौक पर सभा की गई जिसके बाद कैंडल मार्च लाल चौक से पावर हाउस गोल पार्क से यादव चौराहा तक निकाला गया। कार्यक्रम का नेतृत्व जनता दल यूनाइटेड के डा.एजे अहमद प्रदेश उपाध्यक्ष ने किया। इस दौरान बिशम्भर पटेल महासचिव जेडीयू ने कहा की आज यह महिला बेटियो के सम्मान का संघर्ष देश के जम्हूरियत में महिलाओं के समान भागीदारी का है। समान भागीदारी का मतलब सम्मान से जीना। आजादी के साथ अपनी क्षमता का विकास। हर सरकारी संस्थानों में पुरुषों के समान महिलाओं के प्रति कदर। यानी श्रमण संस्कृति जो वर्चस्ववादी संस्कृति के अंतर्विरोधी है। सभा का संचालन मनोज पासी ने बृजभूषण शरण सिंह की गिरफ्तारी की मांग की। सूर्य भान सिंह, कौशिकी श्रीवास्तव , आलोक बौद्ध , कृष्णा यादव, चंद्रजीत यादव, तरुण श्रीवास्तव, सीताराम विद्रोही, मुन्नी लाल, पद्मा सिंह स्त्री अधिकार संगठन, किरण , राम कृष्णा पासी, साक्षी, सोनम ,छाया आदि मौजूद रही।

वायरल वीडियो का अभियुक्त अवैध तमंचा व कारतूस के साथ गिरफ्तार

परियावां, प्रतापगढ़। नवाबगंज थाना क्षेत्र के रेवली गांव मे नौटंकी के दौरान मंच पर खड़ा होकर शस्त्र से फायर करते हुए सोशल मीडिया में वायरल वीडियो को थाना नवाबगंज पुलिस द्वारा संज्ञान में लेकर जांच की गई, जिसमें नामजद अभियुक्त के विरुद्ध 30 अप्रैल 23 को थाना नवाबगंज में मु0अ0सं0 69/2023 धारा 286 भादवि का अभियोग पंजीकृत किया गया।

पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देशन में उपरोक्त अभियोग की विवेचनात्मक कार्यवाही के दौरान थाना नवाबगंज के उ0नि0 अनूप कुमार यादव अपने हमराही के साथ मुखबिर की सूचना पर थाना क्षेत्र के रेवली मोड़ के पास से मु0अ0सं0 69/2023 उपरोक्त से संबंधित वांछित अभियुक्त इम्तियाज उर्फ इम्याज अहमद पुत्र बफाती अली निवासी ग्राम रेवली थाना नवाबगंज जनपद प्रतापगढ़ को एक अवैध देशी तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार किया गया । उक्त बरामदगी के संबंध में अभियोग उपर्युक्त में धारा 3/25 आर्म्स एक्ट की बढ़ोत्तरी की गई है। पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त नें बताया कि यह अवैध देशी तमंचा मैं अपनी सुरक्षा के लिए पास मे रखते है 30 अप्रैल 2023 को रात में मेरे गांव रेवली में एक नौटंकी थी जहां मंच पर गाना का कार्यक्रम चल रहा था वहां मैं मौजूद था मै जोश में आकर मंच पर चढ़कर तमंचा लहराते हुए उससे फायर कर दिया था, जिसकी किसी नें वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर दिया था। पुलिस ने अभियुक्त के खिलाफ लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेज दिया।

मतगणना पर्यवेक्षकों को दी गई मतगणना की जानकारी

13 मई को सुबह आठ बजे होगी मतगणना

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन 2023 की मतगणना को शांतिपूर्ण, सकुशल और निष्पक्षता पूर्ण संपन्न कराने के लिए बुधवार को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यशाला निर्वाचन आयोग उत्तर प्रदेश के निर्देश के क्रम में एवं जिलाधिकारी/जिला निर्वाचन अधिकारी डॉ0 नितिन बंसल एवं मुख्य विकास अधिकारी/ प्रभारी अधिकारी कार्मिक के आदेश के क्रम में मतगणना कार्मिकों का दो पारियों में प्रशिक्षण संपन्न हुआ, जिसमें मतगणना पर्यवेक्षक एवं मतगणना सहायक उपस्थित रहे।

शहर के बीएसएस एकेडमी फुलवरिया प्रतापगढ़ में संपन्न हुआ। प्रशिक्षण स्थल पर प्रशिक्षण का निरीक्षण डॉ नितिन बंसल जिला

मतगणना पर्यवेक्षकों को प्रशिक्षण देते अधिकारी।

अधिकारी प्रतापगढ़ एवं ईशा प्रिया, मुख्य विकास अधिकारी एवं प्रभारी अधिकारी कार्मिक प्रतापगढ़ ने प्रशिक्षण स्थल का निरीक्षण किया और निर्देश दिया कि मतगणना कार्य में मतगणना कार्मिक की किसी भी प्रकार की शिथिलता, संलिप्तता, संदिग्धता की स्थिति में लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम धारा 1951 की सुसंगत धाराओं में कठोर कार्रवाई की जाएगी, जिसके लिए कार्मिक स्वयं जिम्मेदार होंगे। मतगणना का समय 13 मई प्रातः 8:00 बजे से होगा, लेकिन मतगणना कार्मिकों को प्रातः 6:00 बजे पहुंचना होगा। मतगणना एक साथ राजकीय इंटर कॉलेज प्रतापगढ़, सेंट एंथोनी इंटर कॉलेज प्रतापगढ़, डिग्री कॉलेज पट्टी, स्वामी करपात्री इंटर कॉलेज रानीगंज, तुलसी इंटर कॉलेज बाबूगंज कुंडा एवं विकासखंड लालगंज में संपन्न होगा।

मास्टर ट्रेनर्स द्वारा मतगणना कार्मिकों को यह बताया गया कि मतगणना में एक टेबल पर एक मतगणना पर्यवेक्षक एवं तीन मतगणना सहायक एवं एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी रहेंगे। उन्होंने विस्तार पूर्वक मतगणना प्रक्रिया के बारे में बताया एवं महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की। उन्होंने मतगणना कार्मिकों से प्रश्न भी किया और उसके समुचित जवाब भी प्राप्त किए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी प्रतापगढ़ त्रिभुवन विश्वकर्मा, जिला विकास अधिकारी प्रतापगढ़ ओम प्रकाश मिश्र, डॉ ओपी राय जिला विद्यालय निरीक्षक प्रतापगढ़, भूपेंद्र सिंह जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी प्रतापगढ़, प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कालेज बरहदा प्रतापगढ़ डॉ विंध्याचल सिंह, डॉ मो अनीस, प्रचार प्रसार अधिकारी अफीम कोठी ए एन द्विवेदी प्रभारी प्राचार्य अफीम कोठी प्रतापगढ़, नीरज मिश्रा, सुशील सिंह आदि रहे। मास्टर ट्रेनर में प्रमुख रूप से रहे डॉ मोहम्मद अनीस, बीएल वर्मा, प्रभाकर सिंह, राजेश सिंह, अनिल कुमार निलय, सनी देओल, अशोक वैश, राजकिशोर, शाहिद मुराद, नसीमुद्दीन, टीआर सिंह एवं अनिल सिंह और अशोक शुक्ला सहित समस्त टेक्निकल मास्टर ट्रेनर उपस्थित रहे।

अधिवक्ता के निधन पर साथियों ने जतायी संवेदना

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता एवं साहित्यकार सत्येन्द्र नारायण मिश्र मृदुल के आकस्मिक निधन पर बुधवार को अधिवक्ताओं ने शोकसभा कर गहरा दुख जताया। लालगंज क्षेत्र के महराज का पुरवा असरही निवासी अधिवक्ता सत्येन्द्र मृदुल जिले के वरिष्ठ अधिवक्ता होने के साथ नामी गीतकार भी थे। सत्येन्द्र के निधन पर राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी व रामपुर खास की विधायक आराधना मिश्रा मोना ने भी गहरा दुख जताया है। वहीं तहसील मे हुई शोकसभा में साथियों ने भी उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किये। शोकसभा की अध्यक्षता संयुक्त अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश व संचालन महामंत्री धीरेन्द्र शुक्ल ने किया। बैठक मे रूरल बार के अध्यक्ष ज्ञानप्रकाश शुक्ल, संघ के उपाध्यक्ष शैलेन्द्र चतुर्वेदी व लाल विनोद सिंह, विकास मिश्र, देवी प्रसाद मिश्र, राव वीरेन्द्र सिंह, राममोहन सिंह, संतोष पाण्डेय, विनोद मिश्र, विपिन शुक्ल, विनय शुक्ल, राकेश शुक्ला, अनूप पाण्डेय, अजय शुक्ल गुडडू, घनश्याम मिश्र आदि ने सत्येन्द्र मृदुल के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डालते हुए उनके असमय निधन को दुखद ठहराया।

भारतीय साहित्य सर्वेक्षण में प्राध्यापक की समीक्षा प्रकाशित होने पर बढ़ा जिले का गौरव

हेमवती नंदन बहुगुणा महाविद्यालय परिवार में हर्ष का माहौल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। भारत सरकार के केंद्रीय हिंदी निदेशालय से प्रकाशित भारतीय साहित्य सर्वेक्षण, वार्षिकी 2021 में हेमवती नंदन बहुगुणा स्नातकोत्तर महाविद्यालय लालगंज, प्रतापगढ़ में प्राध्यापक पद पर कार्यरत डॉ संतोष कुमार मिश्र वत्शेष के कविता संग्रह कहे कहानी जंगल सारा की समीक्षा प्रकाशित हुई, जिसमें डॉ मिश्र की रचना को भाव की दृष्टि से एक सशक्त संग्रह बताया गया है। इस गरिमामयी साहित्यिक उपलब्धि पर महाविद्यालय परिवार एवं डॉ मिश्र के पाठकों तथा मित्रों

डा0 संतोष कुमार मिश्र।

में हर्ष एवं उत्साह का माहौल है।

महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. डॉ0 शैलेंद्र कुमार मिश्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व चीफ प्रॉक्टर प्रोफेसर हरिकेश नारायण मिश्र, पूर्व प्राचार्य प्रो राजेंद्र मिश्र, एमडीपीजी के जन सूचना अधिकारी डॉ छवि नारायण पांडे,प्रो आलोक द्विवेदी, डॉ वाचस्पति मिश्र,डॉ सत्येंद्र नाथ मिश्र आदि ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए डॉ संतोष मिश्र को उत्तरोत्तर साहित्योत्कर्ष हेतु शुभकामना दी है। ध्यातव्य है कि इसके पूर्व भी डॉ मिश्र की 9 पुस्तकें एवं 32 शोधपत्र राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय जर्नल में प्रकाशित हैं.तथा विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों में 15 से अधिक शोधपत्र इनके द्वारा पढ़े जा चुके हैं।

छात्र-छात्राओं को मॉक ड्रिल व आग से बचाव की दी गई जानकारी

बाबू राम अधार सिंह सोमवंशी इंटरनेशनल स्कूल में अग्निशन विभाग ने किया प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। उत्तर प्रदेष शासन के आदेषानुसार पुलिस अधीक्षक सतपाल अंतिल के निर्देषन में अग्निषमन अधिकारी प्रभाकर पाण्डेय, ली0फा0 मैन राधेष्याम दुबे, चालक जगन्नाथ आर्या, फायरमैन सत्य प्रकाष यादव, विजय बहादुर यादव, महेन्द्र कुमार, अनंत कुमार व संदीप कुमार द्वारा बाबू राम अधार सिंह सोमवंषी इंटरनेषनल स्कूल ईषीपुर ढेकाही में विद्यालय की छात्र/ छात्राओं, टीचर्स को अग्नि सुरक्षा विषय पर राधेष्याम दुबे द्वारा विस्तृत जानकारी दी गई।

इस दौरान ड्रिल/मॉक ड्रिल, निष्क्रमण योजना ड्रिल, लैडर ड्रिल, स्टेज्चर ड्रिल कराकर प्रषिक्षित किया गया। कार्यक्रम के दौरान

एलपीजी सिलेण्डर में लगी आग को बुझाने का प्रदर्शन करते अधिकारी।

दुर्घटनाग्रस्त भवन के ऊपरी मंजिल में फंसे आहत व्यक्ति को लैडर के माध्यम से सकुषल बाहर निकालने एवं प्राथमिक उपचार करके एम्बुलेंस से हास्पिटल भेजने का प्रदर्षन किया गया तथा एलपीजी सिलेण्डर में आग लगाकर फायर एक्सटिंग्यूषर से तथा अन्य प्रायोगिक विधियों से आग बुझाने का अभ्यास कराया गया। साथ ही फायर स्टेषन में परेड एवं उपकरणों की पहचान तथा प्रयोग की विधियों का अभ्यास कराया गया। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रबंधक राकेष सिंह सोमवंषी व प्रधानाचार्य के अलावा टीचर्स, स्टाफ व छात्र-छात्राएं मौजूद रहीं।

सरेबाजार टप्पेबाजों ने दम्पति से उड़ाये दस हजार, जांच मे जुटी पुलिस

लालगंज, प्रतापगढ़। बाजार मे टप्पेबाजो ने दम्पति से धुप्पलबाजी कर दस हजार रुपए उडा लिये। दिनदहाड़े बदमाशों की हुई हरकत को लेकर बाजार में हडकंप मच गया। वही पुलिस भी घटना से आवाक नजर आयी। लीलापुर थाना क्षेत्र के सगरा सुंदरपुर स्थित बैंक आफ बडौदा की शाखा में डांडी गांव की आशा सिंह अपने पति अमरेश सिंह के साथ पैसा निकालने आयी थी। दोपहर करीब साढे बारह बजे बैंक से पैसा निकालकर दम्पति बाजार में घरेलू सामान की खरीददारी करने लगे। इस बीच बाइक से दो आरोपी पहुंचे और अमरेश को रिश्तेदारी के झांसे मे लेकर दो हजार रुपए फुटकर देने का अनुरोध किया। इस पर आरोपियो को न पहचान पाने के बावजूद मानवीय आधार पर अमरेश ने उन्हें फुटकर देने के लिए जैसे ही दस हजार की गडडी निकाली, आरोपियो मे से एक ने अमरेश के हाथ से पैसा लिया और देखते ही देखते दोनों बदमाश बाइक से फुर्र हो गये। घटना से आवाक दम्पति ने शोर मचाया किंतु तब तक बाइक सवार बदमाश लोगों की आंख से ओझल हो चुके थे। पीडित ने घटना की सूचना लीलापुर पुलिस को दी। जानकारी मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस घटना की जांच मे मशक्कत करती देखी गयी।

उमरडीहा की मुस्कान तथा बिबियाकरनपुर की खुशबू को किया सम्मानित

मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित कर बढ़ाया उत्साहवर्धन

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। जन्मदिन मनाने का सब का अंदाज अलग अलग होता है। केक काटकर धूमधड़ाका और पार्टी करके तो जन्मदिन सभी मनाते है मगर उसे अधिक यादगार बनाने और सार्थक करने के उद्देश्य से युवा समाजसेवी ने परीक्षा में अव्वल रहने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित करके तथा उनका उत्साहवर्धन किया।

पट्टी तहसील क्षेत्र के गोविंदपुर गांव के रहने वाले चंदन सिंह पटेल सामाजिक मुद्दों पर मुखर होने तथा लोगों की मदद के लिए जाने जाते हैं कुछ दिन पहले विशाल किसान आंदोलन में वह किसानों के पक्ष में आंदोलन करते हुए अगुवाई की थी बुधवार को अपने जन्म दिवस के

मेधावी छात्रा को सम्मानित करते चंदन सिंह पटेल।

अवसर पर हाई स्कूल तथा इंटरमीडिएट मेधावियों को पुरस्कृत करते हुए अपना जन्मदिन मनाया तथा उन्हें मेडल और पढ़ाई हेतु धनराशि देकर उनका हौसला बढ़ाया और सादगी से अपना जन्मदिन मनाया। गोविंदपुर गांव के रहने वाले चंदन सिंह पटेल बुधवार को अपने जन्मदिन के अवसर पर तहसील क्षेत्र के बिबिया करनपुर गांव में की रहने वाली खुशबू पुत्री श्यामलाल गौतम को पढ़ाई के लिए धनराशि देकर सम्मानित किया । खुशबू के दोनों हाथ नहीं है फिर भी वह अपने हौसलों से पढ़ाई कर रही है परास्नातक की परीक्षा पास करने वाली खुशबू अपने पैर से लिखने के लिए क्षेत्र में लोकप्रिय है। वही उमरडीहा गांव की रहने वाली मुस्कान पुत्री छोटेलाल पटेल को हाईस्कूल की परीक्षा में 91 फीसदी अंक प्राप्त करने पर उन्हें पढ़ाई के लिए धनराशि तथा मेडल देकर सम्मानित किया । इस दौरान चंदन सिंह पटेल से बात करने पर उन्होंने बताया कि अपने जन्मदिन को सार्थक तथा सफल बनाने के लिए सादगी पूर्ण तरीके से मेधावी विद्यार्थियों का उत्साहवर्धन करके जन्मदिन मनाने का फैसला किया है। इस अवसर पर उनके साथ जिला पंचायत सदस्य पवन सरोज, पूर्व बसपा प्रत्याशी विधानसभा रामपुर खास बांकेलाल पटेल, ललित, शैलेंद्र सुरेंद्र चंद्रकेश सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

अधिवक्ता व साहित्यकार सत्येन्द्र नाथ के निधन पर सृजना ने जताया शोक

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। सृजना साहित्यिक संस्था उत्तर प्रदेश द्वारा वरिष्ठ साहित्यकार अधिवक्ता सत्येन्द्र नाथ मिश्र ह्रमृदुलह्र के आकस्मिक निधन पर एक शोक सभा का आयोजन सृजनाकुटीर, अजीतनगर प्रतापगढ़ में किया गया, जिसमें उनके दुखद निधन पर गहरा शोक प्रकट किया गया। वक्ताओं ने दिवंगत श्री मृदुल के व्यक्तित्व, कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए उन्हें बहुमुखी प्रतिभा संपन्न बताया। श्रद्धांजलि अर्पित करने वालों में नेता शिव प्रकाश मिश्र सेनानी, साहित्यकार डॉ दयाराम मौर्य ह्ररत्नह्र, रोशन लाल ऊमरवैश्य, आनन्द मोहन ओझा, राधेश्याम दीवाना, श्रीनाथ मौर्य सरस, प्रेम कुमार त्रिपाठी प्रेम, कुंज बिहारी लाल मौर्य काकाश्री, राजीव कुमार आर्य, अनिल कुमार निलय समेत अन्य प्रबुद्धजन प्रमुख रहे।

सत्येन्द्र नाथ मिश्र मृदुल (फाइल फोटो)

रिहायशी छप्पर में लगी आग से गृहस्थी खाक, दो गायों की दर्दनाक मौत

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। शॉर्ट सर्किट होने से घर की गृहस्थी जलकर खाक हो गई वही आग की लपटों

जान से मार डालने की धमकी पर पुलिस पहुंची आरोपी के घर

परियावां, प्रतापगढ़। सोशल मीडिया पर 15 दिनों के अंदर जान से मार डालने की धमकी का बुधवार की सुबह वायरल हुई 52 व 14 सेकंड की वीडियो का पता करके आरोपी युवक के घर पुलिस पहुँची घर पर आरोपी के न मिलने से पुलिस वापस चली गयी। वीडियो वायरल थाना क्षेत्र के शेखमोहम्मदपुर का बताया जा रहा है जिसमे युवक के हाथ मे मोटा डंडा है जो किसी को बिना नाम कहे कह रहा है कि 15 दिनों के मार डालेंगे युवक कि सरेआम धमकी से गांव मे हड़कंप मचा हुआ कि वीडियो वायरल होने पर नवाबगंज थाना प्रभारी सुधीर कुमार सोनी उक्त गांव मे आरोपी के घर दो सिपाही को बाइक से भेजा जो पूछ ताछ वापस चले गये वीडियो वायरल मे जान से मार डालने की धमकी देने वाला युवक नही मिला पुलिस खाली हाथ वापस चली गई। युवक के बारे मे बताया जा रहा है झुकवारा गांव मे किशोरी के साथ हुई दुराचार मे सजा काट कर आया है जो बाहर रहता है कुछ दिन पूर्व वापस गांव अपने घर आया है और किसी को जान से मार डालने की खुलेआम धमकी दे रहा ह।

से पीड़ित के पशुपालन में आग लगने से दो गायों की दर्दनाक मौत हो गई। आग लगने से अब पीड़ित परिवार के साथ खुले आसमान के नीचे रहने को मजबूर है शासन की तरफ से लेखपाल ने मौके का निरीक्षण करके रिपोर्ट शासन को भेज दिया है।

पट्टी तहसील क्षेत्र के डेईडीह धौराहरा गांव के रहने वाले उदय राज यादव हैंड पंप बनाने का काम करता है। उनकी दो बेटियों में बड़ी बेटी की शादी मई महीने के अंतिम सप्ताह में है। बारात आने के लिए पूरी तैयारियां चल रही थी। मंगलवार की शाम के समय शॉर्ट सर्किट के कारण अचानक उदय राज के छप्परनुमा रिहायशी मकान में आग लग गई। आग की लपटें देखकर घर की महिलाएं चीखने चिल्लाने लगी शोर मचाया तो आसपास के लोग दौड़े तब तक आग की लपटें उनके बगल पशुशाला में रखे छप्पर में पकड़ लिया और उसके अंदर बंधी दो गाय बुरी तरीके से जल गई। ग्रामीण बाल्टी लेकर आग बुझाने की कोशिश की लेकिन थोड़ी ही देर में बेकाबू आग ने दोनों छप्परों को अपने आगोश में लेकर सब कुछ खाक कर दिया अब पीड़ित परिवार खुले आसमान के नीचे रहने के लिए मजबूर है।

वाहन की टक्कर से युवक की मौत, कोहराम

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लीलापुर थाना के अर्न्तगत तेज गति से आ रही दुग्ध वाहन डाला की चपेट मे आने से युवक की दर्दनाक मौत हो गयी। अन्तू थाना के कोलबझान निवासी यशवंत वर्मा 22 पुत्र रामबहादुर बाइक से बुधवार को लालगंज की ओर आ रहा था। अचानक प्रतापगढ़ रायबरेली नेशनल हाइवे पर रहिमाकुली गांव के पास सामने से तेज गति से आ रहे दुग्ध वाहन डाला ने बाइक सवार को अपनी चपेट मे ले लिया। दुर्घटना मे मौके पर ही बाइक सवार युवक यशंवत की दर्दनाक मौत हो गयी। सूचना मिलने पर लीलापुर पुलिस घटनास्थल पहुंची और मृतक के शव को कब्जे मे लेकर पीएम के लिए जिला अस्पताल भेजवाया। इधर डाला चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने वाहन को अपने कब्जे मे लेकर थाना मुख्यालय ले गयी। मृतक यशवंत तीन भाईयों मे सबसे छोटा था। यशवंत की मौत की खबर जब घर पहुंची तो परिजनों मे कोहराम मच गया।

आए थे बारात लेकर दुल्हन लेने, लेकिन पहुंच गये अस्पताल

बस की टक्कर से दूल्हा व चालक बुरी तरह घायल

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जिले के सांगीपुर थाना क्षेत्र के पूरे भइया निवासी प्रहलाद सिंह (24) वर्ष की बारत मंगलवार की शाम कुंवर कटरा आई थी, जहां आज सुबह खिचड़ी के समय दूल्हा प्रहलाद सिंह को चक्कर आया और वह बेहोष हो गया, जिससे अफरा-तफरी मच गई।

उसके घरवाले तुरंत उसे बोलेरो गाड़ी से मेडिकल कालेज

बस की टक्कर से अस्पताल में भर्ती दूल्हा

के लिये रवाना हो गये। जब यह बोलेरो गाड़ी विकास भवन के पास पहुंची तो एक प्राइवेट बस ने बोलेरो को बुरी तरह से टक्कर मार दी जिससे दूल्हा प्रहलाद सिंह व चालक गंभीर रुप से घायल हो गये हैं। उन्हें मेडिकल कालेज में भर्ती कराया गया है जहां दोनों का उपचार किया जा रहा है। इसे संयोग ही कहा जाए कि आए थे बारात लेकर दुल्हन लेने, लेकिन पहुंच गये अस्पताल। परिजनों को सूचना मिलने पर सभी मेडिकल कालेज की ओर भागने लगे।

आलापुर गेहूं क्रय केंद्र में 40 दिनों में 83 कुन्टल हुई गेहूं की खरीद

किसानों के साथ अनदेखा के चलते केंद्र पर पसरा सन्नाटा

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास खण्ड कालाकांकर के आलापुर गेहूं क्रय केंद्र पर एक अप्रैल 23 से शुरू होने वाली गेहूं खरीद 40 दिनों मे सिर्फ 83 कुंटल की खरीददारी हो पाई है जब कि 15 जून 23 तक गेहूं खरीद का समय निर्धारित है फिर भी किसान की चहल पहल क्रय केंद्र पर न होने से सन्नाटा पसरा हुआ है जब कि सरकारी रेट 2125 रुपया कुंटल जो और खुले बाजार मे 2150-2175 रु0 प्रति कुंटल है जिसमे सिर्फ 50 रु0 कुंटल का फर्क आ रहा है।

इस बाबत जब क्षेत्र के किसान रमाशंकर तिवारी, राजेश कुमार, उमाकांत, लालजी, भारतलाल जगदीश प्रसाद, उमेशचंद, रमेश कुमार से बात किया तो किसानो ने अपनी पीड़ा बताई कि जब क्रय केंद्र पर अपना अनाज बेचने जाते हैं, किसानो से माल की तौलाई होने के एक हफ्ता बाद बुलाकर अंगूठा लगवाते है उसके चार पांच दिन बाद खाता मे पैसा आता है जब की विचैलिये का माल तौल जाने पर उनका अंगूठा माल तौल जाने पर तुरंत या दूसरे दिन अंगूठा बुलाकर लगवा देते है और हम लोगो को अंगूठा लगाने के क्रय केंद्र का चक्कर काटना पड़ता है जब कि सरकारी रेट व बाजार के रेट मे कोई ज्यादा फर्क नही है क्रय केंद्र की परेशानी से बचने के लिए प्राइवेट बाजार मे दुकानदार के यहां अपना अनाज बेच देते है तुरंत पैसा मिल जाता है जिससे हमारा क्रय केंद्र मे माल ले जाने का भाड़ा व पल्लेदारी बच जाती है अब तो दुकानदार लोग छोटी गाडी पर इलेक्ट्रानिक कांटा लेकर गांव गांव घूमकर किसान का अनाज खरीद ले रहे है और तुरंत पैसा दे दे रहे है किसान को उनके माल बेचने की सुविधा सही ढंग से मिल जाय तो सरकारी क्रय केंद्र पर अनाज बेचने मे कोई दिक्कत नही है।

जेएमजी कालाकांकर मे समर कैम्प का शुभारम्भ

कक्षा-6 से 12 तक के बच्चो ने प्रतियोगिता में लिया भाग

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास क्षेत्र कालाकांकर के अंतर्गत जेएमजी सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल कालाकांकर के विद्यालय के प्रेसीडेंट वी एन शुक्ल ने त्रिदिवसीय समर कैंप का बुधवार को शुभारंभ किया। जिसमें सबसे पहले दिन बच्चों के समग्र मानसिक एवं शारीरिक विकास हेतु प्रशिक्षण दिया

प्रतियोगिता में भाग लेते जेएमजी कालाकांकर के बच्चे।

गया।

साहित्यिक गतिविधियों के क्रम में अंग्रेजी भाषा में दृश्य आधारित कहानी लेखन प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। जिसमें कक्षा 9 एवं 10 के छात्र छात्राओं ने भाग लिया कक्षा प में प्रथम स्थान पर सृष्टि एवं द्वितीय स्थान पर सौम्या तिवारी, कक्षा नौ में अक्सा जावेद अंसारी प्रथम एवं आयुष त्रिपाठी द्वितीय स्थान पर रहे। प्रधानाचार्य मुनीश शर्मा ने बताया कि 11 मई को कक्षा 6से 12 तक के बच्चे नृत्य एवं संगीत के कार्यक्रम में प्रतिभागिता करके अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। साथ ही नर्सरी से पांचवीं तक आर्ट एवं क्राफ्ट के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर अपनी बाल सुलभ रचनात्मकता का विकास करेंगे विद्यालय के चेयरमैन वी एन शुक्ला ने बच्चो की सफलता श्रेय शिक्षकों को देते हुए बच्चो की उज्जवल भविष्य की कामना ईश्वर से किया।

खबर संक्षेप

शौच के बहाने गयी किशोरी घर से हुई गायब

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के एक गांव में एक किशोरी शनिवार के दिन रात लगभग 9:00 बजे शौच के बहाने घर से निकल कर खेत की तरफ गई फिर किशोरी घर लौटकर नहीं आई तो परिजनों को चिंता हुई परिजनों ने किशोरी की खोजबीन की लेकिन किशोरी की कहीं पता नहीं चल सका खोजबीन के दौरान रविवार को पता चला कि गांव का ही विपिन पुत्र शारदा सोनकर किशोरी को बहला-फुसलाकर साथ में लेकर फरार हो गया किशोरी की मां ने आरोपी के विरुद्ध कोखराज थाने में लिखित तहरीर दी कोखराज पुलिस ने आरोपी के विरुद्ध मुकदमा लिख कर छानबीन में जुट गई है।

वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। थाना कड़ाधाम पुलिस बल द्वारा वारंटी अभियुक्त निराले पुत्र रामलखन निवासी कमालपुर थाना कड़ाधाम को गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

दलित के घर में लगी आग बेटी झुलसी, गंभीर

अग्नि कांड की घटना में दो बकरी एक बछिया सहित लाखों का सामान जलकर हुआ खाक सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष के नेता भी दलित के ऊपर आपदा पर मदद को नहीं बढ़ा सके हाथ

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के ग्राम रमदयालपुर गांव में दलित के घर बुधवार की सुबह अचानक आग लग गई देखते देखते घर का सामान जलने लगा सूचना पाकर आसपास के ग्रामीण भी मौके पर पहुंचे और आग बुझाने का प्रयास करने लगे इस अग्निकांड में गृहस्वामी की बिकलांग पुत्री गंभीर रूप से झुलस गई है अग्निकांड में दो बकरी और एक बछिया की जल कर मौत हो गई है पड़िया भी झुलस गई है अग्नि कांड की घटना में झुलसी विकलांग पुत्री को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है जहां उसकी हालत गंभीर है इस अग्निकांड की घटना में दलित का परिवार दाने-दाने को मोहताज हो गया है लेकिन उसके बाद भी राजनैतिक दल के नेता और जनप्रतिनिधियों ने दलित की मदद को हाथ नहीं बढ़ाया है अग्निकांड की घटना से पीड़ित दलित की मदद के नाम पर नेता और जनप्रतिनिधियों को सांप सूंघ गया है। घटनाक्रम के मुताबिक चरवा थाना क्षेत्र के रमदयालपुर गांव निवासी उदय पासी पुत्र मसूरिया दिन पासी

अग्निकांड में जला सामान वा घर

अग्नि कांड में झुलसी बेटी

के घर बुधवार की सुबह अचानक आग लग गई आग कैसे लगी इस बात को कोई कुछ समझ पाता तब तक आग ने विकराल रूप ले लिया आग की तेज लपटें देखकर गांव के तमाम लोग मौके पर पहुंचे घर के भीतर उसकी विकलांग पुत्री प्रभा और घर के अंदर दो बकरी बछिया और एक पड़िया मौजूद थी देखते-देखते आग की लपट ने उसकी बेटी समेत पशुओं को अपने आगोश में ले लिया देखते देखते घर का छप्पर तेज लपटों के साथ जलने लगा घर में रखा गृहस्थी का सामान अनाज कपड़ा बर्तन बिस्तर चारपाई आदि समान इस अग्निकांड की घटना में जलकर खाक हो गया है उम्मीद लगाई जाती है कि इस अग्निकांड की घटना में एक लाख रुपए से अधिक कीमत का गृहस्थी का सामान जलकर खाक हो गई है दो बकरी और एक बछिया भी जलकर खाक हो गई है पड़िया की गंभीर झुलस गई है विकलांग बेटी प्रभा गंभीर रूप से झुलस गई है जिसकी हालत नाजुक बताई जाती है इलाज के लिए बेटी को अस्पताल में भर्ती कराया गया है अग्निकांड की घटना की सूचना दिए जाने के बाद भी दलित के घर मे लगी आग को बुझाने में फायर ब्रिगेड के कर्मी वाहन समेत मौके पर नहीं पहुंच सके हैं ग्रामीणों ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया है। अग्निकांड की घटना में दलित के घर का सब कुछ जलकर खाक हो गया है दाने-दाने को परिवार मोहताज हो गया है समाचार लिखे जाने तक दलितों के मसीहा कहे जाने वाले तमाम नेता जनप्रतिनिधि भी दलित की मदद करने के लिए उसके घर नहीं पहुंच सके हैं सत्ता पक्ष से लेकर विपक्ष के नेता दलित की मदद को आगे नहीं आ सके हैं खबर लिखे जाने तक राजस्व के अधिकारी भी दलित के घर सांत्वना और राहत सामग्री देने नहीं पहुंचे हैं।

न्यूज झरोखा : चुनाव

उपाधि लेकर लौटे राम सियासन शास्त्री का समर्थको ने किया स्वागत

टेढ़ी मोड़ कौशाम्बी। ज्योतिष की दुनिया में पिछले 25 सालों से निरंतर अपनी सेवा दे रहे सिराथू तहसील अहिरारा निवासी राम सियासन शास्त्री ने जबलपुर के रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय से डाक्टरेट उपाधि से सम्मानित होने के बाद बुधवार को दोपहर बाद घर पहुंचने पर उनके समर्थकों ने उन्हे फूलमालाओं से लादकर उनका स्वागत किया इस दौरान मीडिया से बातचीत करते हुए शास्त्री ने बताया कि वह ज्योतिष के क्षेत्र में लगभग पिछले 25 सालों से काम कर रहे हैं। इसके लिए वह जिले से लेकर देश, प्रदेश एवं विदेश तक का दौरा कर चुके है। ज्योतिष के क्षेत्र में लगातार सक्रियता के चलते मध्य प्रदेश के जबलपुर स्थित रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय ने काम से प्रभावित होते हुए बीते शुक्रवार को इंटरनेशनल कांफ्रेंस के दौरान डाक्टरेट की मानद उपाधि देकर उन्हें सम्मानित किया है। बुधवार को घर पहुंचने पर उनसे मिलने जुलने वालों ने उनके घर पहुंचकर माल्यार्पण कर जोरदार स्वागत किया है इस मौके पर श्री शास्त्री ने कहा कि जिस प्रकार से उन्हें प्यार और दुलार मिल रहा है जिस प्रकार मेरा स्वागत किया उससे मेरा मन प्रसन्न हो गया।

कोतवाल के साथ सीओ ने किया पैदल गस्त

कोखराज कौशाम्बी। सिराथू क्षेत्राधिकारी और कोखराज कोतवाल ने इलाके में पैदल गस्त कर कानून व्यवस्था का जायजा लिया और लोगों को कानून के पालन करने का निर्देश दिया सीओ सिराथू अवधेश विश्वकर्मा व एसओ कोखराज विनोद कुमार मौर्य ने कोखराज थाना क्षेत्र के चाकवन चौराहे पर पैदल गस्त कर लोगों को भय मुक्त रहने का सन्देश दिया और अपराधियों उपद्रवियों व चोरों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही का सन्देश भी दिया।

तमंचा कारतूस के साथ अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान अभियुक्त पंकज पाठक पुत्र संकट मोचन निवासी ग्राम इच्छना थाना सराय अकिल को हकीमपुर से चक अहमदीपुर नहर पुलिया के पास से एक अदद तमंचा 315 बोर व एक अदद जिन्दा कारतूस 315 बोर के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

नाबालिग बालिका से दुष्कर्म के अभियुक्त को 20 वर्ष कारावास की हुई सजा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। पिपरी थाना क्षेत्र में 3 वर्षों पूर्व नाबालिग बालिका के साथ दुष्कर्म के मामले की सुनवाई करते हुए अदालत ने अभियुक्तों को 20 वर्ष के कठोर कारावास की सजा सुनाई है दुष्कर्म के अभियुक्त पर अदालत ने 10000 का अर्थदंड लगाया है अर्थदंड ना अदा करने पर 6 माह अतिरिक्त सजा भुगतनी पड़ेगी। थाना पिपरी अंतर्गत 21.12.2019 को वादी द्वारा अपने 08 वर्षीय पुत्री के साथ घर में घुसकर दुष्कर्म होने की सूचना दी गयी थी जिसके सम्बन्ध में थाना स्थानीय पर मुकदमा पॉक्सो एक्ट पंजीकृत कर अभियुक्त राजेन्द्र उर्फ छोटू पुत्र राम दुलारे निवासी छोटा लालपुर थाना पिपरी को न्यायालय एडीजे-09 द्वारा शासन की प्राथमिकता के आधार पर गम्भीर एवं जघन्य अपराधों में पुलिस ने पैरवी कर अभियुक्त को सजा दिलाने के

3 वर्षों पूर्व पिपरी थाना क्षेत्र में घर में घुसकर नाबालिग बालिका के साथ आरोपी ने किया था दुष्कर्म

क्रम में प्रभावी पैरवी कराते हुए मानिटरिंग सेल के माध्यम से 20 वर्ष सश्रम कारावास तथा 10 हजार रुपए के अर्थ दण्ड से दण्डित कराया अर्थ दण्ड न अदा करने पर दुष्कर्म के अभियुक्त को 06 माह की अतिरिक्त कारावास की सजा भुगतनी पड़ेगी।

पशुचारा लेकर खेत से लौट रही युवती के साथ छेड़खानी

कौशांबी। चरवा थाना क्षेत्र के बबुरा गांव की एक युवती 9 मई की शाम लगभग 7:00 बजे पशुओं के लिए खेत से चारा लेकर अपने घर वापस लौट रही थी रास्ते में गांव का सोनू उससे मिला और पीछे से पकड़ लिया जिससे उसके सिर पर रखा पशु चारा गिर पड़ा आरोप है कि सोनू ने युवती का हाथ पकड़ कर खींच लिया और खेत की ओर घसीटने लगा नाजुक अंगों में युवक छेड़खानी करने लगा आरोप है कि युवती की साड़ी भी उतारने का प्रयास युवक ने किया है युवक के चंगुल से छूटकर किसी तरह युवती घर आई और परिजनों को मामले की जानकारी दी सुबह युवती के परिजन युवती को साथ लेकर आरोपी के घर शिकायत करने गए जहां पर उनके साथ गाली गलौज और धमकियां दी गई हैं पीड़ित युवती ने मामले की सूचना थाना पुलिस को दिया है।

शराब के साथ गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अवैध शराब के निर्माण एवं तस्करी के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान में थाना कौशाम्बी पुलिस बल द्वारा अभियुक्त श्याम सुन्दर पुत्र अनी प्रसाद निवासी गढ़वा कोसम इनाम थाना कौशाम्बी को गिरफ्तार कर कब्जे से 12 लीटर अवैध शराब बरामद कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त का चालान न्यायालय कर दिया है।

जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना कार्मिकों को दिये आवश्यक दिशा-निर्देश

नवीन मण्डी समिति, ओसा में मतगणना कार्मिकों को दिये जा रहें प्रशिक्षण का निरीक्षण कर लिया जायजा

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिला निर्वाचन अधिकारी ने मतगणना कार्मिकों को आवश्यक दिशा-निर्देश देते हुए कहा कि जनपद में नगर निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 की मतदान प्रक्रिया को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराया गया। उन्होंने मतगणना कार्मिको से कहा कि प्रशिक्षण में तकनीकी पहलुओ की भली-भाँति जानकारी प्राप्त कर लिया जाय तथा मतगणना प्रक्रिया को निष्पक्ष, शान्तिपूर्ण एवं सफलतपूर्वक सम्पन्न करायी जाय। राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा दिये गये निदेर्शों का अनुपालन सुनिश्चित किया जाय उन्होंने सभी कार्मिकों से कहा कि ड्यूटी गम्भीरतापूर्वक किया जाय, किसी भी प्रकार की लापरवाही न

मतदान प्रशिक्षण में कर्मियों को संबोधित करते डीएम

बरती जाय। सभी मतगणना कार्मिक मतगणना के दिन समय से मतगणना स्थल पर पहुँचना सुनिश्चित करें। इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी/प्रभारी अधिकारी कार्मिक डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी, जिला विकास अधिकारी विजय कुमार, जिला बेसिक शिक्षाधिकारी प्रकाश सिंह सहित अन्य सम्बन्धित अधिकारीगण उपस्थित रहे।

15 मई से शुरू होगा विशेष टीबी रोगी चिन्हीकरण अभियान

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। टीबी उन्मूलन कार्यक्रम को प्रगति देने व देश को 2025 तक क्षय रोग मुक्त बनाने के लिए लगातार प्रयास किया जा रहे हैं। इसी क्रम में हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर 15 मई से 21 कार्य दिवसों तक विशेष अभियान चलाकर क्षय रोगी खोजे जाएंगे। इस संबंध में शासन की ओर से सभी संबंधित अधिकारियों को पत्र जारी कर आवश्यक दिशा निर्देश दिए गए हैं। यह जानकारी सीएमओ डॉ सुषेंद्र कुमार ने दी। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ एसके झा ने बताया कि हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर क्षय रोगियों के चिन्हीकरण, जांच, उपचार, निक्षय पोषण योजना के तहत राशि का सीधे बैंक में ट्रांसफर, काउंसलिंग एवं सामाजिक सहयोग

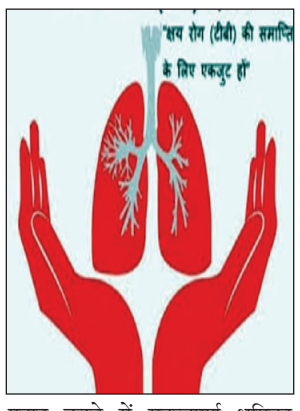

प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका अपेक्षित है। जनपद में कुल 151 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर हैं जिन पर 151 सीएचओ की नियुक्ति की गई हैं। इस अभियान में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारी (सीएचओ) की भूमिका अहम है।

अभियान में आशा कार्यकर्ता और एएनएम का होगा सहयोग

कौशाम्बी। जिला क्षय रोग अधिकारी ने बताया कि यह अभियान ग्रामीण क्षेत्रों में हाई रिस्क एरिया में चलाया जाएगा । ऐसे क्षेत्र जो हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर से दूर हों और जहां पिछले दो सालों में अधिक टीबी रोगी या कोविड रोगी चिन्हित हुए हों प्रत्येक हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर हर सप्ताह तीन-तीन शिविर लगाए जाएंगे । शिविर से पहले आशा कार्यकर्ता और एएनएम अपने क्षेत्र में घर-घर जाकर क्षय रोग के लक्षण वाले व्यक्तियों को चिन्हित कर उनका बलगम एकत्रित करेंगी। इसके बाद सीएचओ समस्त सैम्पल को नजदीकी जांच केंद्र पर भेजेंगे। जांच पॉजिटिव आने पर तत्काल नोटिफिकेशन कर तुरंत मरीजों का उपचार शुरू कर दिया जाएगा।

डीएम-एसपी ने किया जिला जेल का निरीक्षण

कौशाम्बी। जिलाधिकारी सुजीत कुमार व पुलिस अधीक्षक ब्रजेश कुमार श्रीवास्तव ने बुधवार को जिला कारागार का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने जेल के समस्त बैरकों को खंगाला वहीं प्रभारी निरीक्षकों के नेतृत्व में अलग अलग टीम बनाकर जेल में बनी सभी बैरकों की सघन तलाशी ली तलाशी में कोई भी प्रतिबंधित वस्तु नहीं पाई गई। बंदियों के एक-एक सामान की जांच की गई इस दौरान कोई आपत्तिजनक वस्तु नहीं मिली। दोनों अधिकारियों ने जेल अधीक्षक भूपेश सिंह को जेल की साफ-सफाई और सुरक्षा व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रखने का निर्देश दिया। जिलाधिकारी ने भोजनालय को देखा। बंदियों को दिए जाने वाले भोजन की गुणवत्ता के बारे में जेल अधीक्षक से जानकारी ली। इसके बाद परिसर में स्थित चिकित्सालय में पहुंचे जहां डाक्टरों से बंदियों के इलाज के बारे में जानकारी ली। जेल अधीक्षक को निर्देश दिया कि जिस बंदी की तबियत खराब हो, उसका तत्काल इलाज कराया जाए। जो गंभीर रूप से बीमार हो, उन्हें मंडलीय चिकित्सालय भेजा जाए। इस दौरान संबंधित अधिकारी कर्मचारी मौजूद रहे।

मतगणना कार्मिकों को दिया गया प्रशिक्षण

17 मतगणना कार्मिक पाये गये अनुपस्थित

मतदान कर्मियों को प्रशिक्षण देते मुख्य विकास अधिकारी

प्रशिक्षण में उपस्थित कर्मी

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मुख्य विकास अधिकारी/प्रभारी अधिकारी कार्मिक डॉ0 रवि किशोर त्रिवेदी के नेतृत्व में नगरीय निकाय सामान्य निर्वाचन-2023 को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराने के लिए नवीन मण्डी समिति, ओसा में मतगणना कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया गया। मतगणना कार्मिकों को 02 पालियों-प्रथम पाली पूर्वान्ह 10 बजे से मध्यान्ह 12 बजे तक तथा द्वितीय पाली-अपरान्ह 02 बजे से 04 बजे तक प्रशिक्षण दिया गया। प्रथम पाली में 587 मतगणना कार्मिकों एवं द्वितीय पाली में 583 मतगणना कार्मिकों को प्रशिक्षण दिया जाना था, जिसमें प्रथम पाली में 10 मतगणना कार्मिक यथा- सहायक अध्यापकगण अंशुमान सिंह, संजय कुमार सिंह राजू सिंह राहुल सिंह, प्रताप कुमार बरनवाल, मो0 इमरान, रवि श्रीवास्तव व जय प्रकाश एवं अवर अभियंता योगेन्द्र नारायण यादव तथा प्रधानाध्यापक कौशल कुमार अनुपस्थित पाये गये। इसी प्रकार द्वितीय पाली में 07 मतगणना कार्मिक यथा- सहायक अध्यापकगण मनोज कुमार, मो0 फिदागौस पीयूष पाण्डेय अरूणेश सिंह, कमल कुमार व कमलेश प्रसाद सिंह एवं सहायक विकास अधिकारी (समाज कल्याण) घनश्याम बेला अनुपस्थित पाये गये, जिस पर जिलाधिकारी सुजीत कुमार ने अनुपस्थित कार्मिकों के विरूद्ध प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज कराते हुए निलम्बन की कार्यवाही कराने के निर्देश दिये।

गेस्ट हाउस में लगी आग लाखों रुपए का सामान जलकर राख

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के भरवारी नगर पंचायत परिषद अंतर्गत तिलैया टिकुर चौराहे के पास फरीदपुर गांव निवासी हरि शंकर पांडेय ने गेस्ट हाउस खोल रखा है गेस्ट हाउस में रविवार की रात के समय अज्ञात व्यक्तियों ने आग लगा दी जिससे गेस्ट हाउस धू-धू कर जलने लगा मौके पर रहे लोगों ने सूचना गेस्ट हाउस मालिक को दी तब तक आग बेकाबू हो चुकी थी मौके पर पहुंच गए गेस्ट हाउस मालिक ने फायर ब्रिगेड को सूचना दी और फायर ब्रिगेड को कई बार फोन भी किया लेकिन फायर ब्रिगेड कर्मी मौके पर नहीं पहुंच सके जिससे गेस्ट हाउस में रखा सामान जलकर राख हो गया जिसकी कीमत लगभग पांच लाख रुपए बताई जाती हैं।

दावत खाने गए युवक की बाइक चोरी

कौशांबी। पूरा मुफ्ती थाना क्षेत्र के मीरापुर गांव निवासी मिलन सिंह पुत्र लालजी 9 मई की रात में बाइक से दावत खाने चरवा थाना क्षेत्र के बादशाहपुर गांव में दीपू पुत्र छत्रधारी के घर गए थे बाइक खड़ी करके वह खाना खाने चले गए कुछ देर बाद जब वापस लौटे तो देखा कि मौके पर बाइक नहीं थी काफी खोजने के बाद भी उनकी बाइक नहीं मिल सकी है उन्हें आशंका है कि मौके का फायदा उठाकर उनकी बाइक चोरी कर ली गई है मामले की सूचना उन्होंने चरवा पुलिस को दी है

दो वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरूद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में थाना कोखराज पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्त हिमांशू उर्फ संदीप पुत्र छितानी निवासी अहिरारा थाना कोखराज को कल्यानपुर मोड से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना सराय अकिल पुलिस बल द्वारा वांछित अभियुक्ता मंजू पत्नी मनीष सरोज निवासी बैगवा थाना कौशाम्बी को फकीराबाद तिराहा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

छत्तीसगढ़ मे कौशाम्बी के युवको ने लूटी सोने चांदी की दुकान

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। छत्तीसगढ़ राज्य के बस्तर जनपद के जगदलपुर कोतवाली क्षेत्र जा कर सोने चांदी की दुकान मे लूट करने का आरोप कौशाम्बी के युवको पर लगा है जिस घटना का अभियोग कोतवाली जगदलपु मुकदमा संख्या 143/23 मे दर्ज है छत्तीसगढ़ की पुलिस ने कौशांबी पुलिस के सहयोग से आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है और उनकी निशानदेही पर सोने चांदी के जेवर खरीदने वाले दुकानदारों को गिरफ्तार कर जेवरात बरामद करने के बाद चोरी का माल खरीदने वालों को पुलिस ने छोड़ दिया है। सोने चांदी की दुकान के लूटपाट का आरोप कौशाम्बी जनपद के सराय अकील थाना क्षेत्र के बसुहार गाँव निवासी एस दत्त मिश्रा उर्फ रामभोला पुत्र

चोरी के सोने चांदी के जेवरात खरीदने वाले को छोड़ देने पर पुलिस की कार्यवाही पर खड़े हो रहे हैं सवाल!

श्याम विहारी तथा मऊ थाना जनपद चित्रकूट निवासी रामनारायण उर्फ रज्जू पुत्र कमलेश के ऊपर मुकदमा दर्ज करने के बाद उनकी तलाश में छत्तीसगढ़ पुलिस कौशांबी पहुंची बीती रात छत्तीसगढ़ पुलिस ने स्थानीय पुलिस थाना के सहयोग से दो युवको को गिरफ्तार कर हिरासत मे ले लिया है जिनसे पुलिस कड़ाई से पूछताछ कर रही है पकड़े गए दोनों युवकों से जब छत्तीसगढ़ पुलिस ने कड़ाई से पूछताछ की तो युवकों ने बताया कि सोने चांदी की दुकान से लूटे गये सोने के जेवरात सराय अकिल कस्बे के तीन युवको को बेचे गये थे जिस पर सराय अकिल पुलिस ने सोने चांदी के जेवर खरीदने वाले युवको को उठा कर थाने लाई जिसके बाद सोने के जेवरात बरामद कर पुलिस ने आरोपियों को छोड़ दिया है। सोना चांदी के जेवरात खरीदने वालो में सराय अकिल कस्बा निवासी मुकेश सोनी पुत्र स्व शिवबाबू सोनी संतोष केसरवानी,पुत्र मन्नू रामेश दाल वाले का लड़का शामिल बताए जाते हैं आखिर चोरी के सोने चांदी के जेवरात खरीदने वाले को सराय अकिल पुलिस के साथ छत्तीसगढ़ पुलिस ने क्यों छोड़ दिया है यह पुलिस की कार्यवाही पर सवाल खड़े हो रहे हैं।

जमीनी रंजिश के चलते दबंगों ने युवक पर किया प्राण घातक हमला

कौशांबी। पिपरी थाना क्षेत्र के गेरियो खालसा गांव निवासी शिव प्रकाश पुत्र छोटेलाल के गांव के ही हरिलाल पुत्र मोतीलाल का विवाद चल रहा था भुक्तभोगी सोमवार के दिन शाम के समय लगभग 8:00 बजे अपने घर से निकलकर गांव की ओर जा रहा था तभी गांव के दबंग हरिलाल केशव लाल गोलू अपने हाथ में फरसा और लाठी लिए हुए गाड़ी को बंद किए हुए गाड़ी में बैठे थे जैसे ही भुक्तभोगी उनके पास पहुंचा तो हरी लाल ने ललकारा कि साला जाने ना पाए साले को आज जान से मार दो मारने के नियत से केशव ने भुक्तभोगी के सिर पर फंरसे से वार कर दिया और गोलू ने लाठी से भुक्तभोगी की पिटाई करने लगा शोरगुल सुनकर भुक्तभोगी की पत्नी बीच-बचाव करने के लिए मौके पर पहुंची तो दबंगों ने भुक्तभोगी की पत्नी की भी पिटाई कर दी हो हल्ला सुनकर आसपास के लोग दौड़कर मौके पर आए तो लोगों को देखकर दबंग जान से मारने की धमकी देते हुए मौके से फरार हो गए भुक्तभोगी ने पिपरी थाना में आरोपियों के विरुद्ध लिखित तहरीर दी लिखित तहरीर पाकर पुलिस ने दबंगों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर छानबीन में जुट गई है।

चोरों ने लाखों रुपए का समान किया चोरी

कौशांबी। कोखराज थाना क्षेत्र के कोखराज टावर के पास श्रीमती पत्नी अशोक कुमार घर पर सोमवार के दिन खा पीकर सो गए थे तभी अज्ञात चोर छत के रास्ते से घर के अंदर घुस गए और लाखों रुपए का रखा सामान चुरा ले गए भुक्तभोगी की नींद खुली तो अज्ञात चोर भुक्तभोगी को धक्का मार कर फरार हो गए अज्ञात चोरों के धक्का लगने से भुक्तभोगी गिर गई और भुक्तभोगी को चोटे आई भुक्तभोगी ने कोखराज पुलिस को अज्ञात चोरों के विरुद्ध लिखित तहरीर दी तहरीर पाकर कोखराज पुलिस ने अज्ञात चोरों के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कर छानबीन में जुट गई।

गांजा के साथ दो अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध एवं अपराधियों के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान के क्रम में थाना सैनी पुलिस बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान अभियुक्त अजय कुमार चौहान पुत्र सन्तोष कुमार चौहान निवासी अलीपुर भागर थाना सुल्तानपुर घोस जपनद फतेहपुर को टाण्डा मोड कस्बा अझुवा के पास से 1150 ग्राम नाजायज गांजा के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय कर पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है। इसी प्रकार थाना संदीपनघाट पुलिस बल द्वारा वाहन चेकिंग के दौरान अभियुक्त छोटू सिंह पुत्र लाल चन्द्र यादव निवासी फरीदपुर चकताजपुर थाना संदीपनघाट को तेरा मील तिराहा के पास से 500 ग्राम नाजायज गाजा के साथ गिरफ्तार कर गिरफ्तारी व बरामदगी के आधार पर थाना स्थानीय पर मुकदमा पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही के पश्चात अभियुक्त को न्यायालय भेज दिया है।

निरोधात्मक कार्यवाही में 06 अभियुक्त गिरफ्तार

कौशाम्बी। जनपद में अपराध के विरुद्ध चलाये जा रहे अभियान के क्रम में साधारण मारपीट व शांति भंग करने के आरोप में थाना महेवाघाट से दो थाना सदीपनघाट से चार कुल छः अभियुक्तों को गिरफ्तार कर चालान न्यायालय किया गया।

जन संपादकीय

कर्नाटक: डबल इंजनियों की सांप्रदायिक पैंतरेबाजी

राजेंद्र शर्मा

वास्तव में, 2014 के आम चुनाव में "अच्छे दिन" के अपने सारे वादों के बावजूद, नरेंद्र मोदी ने सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के मुद्दों से भी खास परहेज नहीं किया था। इसीलिए, जहां उनके प्रचार अभियान में कथित "पिंक रिवोल्यूशन" पर (यानी मांस के कारोबार के नाम से मुसलमानों पर) हमले के बहाने, आम तौर पर मुस्लिमविरोधी भावनाओं को सहलाया गया था, तो 2013 के मुजफ्फरनगर के दंगों के संघी-भाजपायी आरोपियों को उनकी सेवाओं के लिए, उनके खिलाफ मामले दर्ज होने के बावजूद, चुनाव में तथा चुनाव के बाद भी, बखूबी पुरस्कृत किया गया था। कर्नाटक के चुनाव में प्रधानमंत्री मोदी के आखिरकार, खुल्लमखुल्ला सांप्रदायिक-धार्मिक नारों का सहारा लेने पर उतर आने पर, जैसा कि अनुमान लगाया जा सकता था, चुनाव आयोग के कान पर जूं तक नहीं रेंगी है। लेकिन, यह मोदी निजाम में भारतीय जनतंत्र से लोगों की अपेक्षाओं को जिस रसातल में पहुंचा दिया है उसी का बयान करता है कि कर्नाटक में भाजपा की मुख्य-प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस समेत, दूसरी किसी भी उल्लेखनीय राजनीतिक ताकत ने, चुनाव आयोग से इसकी शिकायत तक करना जरूरी नहीं समझा है कि मोदी का कर्नाटक में अपने चुनावी प्रचार में बजरंग बली के भक्तों और विरोधियों के आधार पर, राजनीतिक-चुनावी विभाजन की दुहाई देना और अपनी सभाओं में बार-बार मतदाताओं से "बजरंग बली की जय बोलकर" वोट डालने की अपीलें करना, सीधे-सीधे धर्म के नाम पर वोट मांगना है, जो भारतीय चुनाव कानून के अंतर्गत स्पष्टद्द रूप से वर्जित है। पर जब सुनवाई की ही उम्मीद न हो, तो फरियाद करने की बेसूद मेहनत भी कौन करेगा? इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि इस प्रसंग में शिव सेना के मुखिया, उद्धव ठाकरे पर ही यह याद दिलाने का जिम्मा आया कि एक समय था जब "हिंदू" होने की दुहाई के सहारे वोट मांगने के कारण, उनके पिता बाल ठाकरे से चुनाव आयोग ने दंडस्वरूप "मताधिकार" ही छीन लिया था! लगता है कि मोदी राज में नरेंद्र मोदी पर, सामान्य लोगों तथा खासतौर पर विपक्षी पार्टियों पर लागू होने वाले नियम-कायदे लागू ही नहीं होते हैं! लेकिन, यह कर्नाटक में अपने धुंआधार चुनाव प्रचार के आखिरी दिनों में, चुनावी बाजी हाथ से निकलती देखकर मोदी के "बजरंग बली" के जैकारों का सहारा लेने का या अपने राजनीतिक-चुनावी विरोधियों को 'बजरंग बली विरोधी' बताने के जरिए, धार्मिक दुहाई को राजनीतिक-चुनावी हथियार बनाने भर का भी मामला नहीं है। इसे चुनावी तरकश का तीर बनाए जाने का संदर्भ भी महत्वपूर्ण है। संदर्भ है कांग्रेस के कर्नाटक के चुनाव घोषणापत्र में इसका वादा किए जाने का कि सांप्रदायिक नफरत फैलाने तथा हिंसा करने वाले संगठनों पर रोक लगायी जाएगी, वह चाहे पीएफआइ हो या बजरंग दल। लेकिन, भारत का प्रधानमंत्री, इस विचार को ही इस भोंडी दलील से हिंदू-विरोधी साबित करने की कोशिश कर रहा था कि बजरंग दल के लोग, बजरंग बली का जैकारा लगाने वाले लोग हैं; उनके खिलाफ नफरत फैलाने तथा हिंसा करने के लिए, प्रतिबंध लगाने की या कोई अन्य दंडात्मक कार्रवाई की ही कैसे जा सकती है? याद रहे कि प्रधानमंत्री की दलील यह नहीं थी कि बजरंग दल के लोग ऐसी गतिविधियों में शामिल नहीं हैं या शामिल नहीं हो सकते हैं। उनकी दलील यह थी कि बजरंग बली की जय बोलने वाले, उसके बाद कुछ भी करें, उनके खिलाफ उस तरह कार्रवाई नहीं की जा सकती है, जैसे हिंदू-इतर धर्मावलंबियों के मामले में की जा सकती है। यहां से भारत को हिंदू राष्ट्रद्व घोषित करने का दावा, जिसमें हिंदुओं को विशेषाधिकार तथा गैर-हिंदुओं को कमतर अधिकार होंगे, एक कदम दूर ही रह जाता है! बहरहाल, नरेंद्र मोदी चुनाव के लिए सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने के लिए बजरंग बली को हथियार बनाने पर ही नहीं रुक गए। इसके तरा-ऊपर उन्होंने अपने चुनाव प्रचार में "केरला स्टोरी" नाम की एक उस घोर सांप्रदायिक प्रचार फिल्म को भी हथियार बनाया, जिसका कुल मिलाकर एक और एक ही संदेश है–'मुसलमानों से सावधान!' यह फिल्म किस कदर झूठे प्रचार का सहारा लेती है, इसका अंदाजा सिर्फ इस तथ्य से लगाया जा सकता है कि फिल्म के रिलीज होने से पहले ही, उसकी प्रचार सामग्री को देखते हुए भड़के व्यापक विरोध के सामने, उसके प्रदर्शन पर रोक लगाने की याचिकाओं को तो केरल हाई कोर्ट ने अस्वीकार कर दिया। फिर भी, अदालत ने यह सुनिश्चित किया कि फिल्म के टीजर/ प्रोमो में किए गए इस दावे को वापस ले लिया जाए कि यह केरल की किन्हीं 32,000 युवतियों की सच्ची कहानी है क्योंकि उसके इस दावे का कोई आधार ही नहीं है। इसके बजाए, फिल्म के निमार्ताओं ने फिल्म के शुरू में यह डिस्क्लेमर जोड़ने का वचन दिया कि यह काल्पनिक घटनाओं पर आधारित है। लेकिन, इस सारे सच को झुठलाते हुए, देश का प्रधानमंत्री इस फिल्म को न सिर्फ "आतंकवाद का सच" घोषित करने में जुटा था, बल्कि इसके "सच" होने पर सवाल उठाने वाले, अपने तमाम राजनीतिक विरोधियों को 'आतंकवाद का हिमायती' करार दे रहा था।

मोदी की भाजपा के ये विरोधी, प्रधानमंत्री के अनुसार 'आतंकवाद की हिमायत' क्यों कर रहे थे? तुष्टद्दीकरण के लिए! यहां आकर उनकी मंशा पूरी तरह से साफ हो जाती है। मंशा एक ही है–मुसलमान और आतंकवाद को समानार्थी बनाना! कहने की जरूरत नहीं है कि कर्नाटक में अपने चुनाव प्रचार के बीच नरेंद्र मोदी को पहले किसी संभावित कार्रवाई से बजरंग दल को बचाने की और आगे चलकर इस फिल्म प्रचार करने की याद इसीलिए आयी कि ये दोनों ही उनके सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के एजेंडे को आगे बढ़ाने में मददगार तो हैं ही, इसके अलावा मुस्लिम विरोधी नफरत को किसी तमगे की तरह उनकी छाती पर टांक कर, तत्काल इस चुनाव में हिंदुत्ववादी सांप्रदायिक ध्रुवीकरण करने का भी साधन हैं।

केन्द्र जम्मू-कश्मीर में लिथियम खनन की नीलामी के लिए बेकरार

नन्तू बनर्जी

जम्मू-कश्मीर एक अशांत राज्य है और सीमा पार आतंकवादी हमलों का एक पसंदीदा लक्ष्य है। सरकार निजी उद्यमियों को लिथियम और अन्य अलौह धातुओं का खनन करने के लिए किस तरह की सुरक्षा प्रदान करेगी? कई देशों ने लिथियम खनन का कार्य राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों को इस आधार पर सौंपा है कि यह एक रणनीतिगत खनिज है। यह समझना मुश्किल है कि सरकार जम्मू-कश्मीर के रियासी जिले में हाल ही में खोजे गयेलिथियम के बड़े भंडार को चालू वर्ष के खतम होने से पहले ही निजी कंपनियों को नीलाम करने की इतनी हड़बड़ी में क्यों है। केंद्रीय खान मंत्रालय के सचिव विवेक भारद्वाज ने कहा है कि मंत्रालय ने जम्मू-कश्मीर के प्रशासन को लिखा है कि वह निजी कंपनियों को लिथियम नीलामी के लेन-देन के लिए जल्द ही सलाहकार नियुक्त करे। भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) द्वारा रियासी जिले में दुर्लभ अलौह खनिज भंडार का प्रारंभिक अनुमान 5.9 मिलियन टन है। रियासी में लिथियम का खान एक ही स्थान पर दुनिया का सबसे बड़ा भंडार है। लिथियम इलेक्ट्रिक वाहनों (ईवी) की बैटरी में प्रमुख घटकों में से एक है। लगभग दो साल पहले, भारत के परमाणु खनिज निदेशालय (एएमडी) द्वारा प्रारंभिक सर्वेक्षण में कर्नाटक के मांड्या जिले के मरलागल्ला-अल्लापटना क्षेत्र के पेगमाटाइट्स में 1,600 टन लिथियम संसाधनों की उपस्थिति पाई गई थी। बाद में, खदान भंडार के अनुमान को संशोधित कर 14,100 टन कर दिया गया।

आदर्श रूप से, सरकार को लिथियम खनन की कवायद का नेतृत्व करने के लिए एक सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम की स्थापना करनी चाहिए और उद्यम को संचालित करने के लिए एक संयुक्त उद्यम भागीदार के रूप में एक प्रसिद्ध लिथियम खनन और प्रसंस्करण फर्म की तलाश करनी चाहिए। दिसंबर की नीलामी में आमंत्रित किए जा सकने वाले 'निजी कंपनियों' की पृष्ठभूमि के

बारे में कुछ भी खुलासा नहीं किया गया है। क्या उनमें विदेशी 'निजी कंपनियां' शामिल हैं? जम्मू-कश्मीर एक अशांत राज्य है और सीमा पार आतंकवादी हमलों का एक पसंदीदा लक्ष्य है। सरकार निजी उद्यमियों को लिथियम और अन्य अलौह धातुओं का खनन करने के लिए किस तरह की सुरक्षा प्रदान करेगी? कई देशों ने लिथियम खनन का कार्य राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों को इस आधार पर सौंपा है कि यह एक रणनीतिगत खनिज है। चूंकि भारत के पास लिथियम खनन में कोई विशेषज्ञता नहीं है, इसलिए दुनिया के कुछ शीर्ष लिथियम खनिकों और प्रोसेसर को राज्य क्षेत्र के भागीदारों के रूप में शामिल करना सही हो सकता है। अब तक, भारत के संभावित लिथियम भंडार उत्साहजनक प्रतीत होते हैं। दुनिया भर में लिथियम के कुल भंडार का अनुमान केवल 26 मिलियन टन है। नए भंडार की खोज के लिए सर्वेक्षण जारी है। अमेरिकी भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण के आंकड़ों के अनुसार, बोलीविया में दुनिया में सबसे अधिक पहचाने जाने वाले लिथियम संसाधन हैं। पर्याप्त भंडार वाले अन्य देशों में अर्जेंटीना, अमेरिका, चिली, ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत और जर्मनी शामिल हैं। लिथियम वर्तमान में हार्डरॉक या नमकीन खानों से उत्पादित होता है।

हार्डरॉक खानों से उत्पादन के साथ ऑस्ट्रेलिया दुनिया का सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है। अर्जेंटीना, चिली और चीन मुख्य रूप से इसका उत्पादन नमक की झीलों से करते हैं। मार्च में ऑस्ट्रेलियाई उद्योग, विज्ञान और संसाधन विभाग की संसाधन और ऊर्जा तिमाही रिपोर्ट के अनुसार, वैश्विक उत्पादन 2022 में 737,000 टन लिथियम काबोर्नेट समतुल्य (एलसीई) था और 2023 में 964,000 टन और 2024 में 1,167,000 टन तक पहुंचने का अनुमान है। इलेक्ट्रिक वाहन निर्माण उद्योग के विकास को आकार देने में इस खनिज के महत्व को देखते हुए, चिली के राष्ट्रपति गेब्रियल बोरिक ने कहा कि वह देश के लिथियम उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना चाहते हैं और धातु का उत्पादन करने के लिए राज्य के स्वामित्व वाली कंपनी बनाना चाहते हैं। चिली के राष्ट्रपति ने कहा कि भविष्य के लिथियम अनुबंध केवल राज्य नियंत्रण के साथ सार्वजनिक-निजी भागीदारी के रूप में जारी किये जाएंगे। चिली दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा लिथियम उत्पादक है। वैश्विक लिथियम उत्पादन में लगे प्रमुख कॉर्पोरेट उद्यमों में पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया की टैलिसन लिथियम शामिल है, जो एक संयुक्त उद्यम फर्म है, जिसकी रासायनिक-ग्रेड और तकनीकी-ग्रेड लिथियम सांद्रता की उत्पादन क्षमता 1.34 मिलियन टन प्रति वर्ष है। पिलबारामिनरल्स, पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में भी, प्रति वर्ष 360,000 से 380,000 टन स्पोड्यूमिनकंसेन्ट्रेट का उत्पादन करता है, जिसमें दो विस्तार चल रहे हैं जिससे उत्पादन क्षमता प्रति वर्ष एक मिलियन टन तक बढ़ जायेगी। अन्य कम्पनियों में शामिल हैः उन्नत धातुकर्म समूह के स्वामित्व वाली ब्राजील की मिनसगेरैस, जो एक वर्ष में 90,000 टन स्पोड्यूमिन का उत्पादन करती है, जिसकी 2023 की दूसरी तिमाही के अंत तक 130,000 टन तक विस्तार करने की योजना है। सोसाइडेडचेमिका इ मिनेराडी चिली के स्वामित्व वाले सलारडीअटाकामा 180,000 टन लिथियम काबोर्नेट प्रति वर्ष उत्पादित करती है। कंपनी 2024 तक अपनी क्षमता को 210,000 तक बढ़ाने की योजना बना रही है। गैनफेंग लिथियम द्वारा खरीदा गया अर्जेंटीना का पॉजुएलोस-पास्टोसग्रांडेस 2024 से 30,000 टन लिथियम काबोर्नेट का उत्पादन करेगा, और इसे संभावित रूप से 50,000 टन तक बढ़ाया जा सकता है। लिथियम खनन और केंद्रित उत्पादन में भारत के ज्ञान और विशेषज्ञता की कमी को ध्यान में रखते हुए, इस क्षेत्र में एक प्रसिद्ध वैश्विक उद्यमी को तुरंत खोजना चाहिए ताकि उसके साथ संयुक्त उपक्रम खोला जा सके जो निर्यात की तुलना में घरेलू खपत पर केन्द्रित रहे। प्रारंभ में, देश को एक ही उद्यम शुरू करना चाहिए। वर्तमान में निजी केपनियों को आमंत्रित करते हुए लिथियम खनन नीलामी आयोजित करने का सरकार का निर्णय बहुत व्यावहारिक नहीं लगता है। सरकार राजनीतिक रूप से परेशान जम्मू और कश्मीर में लिथियम खनन में जोखिम कारक को नजरअंदाज नहीं कर सकती है। कश्मीर चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री के अनुसार, केन्द्र द्वारा जम्मू और कश्मीर के राज्य का दर्जा रद्द करने के बाद से कश्मीर में आर्थिक नुकसान एक अरब डॉलर से अधिक हो गया है, तथा वह सरकार पर इस नुकसान के लिए मुकदमा करने की सोच रही है। उग्रवादी समूहों ने कथित तौर पर राज्य में खनिज दोहन के खिलाफ चेतावनी दी है। राज्य को अपने अधीन लेने वाली केंद्र सरकार ने प्रशासनिक नियंत्रण को कड़ा करते हुए कहा है कि वह इस क्षेत्र में उग्रवाद पर लगाम लगायेगी और इसके विकास को बढ़ावा देगी। आतंकवाद निजी कंपनियों द्वारा प्रस्तावित लिथियम खनन उपक्रमों के लिए एक बड़ा खतरा है। एक्सेसनाउ की हालिया रिपोर्ट के अनुसार, सरकार ने राजनीतिक अस्थिरता और हिंसा के कारण कश्मीर में कम से कम 49 बार इंटरनेट का उपयोग बाधित किया, जिसमें जनवरी और फरवरी 2022 में तीन-दिवसीय कर्फ्यू-शैली के शटडाउन के लिए 16 बैक-टू-बैक ऑर्डर शामिल हैं। उग्रवादियों ने भारत सरकार के शासन के खिलाफ अपनी गतिविधियां कायम रखी है। कश्मीर तीन दशक से अधिक समय से आतंकवाद की चपेट में है इसलिए कहीं ऐसा न हो कि यह नीलामी 2024 के चुनाव के पूर्व का राजनीतिक हथकंडा न बन जाये। यदि ऐसा हुआ तो यह वाकई दुर्भाग्यपूर्ण होगा। देश को उचित परियोजना संरचना के साथ यथाशीघ्र अपने लिथियम भंडार का दोहन करने का प्रयास करना चाहिए। पिछले साल ही, वेदांता-फॉक्सकॉन, जिसके पास माइक्रोचिप उत्पादन का कोई अनुभव नहीं था, ने गुजरात राज्य विधानसभा चुनाव से पहले अहमदाबाद के पास $20 बिलियन सेमी कंडक्टर निर्माण परियोजना की स्थापना की घोषणा की। न तो वेदांता और न ही फॉक्सकॉन के पास सेमीकंडक्टर्स और फैब्रिकेशन बनाने की कोई विशेषज्ञता है। प्रोजेक्ट को सफल बनाने के लिए उन्हें एक मजबूत टेक्नोलॉजी पार्टनर की जरूरत होगी। अर्धचालक उद्यम की प्रगति के बारे में बहुत कम जानकारी है क्योंकि वेदांता-फॉक्सकॉन ने गुजरात चुनाव से पहले परियोजना स्थान को महाराष्ट्र से गुजरात में स्थानांतरित कर दिया था।

शराब के मामले का छुपा रुस्तम कौन

अरविन्द मोहन

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भाजपा इस उपलब्धि को राजनैतिक रूप से भुनाने का प्रयास करेगी या नहीं, क्योंकि अभी हाल तक प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में शराब पीना एक सामाजिक बुराई के रूप में देखा जाता था। होली दिवाली पर भी बहुत कम ही लोग शराब पीते थे। और यह फौजियों तथा कुछ खास मुश्किल काम करने वालों के पीने भर की चीज मानी जाती थी। यह हिसाब लगाना मुश्किल है कि लोगों द्वारा दी जाने वाली शराब ज्यादा ज्वलनशील है या हमारी राजनीति में इसे लेकर उठाने वाले बवाल। पर यह कहने में कोई मुश्किल नहीं है कि अभी दस साल पहले तक इन दोनों मोर्चों पर शराब की 'प्रतिष्ठा' इतनी न थी। भांग, गाँजा, तंबाकू-हुक्का वगैरह का चलन तो था लेकिन ज्यादा न था और उन्हें लेकर बहुत हंगामा नहीं था। साधुओं को छोड़ दें तो आम लोगों में से जो कोई इनका सेवन करता था वह कुछ अपराध भाव से ही करता था। और आजादी की लड़ाई के साथ गांधी ने शराब और नशामुक्ति की मुहिम छेड़कर इस सवाल पर इसका सेवन करने वालों को और भी ज्यादा रक्षात्मक मुद्रा अपनाने को मजबूर कर दिया। और उसी प्रभाव में गुजरात और महाराष्ट्र के वर्धा जिले में शुरू से, और अन्य राज्यों में भी शराबबंदी होती रही है। 1977 की जनता सरकार ने तो इसे देश के स्तर पर लागू करने का असफल प्रयोग किया। शराब के नशे से पीड़ित परिवारों की औरतों के दबाव से अनेक राज्यों में शराबबंदी लागू हुई और फिर राजस्व के दबाव तथा नकली शराब के कहर के चलते शराबबंदी उठती भी रही है। बिहार में जरूर नीतीश कुमार ने बिना किसी आंदोलन के दबाव से अपनी सोच के अनुसार शराबबंदी की है और अब तक

अड़े हुए हैं जबकि राजस्व और प्रशासन दोनों पर इसका दबाव बहुत साफ दिखता है। अब राजस्व का दबाव राज्यों पर इतना क्यों बढ़ा है और पहले क्यों कम था, यह एक बड़ा सवाल है। इससे भी ज्यादा बड़ा सवाल यह है कि राज्य क्यों सिर्फ नशे के धंधे को ही राजस्व बढ़ाने का जरिया बनाते हैं। केंद्र के विभिन्न वेतन बोर्डों द्वारा कर्मचारियों के वेतन, भत्ते और पेंशन ने राज्यों पर काफी दबाव बनाया है, इस बुनियादी बात को नहीं भूलना चाहिए। और उससे भी ज्यादा साफ दिखने वाला नुकसान बार-बार नकली शराब पीने से होने वाले नुकसान का है। और इस मामले में अपनी जिद पर आड़े नीतीश कुमार बार बार विपक्ष, खासकर भाजपा के निशाने पर आते है। शुरू में उन्होंने नकली शराब पीने वालों को मुआवजा न देने के मामले में भी मजबूती दिखाई थी लेकिन अब नरम पड़े हैं। और जब नीतीश पर इस सवाल के चलते विपक्षी हमला होता है तो भाजपा विरोधी लोग गुजरात और हरियाणा जैसे भाजपा शासित राज्यों की ऐसी मानवीय त्रासदियों का मसला उठाते हैं। बिहार के बारे में यह भी जाहिर हुआ है कि राजस्व नुकसान के साथ प्रशासन, खासकर पुलिस प्रशासन बुरी तरह इसी मसले पर उलझा है। अदालतों में शराब से जुड़े मामले सबकी नाक में दम किए हुए हैं। भाजपा की तरफ से नीतीश सरकार पर जितना हमला होता है उससे ज्यादा अभी दिल्ली की आप सरकार पर हो रहा है। बिहार के शासन में भाजपा भी भागीदार रही है पर दिल्ली में आप ने उसे बार-बार पीटा है। सो उसके इस हमले में राजनीति का हिस्सा काफी बड़ा है। लेकिन भ्रष्टाचार मिटाने और सब कुछ प्रत्यक्ष दिखने वाले अंदाज में करने के वायदे के साथ आई आप की सरकार के कुकर्म भी कम नहीं हैं जिसने दिल्ली को शराब से पाट देने की कोई कोशिश नहीं छोड़ी। इसमें भ्रष्टाचार हुआ या नहीं यह कहना अभी जल्दबाजी होगी लेकिन जितने पेंच भाजपा की तरफ लगाए जा रहे हैं उतने ही पेंच आप के भी दिखते हैं। और परदेदारी तो जबरदस्त है। दिल्ली में शराब की बिक्री और राजस्व के आंकड़े भी अस्वाभाविक 'प्रगति' दिखाते हैं जो नई राजनीति का दावा करने वाली पार्टी के लिए शर्म का विषय होना चाहिए। और इस चक्कर में दिल्ली के उपमुख्यमंत्री जब जेल जाने लगे तो आप की सारी कोशिश उन्हें आबकारी विभाग का मंत्री बताने की जगह शिक्षा विभाग का मंत्री बताने की हुई जिस मामले में राज्य सरकार का रिकार्ड थोड़ा बेहतर है।

जो बात सबसे छुपी हुई है वह यह है कि देश में शराब की बिक्री और राजस्व की बढ़ोतरी के मामले में सबसे 'बढ़िया' रिकार्ड उत्तर प्रदेश की योगी सरकार का है। और शराब के व्यापारी योगी सरकार की नीतियों को सबसे उपयोगी, सरल और प्रभावी मानते हैं। उनकी यह इच्छा भी है कि अन्य राज्य सरकारें योगी सरकार की नीतियों का अनुसरण करें। और बात सिर्फ कहने सुनने की नहीं है। योगी सरकार को चार साल पहले शराब से मात्र 14000 करोड़ का राजस्व मिला करता था जो अभी 400000 करोड़ रुपए को पार कर गया है। देश के सबसे बड़े प्रदेश में अभी हाल तक शराब की पैठ काफी कम मानी जाती थी। राज्य में देश की कुल खपत का मात्र पांच फीसदी हिस्सा ही शराब खपत होती थी। अब चार साल में यह दस फीसदी पहुंच गई है अर्थात चार साल में 200 फीसदी की वृद्धि हुई है। सबसे ज्यादा वृद्ध बियर की खपत में हुई है जो 350 फीसदी से भी ज्यादा है। अगर शराब कंपनियों के हिसाब से देखें तो कई की बिक्री में चार सौ फीसदी तक की बढ़ोतरी हुई है। कई ब्रांडों की बिक्री में उत्तर प्रदेश देश का नंबर एक प्रांत बन चुका है। अब यह कहना मुश्किल है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और भाजपा इस उपलब्धि को राजनैतिक रूप से भुनाने का प्रयास करेगी या नहीं, क्योंकि अभी हाल तक प्रदेश के अधिकांश हिस्सों में शराब पीना एक सामाजिक बुराई के रूप में देखा जाता था। होली दिवाली पर भी बहुत कम ही लोग शराब पीते थे। और यह फौजियों तथा कुछ खास मुश्किल काम करने वालों के पीने भर की चीज मानी जाती थी। भांग, तंबाकू और गांजा को वैसी बुराई नहीं माना जाता था। पर अब सरकार ने प्रदेश में शराब की बिक्री सबसे लिए आसान कर दी है। जिस कंपनी को इच्छा हों वह आए, एक मोटी रकम भरे और थोक बिक्री शुरू कर दे। इसके साथ ही सरकार डंडा लेकर रखवाली करती है कि कोई दूसरा बिना पैसे दिए माल न बेच पाए। नकली शराब की बिक्री पर सख्ती है और ई-गवर्नेंस की मदद से चुस्ती बरती जा रही है। इन सबमें हर्ज नहीं है, बशर्ते ऐसी चुस्ती शासन के अन्य मामलों में भी दिखे और ऐसा ही रिजल्ट दूसरे मामलों में भी दिखे। सिर्फ शराब की बिक्री में दिन दूनी रात चौगुनी की बढ़त दिखे तो शर्म का विषय होना चाहिए।

बजरंग दल पर प्रतिबंध के कारण

बजरंग दल का दावा है कि वर्तमान में उसके 22 लाख कार्यकर्ता और 25 लाख से अधिक सदस्य हैं। देशभर में उसके 2500 अखाड़े हैं। गौरतलब है कि इन अखाड़ों के जरिए आरएसएस दलित और पिछड़ों का ब्रेनवाश करता है। अखाड़े आमतौर पर दलित पिछड़ा बहुल क्षेत्रों में होते हैं। अखाड़े में कुश्ती के बाद सामूहिक खिचड़ी भोज होता है। इसमें संघ के 'भैयाजी' कहानियां सुनाते हैं। इन कहानियों में भेड़ बकरी चराने वाला दलित या पिछड़े समाज का नायक होता है। कर्नाटक चुनाव में बेरोजगारी, महंगाई और भ्रष्टाचार सबसे मजबूत मुद्दे बनकर उभरे हैं। तमाम चुनावी सर्वे कर्नाटक में भाजपा विरोधी लहर और कांग्रेस को बढ़त दिखा रहे हैं। लेकिन कांग्रेस के घोषणा पत्र में बजरंग दल पर पाबंदी के वादे को भाजपा ने साम्प्रदायिक रंग दे दिया है। खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बजरंग दल को बजरंगबली के साथ जोड़ते हुए चुनाव प्रचार को लगभग साम्प्रदायिक उन्माद में तब्दील कर दिया है! बुनियादी मुद्दों और भाजपा सरकार की असफलताओं से ध्यान भटकाने के लिए नरेंद्र मोदी का यह चिर परिचित नुस्खा है। हालांकि यह समझना जरूरी है कि कांग्रेस ने बजरंग दल पर प्रतिबंध लगाने का वादा क्यों किया है? क्या बजरंग दल कोई आतंकी संगठन है? क्या इसकी गतिविधियां समाज और राष्ट्र विरोधी है? बजरंग दल एक स्वघोषित हिंदूवादी संगठन है। यह देश में हिंदुओं का 'सुधार' करके गैर हिंदुओं के खिलाफ नफरत और हिंसा का प्रयोग करता रहा है। आरएसएस अपनी स्थापना (1925) के समय से ही वर्ण और जाति पर आधारित हिंदू राष्ट्र बनाने का सपना देखता रहा है। भारत के संविधान और लोकतंत्र में आरएसएस का भरोसा कभी नहीं रहा। उसकी अपेक्षा थी कि मुस्लिम लीग के पाकिस्तान की तरह उसे भी अंग्रेज सरकार द्वारा हिंदू राष्ट्र प्राप्त हो जाएगा। लेकिन आजादी के बाद विशेषकर जवाहरलाल नेहरू और बाबा साहब भीमराव अंबेडकर के विचारों और प्रयत्नों से देश में लोकतंत्र बहाल हुआ और संविधान के प्रति लोगों की आस्था प्रबल हुई। नए भारत ने अराजक तरीके से व्यवस्था बदलने या कोई नया तंत्र विकसित करने के विकल्प को ध्वस्त कर दिया। इसी कारण आरएसएस ने राजनीतिक ताकत बढ़ाने के लिए तमाम संगठनों का गठन किया। 1951 में स्थापित जनसंघ के जरिए सत्ता तक पहुंचने का आरएसएस का सपना पूरा नहीं हुआ। अब आरएसएस को समझ में आने लगा था कि मजबूत होते लोकतंत्र में सत्ता तक पहुंचने का सपना तब तक पूरा नहीं हो सकता, जब तक उसकी नजर में 'नीच' जातियां उसके साथ नहीं जुड़तीं। इसी के चलते 80 के दशक में आरएसएस ने दलितों और शूद्रों यानी पिछड़ों को जोड़ने का प्रयोग किया। आरएसएस के लिए जरूरी था कि हिंदू राष्ट्र बनाने के लिए सामाजिक यथास्थिति बनाए रखते हुए दलितों और शूद्रों-पिछड़ों का हिंदूकरण किया जाए। स्थापित लोकतंत्र के जरिए दलितों- पिछड़ों की मजबूत होती स्थिति और देश में बढ़ती सोशलिस्ट राजनीति से आरएसएस चिंतित था। अगर पिछड़ी जातियां सामाजिक और राजनीतिक रूप से सशक्त होती तो जाहिर है, द्विज जातियों के सांस्कृतिक वर्चस्व को चुनौती मिलती। इसलिए आरएसएस ने धर्म और आस्था के आधार पर शूद्रों-पिछड़ों को जोड़ने और इनकी ताकत को मुसलमानों के खिलाफ इस्तेमाल करने की योजना बनाई। बजरंग दल जैसे संगठन की नींव इसी विचार पर आधारित थी। जनसंघ के स्थान पर 1980 में बनी भाजपा ने 'गांधीवादी समाजवाद' को अपना आदर्श बनाया। इस विचार के आधार पर दलित और पिछड़ों को संघ आकर्षित करना चाहता था। इसके बावजूद भाजपा और आरएसएस ने बहुत रणनीतिपूर्वक राम मंदिर आंदोलन को अपना राजनीतिक एजेंडा बनाया। 1 अक्टूबर 1984 को अयोध्या में विश्व हिंदू परिषद के युवा दल के रूप में बजरंग दल की स्थापना की गई।

इश्तिहार जैसी राजनीति की कहानियां

आरएसएस की सोच पर आधारित झूठ और कपट से भरी है फिल्म केरल स्टोरीइस दौर में याद आती है जिमी कार्टर की मूल्यगत राजनीति

मशहूर शायर बशीर बद्र का शेर है- मुझे इश्तिहार सी लगती हैं ये मोहब्बतों की कहानियाँ

जो कहा नहीं वो सुना करो, जो सुना नहीं वो कहा करो

इसमें थोड़ा फेरबदल कर अगर मोहब्बत की जगह राजनीति करने की गुस्ताखी की जाए, तो आज के माहौल में यह शेर बिल्कुल फिट बैठता है। मौजूदा दौर की सियासत में ऐसी ही कहानियां चल रही हैं। कहा कुछ जाता है और आशय कुछ और होता है। और जो असल मकसद होता है, वो कभी सीधे शब्दों में बयां ही नहीं किया जाता। शब्दों के इस खिलवाड़ से राजनैतिक बाजियां कैसे पलटी जाती हैं, इसके कुछ उदाहरण हाल ही में सामने आए हैं। महाराष्ट्र में राकांपा के मुखिया शरद पवार ने पहले इस्तीफा देने का ऐलान किया, जिससे उनके समर्थक भावुक होकर उनसे पद पर बने रहने की अपील करने लगे। राजनीति और दल में उनका क्या ओहदा है, राज्य को उनकी कितनी जरूरत है, इसकी व्याख्याएं की जाने लगीं। राकांपा की बैठकों का दौर चला और शरद पवार से इस्तीफा वापस लेने का आग्रह किया गया। और फिर शरद पवार ने अपने समर्थकों की भावनाओं का सम्मान करते हुए इस्तीफा वापस ले लिया, अब वे फिर से राकांपा के प्रमुख हैं। श्री पवार के इस कदम से एक तरफ उनकी बेटी सुप्रिया सुले का दबदबा बढ़ गया, क्योंकि शरद पवार के बाद पार्टी की कमान उन्हें ही देने की संभावनाएं सबसे अधिक जतलाई जा रही थीं। और दूसरी तरह भतीजे अजीत पवार को यह सख्त संदेश दे दिया गया कि अगर वे पार्टी और पार्टी सुप्रीमो के खिलाफ जाएंगे, तो उनके राजनैतिक भविष्य के लिए सही नहीं होगा। राकांपा में कोई उन्हें स्वीकार नहीं करेगा और भाजपा में भी उन्हें सम्मानजनक स्थान नहीं मिलेगा। अगले चुनावों के पहले पार्टी की अंदरूनी खटपट को शरद पवार ने बड़ी चालाकी से शांत करा दिया। कुछ ऐसा ही खेल अब राजस्थान में हुआ है। बल्कि यहां तो अशोक गहलोत ने अपने खिलाफ उठ रहे बगावती सुरों को शांत करने के साथ विपक्षी दल भाजपा के लिए भी समस्या खड़ी कर दी।

जीत सुनिश्चित करने वालों की है आज कत्ल की रात

आज रात अख्तियार होंगे हर हथकंडे

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले के चारों नगर निकाय चुनाव के मतदान गुरुवार को सवेरे सात बजे से शाम छह बजे तक होंगे। इसके लिए चित्रकूट इंटर कालेज से पोलिंग पार्टियां बुधवार को सवेरे सात बजे से रवाना कर दी गई हैं। बुधवार को कर्वी नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद के 11, राजापुर नगर पंचायत अध्यक्ष पद के 14 व मानिकपुर नगर पंचायत अध्यक्ष पद के 12 प्रत्याशियों व मऊ नगर पंचायत अध्यक्ष पद के 20 प्रत्याशियों व चारों सीटों के वार्ड मेम्बरों का भाग्य बैलेट बाक्स में कैद हो जायेगा। चुनाव लड़ रहे सभी प्रत्याशियों के लिए बुधवार की रात कत्ल की रात होगी। कमजोर किस्म के प्रत्याशियों ने बुधवार की रात में शराब व रुपए बांटने वालों पर पैनी निगाह रखने का निर्णय लिया है।

चारों नगर निकाय सीटों के अध्यक्ष पद को खड़े प्रत्याशियों में खासतौर पर जीत

हासिल करने के कगार पर खड़े प्रत्याशी मतदाताओं से व्यक्तिगत तौर पर अपने पक्ष में मतदान को अनुनय-विनय में अन्तिम दौर तक जुटे देखे गये। चारों सीटों में जीतना तो महज एक को ही है। ऐसे में जिन्हें पहले से आभास है कि वे चुनाव प्रचार दौरान ऐसा कोई करिश्मा नहीं दिखा सके हैं कि वे चुनाव जीतने की लाइन में हैं। इस तरह के प्रत्याशी अपने बस्ते लगवाने व घर-घर जाकर पर्चियां बंटवाने में भी कोई रुचि लेते नहीं दिखाई दिये। हालांकि पर्चियां तो बीएलओ ने तकरीबन सभी लोगों के घरों तक पहुंचा दी हैं।

इसके बाद भी मतदान के पहले पराजय स्वीकार करने वाले प्रत्याशी भी अपनी जीत के दावे छाती ठोंककर कर रहे हैं, जबकि हकीकत वे सब जानते हैं। ऐसे प्रत्याशियों की पैनी निगाह अब सिर्फ जीत के करीब वाले उन प्रत्याशियों पर है, जो बुधवार की रात अन्तिम दौर तक अपनी जीत सुनिश्चित करने को हर हथकंडे अख्तियार करेंगे। ऐसे प्रत्याशियों को कानूनी शिकंजे में कसने को भी कुछ प्रत्याशी कमर कसे हैं।

भाजपा श्याम गुप्ता निष्कासित, सुशील द्विवेदी को नोटिस

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पार्टी विरोधी गतिविधियों में ब्लाक प्रमुख पहाड़ी सुशील द्विवेदी को कारण बताओ नोटिस और मंडल अध्यक्ष भाजपा नगर श्याम गुप्ता को सीधे निष्कासित कर दिया गया है।

बुधवार को मंडल अध्यक्ष नगर श्याम गुप्ता ने आरोप लगाया कि एक को नोटिस व दूसरे को सीधे निष्कासन की कार्यवाही की गई है। मंडल अध्यक्ष श्याम गुप्ता ने सोशल मीडिया में डाली पोस्ट में लिखा कि समरथ को नहिं दोष गुसाईं का फार्मला अपनाया गया है। उन्हें सीधे निष्कासित किया है। जबकि पहाडी ब्लाक प्रमुख सुशील द्विवेदी को नोटिस देकर खानापूरी की गई है।

भाजपा संगठन में जमकर अंतर कलह चल रही है। चुनाव में इसका सीधा असर दिखाई दे रहा है। कई जनप्रतिनिधि और संगठन में दायित्व संभाले लोग अंदर खाने से निर्दलियों को जिताने के प्रयास में जुटे हैं।

सीआईसी में होगी कर्वी नगर पालिका अध्यक्ष की मतगणना

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपर जिलाधिकारी न्यायिक/रिटर्निंग ऑफिसर वन्दिता श्रीवास्तव ने नगर पालिका परिषद के अध्यक्ष पद के प्रत्याशी को निर्वाचन को प्रारूप-13 अनुसार सूचित किया है कि राज्य निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देश अनुसार अध्यक्ष पद के चुनाव की मतगणना 13 मई शनिवार को सवेरे आठ बजे से कार्य की समाप्ति तक चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी में कराई जाएगी।

24 घंटे चालू रहेंगे नम्बर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। एडीएम कुंवर बहादुर सिंह ने बताया कि नगर निकाय चुनाव के मद्देनजर कलेक्ट्रेट में कंट्रोल रूम बनाया गया है। जिसमें 8737991456 व 8737991438, 8765473609, 8737991423 एवं 09198-298090 नंबर 24 घंटे संचालित रहेंगे।

एएसपी ने पोलिंग पाटियों को दिये निर्देश

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपर पुलिस अधीक्षक चक्रपाणि त्रिपाठी ने आदर्श इण्टर कालेज मानिकपुर में नगर निकाय चुनाव को पोलिंग पार्टी रवानगी स्थल का निरीक्षण किया।

बुधवार को एएसपी चक्रपाणि त्रिपाठी ने निरीक्षण कर निर्देश दिये कि समय से सभी पोलिंग पार्टियां गंतव्य तक पहुंचे। सभी कर्मचारी पोलिंग पार्टियों के साथ निर्धारित वाहनों में जायेंगे। रात में पोलिंग बूथ पर ही रुकेंगे। पोलिंग पार्टियां रवाना होने पर सभी जोनल/सेक्टर मजिस्ट्रेट अपने क्षेत्र में भ्रमण का पोलिंग पार्टियों को चेक करें। नोट करायें कि कौन-कौन पोलिंग पार्टियां पहुंच गयी हैं और कौन-कौन नहीं पहुंची हैं।

इस मौके पर एसडीएम मानिकपुर प्रमेश श्रीवास्तव, सीओ कार्यालय एसपी सोनकर, प्रभारी निरीक्षक मानिकपुर वीर प्रताप सिंह एवं अन्य अधिकारी-कर्मचारी मौजूद रहे।

वन विभाग की टीम की लापरवाही से गुलदार ने बकरी पर किया हमला

बिजनौर। अफजलगढ़,गुलदार ने बकरी को बनाया निबाला। पिंजरे में बकरी को बांधना भूल गया वन विभाग। विभागीय अधिकारियो के कारनामे के खुलासे की मरी बकरी के साथ वीडियो हो रही वायरल। जिससे ग्रामीणों में विभाग के खिलाफ गुस्सा व्याप्त है 2 घंटे तक भी विभाग के लोग सूचना के बाद नही पहुंचे।

गुलदार ने गौशाला में घुसकर बकरी को मार डाला। गोशाला की देखभाल कर रहे लोगो ने किसी तरह से गुलदार को भगाया। जानकारी के अनुसार लगातार हो रहे गुलदार के हमले को देखते हुए वन विभाग की टीम ने शेरगढ़ स्थित गौशाला के पास पिंजरा लगाया जहां पर वन विभाग की टीम रात को पिंजरे में गुलदार बांध देते थे और दिन में बकरी को गौशाला में बांध देते थे। इसी दौरान वन विभाग टीम मंगलवार की रात्रि बकरी को पिंजरे में बांधना भूल गए जिससे वह गौशाला में बंधी रह गई। मौका पाकर गुलदार ने रात्रि के समय में बकरी पर हमला कर दिया बकरी की मय मय सुनकर गौशाला केयरटेकर उठे और किसी तरह शोर करते हुए गुलदार को भगाने में कामयाब हो गए लेकिन जब तक बकरी मर चुकी थी। सूचना के बाद भी 2 घंटे लेट पहुंचे वन विभाग की टीम। गुस्साए ग्रामीणों ने प्रदर्शन करते हुए वन विभाग की टीम पर लापरवाही के आरोप लगाए हैं।

निकाय चुनाव नगर को संवारने का पर्व : महेन्द्र नाथ पाण्डेय

सुल्तानपुर। नगर निकाय चुनाव को लेकर आज केन्द्रीय मंत्री महेंद्र नाथ पांडे ने आज जहां शहर के चौक घंटाघर क्षेत्र में बड़ी जनसभा को संबोधित कर अध्यक्ष पद के भाजपा प्रत्याशी प्रवीन कुमार अग्रवाल की सराहना करते हुए उन्हें सही मायने में जनसेवक बताया। तो वहीं महेन्द्र नाथ पांडे ने जिले के विधायकों एवं विधान परिषद सदस्य तथा संगठन पदाधिकारियों व पार्टी के हजारों कार्यकताओं के साथ पदयात्रा में हिस्सा लेकर नगर भ्रमण भी किया। पद यात्रा में भाजपाईयों पर जगह-जगह नगर के लोगों ने पुष्पवर्षा कर स्वागत किया।जनसभा में अध्यक्ष पद के प्रत्याशी प्रवीन कुमार अग्रवाल ने मुख्य अतिथि केंद्रीय मंत्री महेंद्र नाथ पांडे को गदा एवं अंगवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया।

पोलिंग पार्टियों का डीएम-एसपी ने लिया जायजा

सभी बूथों पर हैं चौकस व्यवस्थायें: डीएम

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी अभिषेक आनन्द व पुलिस अधीक्षक वृंदा शुक्ला ने चित्रकूट इंटर कॉलेज कर्वी में नगरीय निकाय चुनाव की पोलिंग पार्टी रवानगी का औचक निरीक्षण किया। बुधवार को जिलाधिकारी ने कहा कि नगर पालिका परिषद कर्वी, नगर पंचायत मऊ, मानिकपुर व राजापुर के सभी मतदान केंद्रों पर पोलिंग पार्टियां रवाना की गई है। कल मतदान जिला प्रशासन और पुलिस प्रशासन सकुशल संपन्न करायेगा। संवेदनशील-अतिसंवेदनशील मतदान केंद्रों पर फोटोग्राफी, वीडियोग्राफी कराई जाएगी। पिंक बूथ, आदर्श बूथ की भी व्यवस्था की गई है। सभी मतदान केंद्रों पर शुद्ध पेयजल, विद्युत, फर्नीचर की व्यवस्था, शौचालय आदि सभी व्यवस्थाएं चैकस की गई है।

जिलाधिकारी ने उपजिलाधिकारियों से कहा कि अपने क्षेत्र के जोनल-सेक्टर मजिस्ट्रेट की बैठक करें। पुलिस क्षेत्राधिकारियों के साथ भ्रमण कर-के सेक्टर मजिस्ट्रेटों को चेक करें। उन्होंने उप जिलाधिकारियों से कहा कि जो रिजर्व पोलिंग पार्टियां हैं, उनकी हाजिरी अवश्य ले। उनके ठहरने की व्यवस्था सुनिश्चित करें।

इस मौके पर एडीएम कुंवर बहादुर सिंह, एसडीएम कर्वी राजबहादुर, एएसडीएम सतीशचंद्र, सीओ सिटी हर्ष पांडेय, अधिशासी अभियंता लोनिवि प्रांतीय खंड सत्येंद्र नाथ, बीएसए लव प्रकाश यादव समेत संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

छह के कब्जे से 85 क्वार्टर देशी व 25 लीटर महुआ शराब बरामद

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। पुलिस अधीक्षक श्रीमती वृंदा शुक्ला के निर्देश पर नगर निकाय चुनाव को सकुशल सम्पन्न कराने को अवैध शराब निर्माण एवं बिक्री की रोकथाम को जारी अभियान में पुलिस ने पांच लोगों के कब्जे से 85 क्वार्टर देशी व दस लीटर महुआ शराब बरामद की है।

बुधवार को राजापुर थाने के दरोगा राजीव कुमार सिंह की टीम ने रामचन्द्र यादव पुत्र जगन्नाथ यादव निवासी सोतीपुरवा के कब्जे से 25 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

राजापुर थाने के दरोगा कृष्णदेव मिश्रा की टीम ने अनुज सोनकर पुत्र हरिकेश सोनकर निवासी माधवगंज के कब्जे से दस लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

पहाडी थाने के दरोगा त्रिलोकीनाथ मिश्रा की टीम ने राजा हुसैन पुत्र इस्लाम निवासी गढ़ीघाट के कब्जे से 20 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। रैपुरा थाने के दरोगा सिद्धनाथ राय की टीम ने भैरों प्रसाद सेन पुत्र सुखदेव प्रसाद निवासी पैकोरामाफी को गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। मानिकपुर थाने के दरोगा बल्देव सिंह की टीम ने प्रशांत कुमार वर्मा पुत्र नर्मदा प्रसाद निवासी दाडी चमरौड़ी मजरा चुरेह केशरुवा के कब्जे से 20 क्वार्टर देशी शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है।

थानाध्यक्ष सरधुवा प्रवीण कुमार सिंह की अगुवाई में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी की टीम ने ननकू पुत्र छोटा धोबी निवासी धोबिन पुरवा मजरा धौरहरा के कब्जे से 15 लीटर महुआ शराब समेत गिरफ्तार किया है। उसके खिलाफ थाने में आबकारी अधिनियम के तहत मामला दर्ज किया है। टीम में दरोगा सत्यमपति त्रिपाठी, सिपाही राहुल पुरी, महिला सिपाही रचना प्रजापति आदि शामिल रहे।

21 मई को होगी राष्ट्रीय लोक अदालत

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। अपर जिला जज/सचिव पूर्णकालिक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण फारूख इनाम सिद्दकी ने बताया कि राष्ट्र विधिक सेवा प्राधिकरण एवं उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण लखनऊ 21 मई को राष्ट्रीय लोक अदालत लगायेगा।

बुधवार को उन्होंने बताया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में प्रभावी ढंग से सफल बनाने को जनपद न्यायाधीश/ अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण विष्णु कुमार शर्मा की अध्यक्षता में न्यायिक अधिकारियों की बैठक हुयी। अपर जिला जज/सचिव

पूर्णकालिक जिला विधिक सेवा प्राधिकरण फारूख इनाम सिद्दीकी ने बताया कि आगामी लोक अदालत को सफल बनाने को अधिक से अधिक वादों को चिन्हित कर निस्तारण को विशेष जोर दिया। बैठक में अपर जिला जज प्रथम रवीन्द्र कुमार श्रीवास्तव, विशेष न्यायाधीश एससी/एसटी/नोडल अधिकारी राष्ट्रीय लोक अदालत दीप नारायण तिवारी, विशेष न्यायाधीश पाक्सो विनीत नारायण पाण्डेय, अपर जिला जज/त्वरित न्यायालय संजय कुमार, अपर जिला जज/त्वरित न्यायालय सुशील कुमार वर्मा, मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट सूर्यकान्त दुबे, सिविल जज (सीडी) श्रीमती विदुषी मेहा, न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वितीय सुश्री संघमित्रा, सिविल जज (जूडी) एफटीसी सुश्री अंजलिका प्रियदर्शिनी, सिविल जज (जूडि) मऊ सुश्री सैफाली यादव मौजूद रहे।

मैजिक शो से वायु प्रदूषण से बचाव के बारे में किया जागरूक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। ममता हेल्थ इंस्टीट्यूट फॉर मदर एंड चाइल्ड न्यू दिल्ली जाग्रति परियोजना ने मानिकपुर ब्लाक के सरहट गांव में जादू के माध्यम से ग्रामीणों को वायु प्रदूषण के बारे जागरूक किया। बताया गया कि वायु प्रदूषण को प्लास्टिक की चीजों का कम प्रयोग कर रोक सकते हैं।

बुधवार को ग्रामीणों को बताया कि लकड़ी व प्लास्टिक की चीजों को घर के अंदर न जलायें। हमेशा

बाहर खुले स्थान पर या घर के बाहर जलायें। बच्चो के लंच बाक्स मे प्लास्टिक लंच बाक्स का इस्तेमाल बिल्कुल न करे। हमेशा स्टील के लंच बाक्स का इस्तेमाल करे। घर के किचिन में उचित वेंटीलेशन/सामान्य रूप से खुला होना चाहिए, ताकि धुआ की निकासी हो सके। बंद कमरे मे प्लास्टिक/पॉलीथिन बिल्कुल भी न जलाए, उससे निकलने वाली जहरीली गैसों से बचा जा सके। ये जहरीली गैसें फेफड़े मे इन्फैकशन पैदा करती है। टीवी, दमा, कैसर जैसी घातक बीमारी पैदा कर सकती है। गीला कचरा और सूखे कचरे को सही डस्टबिन में डालें।

संस्था के जिला समन्यवक राजीव कुमार पाठक, ब्लॉक कोआर्डिनेटर यशवंत व रीतु साहू समेत टीम के सदस्य मौजूद रहे।

13 दिन बाद बहाल हुई रोडवेज की आनलाइन सेवा

अयोध्या । उ.प्र. परिवहन निगम में 13 दिन के व्यवधान के बाद फिर से पुरानी ऑनलाइन व्यवस्था बहाल हो गई है। मुख्यालय पर नया सर्वर स्थापित कर रोडवेज में एडवांस और तत्काल आनलाइन बुकिंग, मासिक सीजन टिकट निर्माण तथा यूपीआई से पेमेंट सेवा शुरू हो गई है। ई टिकटिंग मशीनों का संचालन रोडवेज महकमें ने पहले ही शुरू कर दिया था। यात्रियों को सुविधा उपलब्ध कराने तथा व्यवस्थाओं के डिजिलीकरण और आधुनिक तकनीकि के इस्तेमाल को लेकर परिवहन निगम ओर से तमाम व्यवस्थाओं को ऑनलाइन किया गया था। ठेके पर संचालित सेवा में कुछ दिन पूर्व ही परिवहन निगम ने नई सेवा प्रदाता कंपनी से अनुबंध किया है। 25 अप्रैल की सुबह सेवा प्रदाता कंपनी का डाटा हैक कर हैकर्स की ओर से बड़ी रकम की मांग की गई थी। प्रकरण में प्रबंधन की ओर से अज्ञात के खिलाफ केस दर्ज करायी गई थी और तकनीकी टीम डाटा रिकवरी में लगाया गया था। हैकिंग के चलते परिवहन निगम में सभी ऑनलाइन सेवाएं वातानुकूलित और वाल्वो बसों की ऑनलाइन बुकिंग, यूपीआई से पेमेंट तथा ई टिकटिंग मशीन बंद हो गई थी, जिसके चलते रोडवेज विभाग को कामकाज मैनुअल व्यवस्था में लाना पड़ा था। बीते 13 दिनों से परिचालको की ओर से पुरानी प्रचलित व्यवस्था के तहत यात्रियों को कागज का टिकट दिया जा रहा था। उधर तकनीकी टीम की ओर से रिस्टोर तथा कमांड सेंटर की ओर से डाटा टेस्टिंग के बाद आंशिक रूप से रविवार को ई टिकटिंग मशीन का इस्तेमाल शुरू कर दिया गया था और मुख्यालय से सूचना जारी कर सोमवार की शाम से ऑनलाइन सेवाओं को चालू करने की बात कही गई थी। नये सर्वर की स्थापना और लांचिंग के बाद देर शाम यात्रियों को ऑनलाइन बुकिंग की पूर्ववत सुविधा बहाल कर दी गई। भविष्य में इस तरह की कोई पुनरावृत्ति न होने पाए इसके लिए विभाग की ओर से साइबर सुरक्षा मानकों के तहत बेस्ट ऑफ दी इन्डस्ट्री मानकों का अनुपालन सुनिश्चित कराने तथा नये सर्वर, समस्त टिकटिंग अप्लीकेशन्स इत्यादि के वृहद्व परीक्षण के बाद यात्रियों को ऑनलाइन टिकट बुक करने, बस के अन्दर यूपीआई के माध्यम से भुगतान तथा निगम के टिकट काउन्टर से डिजिटल अथवा कैश के माध्यम से टिकट प्राप्त करने की सुविधा बहाल करने का दावा किया है। अयोध्या डिपो के सहायक क्षेत्रीय प्रबंधक आदित्य प्रकाश का कहना है कि नये सर्वर के सफल परीक्षण के बाद सभी ऑनलाइन सेवाओं को फिर से चालू कर लिया गया है। ईटीएम सेवा एक दिन पूर्व ही बहाल हो गई थी। उनका कहना है कि रात से सभी सेवाएं सफलतापूर्वक संचालित हो रही हैं।

टीबी मुक्त अयोध्या के लिए 15 से चलेगा विशेष अभियान

अयोध्या। देश को वर्ष 2025 तक क्षय मुक्त बनाने के लिए क्षय रोगियों को चिन्हित कर जल्द से जल्द उनका उपचार किया जाएगा। इसके लिए जिले के सभी हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर (एचडबल्यूसी) के जरिये 15 मई से 21 कार्य दिवसों तक विशेष अभियान चलाकर घर-घर टीबी रोगी खोजे जाएंगे। जिला क्षय रोग अधिकारी डा. आर.के. सक्सेना ने बताया शासन की ओर से इस संबंध में विस्तृत दिशा-निर्देश जारी किए गए हैं। जिसके अनुसार जिले के दूरस्थ क्षेत्र, मलिन बस्ती, अथवा पिछले दो वर्षों में जिन क्षेत्रों में कोविड या टी0बी0 के रोगी अधिक चिन्हित हुए हैं। वहां टीबी रोगी खोजने के लिए घर-घर अभियान चलाया जाएगा। इसके लिए जिले के सभी 241 हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर पर तीन -तीन कैंप हर सप्ताह लगाए जाएंगे। कैंप में एएनएम व आशा कार्यकताओं की टीम क्षय रोगियों की खोज करेंगी । साथ ही कम्युनिटी हेल्थ ऑफिसर (सीएचओ) क्षय रोगियों के चिन्हीकरण, जांच, उपचार, ट्रीटमेंट, निक्षय पोषण योजना के अंतर्गत डीबीटी, काउंसिलिंग व मनोसामाजिक सहयोग प्रदान करेंगे। क्षय रोग अधिकारी ने बताया कि एएनएम व आशा घर-घर जाकर टीबी के संभावित लक्षण वाले व्यक्तियों को चिन्हित कर उनका बलगम एकत्रित करेंगी। इसके बाद सीएचओ समस्त सैम्पल को नजदीकी जांच केंद्र पर भेजेंगे। जांच पॉजिटिव आने पर तत्काल नोटिफिकेशन कर तुरंत मरीज का उपचार शुरू कर दिया जाएगा, साथ ही उन्हें निक्षय पोषण योजना के तहत छह माह या उपचार चलने तक हर माह 500 रुपये टीबीटी के माध्यम से मरीज के बैंक में सीधे ट्रांसफर की जाएगी ।

जिला कार्यक्रम समन्वयक अमंत प्रताप सिंह ने बताया कि टीबी मुक्त भारत का लक्ष्य हासिल करने के लिए वर्ष 2022 में पहली बार टीबी संबंधी सेवाओं के सुदृढ़ीकरण के लिए आयुष्मान भारत हेल्थ एंड वेलनेस सेंटर्स को शामिल किया गया। इसके अलावा हर माह की 15 तारीख को एचडब्ल्यूसी पर एकीकृत निक्षय दिवस का आयोजन किया जाता है। एकीकृत निक्षय दिवस के मौके पर आशा द्वारा चिन्हित क्षय रोग से मिलते जुलते लक्षण वालों की बलगम जांच कराई जाती है। साथ ही शुगर और एचआईवी की स्क्रीनिंग भी की जाती है। टीबी के प्रमुख लक्षण - दो हफ्ते से ज्यादा खांसी आना, शाम के समय बुखार आना, लगातार वजन में कमी आना, सीने में दर्द होना, थकान लगना, रात मे पसीना आना, भूख न लगना, बलगम में खून आना।

वन विभाग के अधिकारी ने लकड़ी से भरी ट्रैक्टर ट्राली किया जब्त

नगीना। बटाईदार किसान ने क्षेत्र के लकड़ी ठेकेदार को हजारों रुपए में दो सरकारी पेड़ बेचे शिकायत मिलने पर वन विभाग के अधिकारी ने लकड़ी से भरी ट्रैक्टर ट्राली को अपनी सुपुर्दी में लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुट गई है।

नगीना हरेवली मार्ग स्थित ग्राम बेनीपुर कोपा निवासी कृषक दिलावर सिंह ने अपने जॉब की जमीन गांव के ही महिपाल सिंह को दे रखी है। महिपाल सिंह बटाईदार ने चोरी चोरी खेत के पास सड़क किनारे खड़े जामुन एक अन्य सरकारी पेड़ को क्षेत्र के लकड़ी ठेकेदार कल्लू को हजारों रुपए में भेज दिए थे। लकड़ी ठेकेदार कल्लू ने रविवार के दिन मॉल खरीदे सरकारी पेड़ों को काट कर ट्रैक्टर ट्राली में भरकर ले जा रहा था। इसी बीच साहूवाला वन रेज के अधिकारी इरफान अंसारी ने अपनी टीम के साथ मौके पर पहुंचकर लकड़ी से भरे ट्रैक्टर ट्राली को अपने कब्जे में ले लिया और साहूवाला रेंज में अपने ऑफिस के पास ले जाकर खड़ी करा दिया। इस संबंध में साहूवाला रेंज के रेंजर अधिकारी इरफान अंसारी से दूरभाष पर कई बार संपर्क करने का प्रयास किया, लेकिन उन्होंने फोन रिसीव नहीं किया।

ट्रेन से कटकर युवक की मौत, परिजनों में कोहराम

मिजार्मुराद। क्षेत्र के गुड़िया गांव में रविवार की रात ट्रेन से कटकर वकील बिंद पुत्र स्व. लल्लन बिंद उम्र (25) वर्ष की दर्दनाक मौत हो गई।रेलवे की सूचना पर मौके पर पहुंचे कछवारोड चौकी के एसआई पवन यादव ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया।

जानकारी के अनुसार गुड़िया गांव निवासी वकील बिंद मुम्बई में परिवार के साथ रहकर मजदूरी का काम करता था।बीते एक माह पहले गांव आया था और रेलवे लाइन के समीप ही अपना मकान बनवा रहा था।रविवार को युवक अपने पत्नी मनीषा देवी को लेने औराई थाना क्षेत्र के भवानीपुर ससुराल गया था लेकिन पत्नी नही आई।इससे क्षुब्ध होकर युवक घर आया और रेलवे लाइन के किनारे रेलवे ट्रैक पर बैठ गया।उसी समय प्रयागराज की तरफ से आ रही ट्रेन की चपेट में आने से युवक की दर्दनाक मौत हो गई।मृतक छह भाइयों में चौथे नंबर का था व एक तीन साल के बेटी का पिता बताया गया।मृतक के मौत की सूचना मिलते ही पत्नी मनीषा मायके से सोमवार की सुबह ससुराल वापस आई।वही पत्नी मनीषा समेत परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल था।

फांसी के फंदे पर लटका मिला युवक का शव

कुसमरा/मैनपुरी। पुलिस चैकी क्षेत्र के गांव नगला भूपति में गृहक्लेश से परेशान एक युवक ने फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। परिजनों की सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा है।

बाखमुत में पीछे हट रहे रूसी सैनिक, वैगनर ग्रुप चीफ ने अपने ही सैन्य कमांडरों को बताया बेवकूफ

मॉस्को। यूक्रेन में रूस फंसता दिख रहा है। अब हालात ये हैं कि रूस के वैगनर ग्रुप के चीफ ने अपने ही रक्षा विभाग पर गंभीर आरोप लगाए हैं। वैगनर ग्रुप के चीफ येवगेनी प्रिगोझिन ने आरोप लगाया है कि यूक्रेन के बाखमुत में रूसी सैनिक अपनी पोजिशन से पीछे हट रहे हैं। प्रिगोझिन ने कहा कि 'फ्रंटलाइन को तबाह करने के लिए सबकुछ किया जा रहा है। हमारे रक्षा विभाग की एक यूनिट अपनी पोजिशन छोड़कर भाग गई है।' बता दें कि इन दिनों यूक्रेन के बाखमुत में रूस और यूक्रेन के बीच भयंकर लड़ाई चल रही है।

वैगनर चीफ प्रिगोझिन खुलकर अपने देश के रक्षा विभाग को कोस रहे हैं। हाल ही में उन्होंने एक वीडियो जारी कर आरोप लगाए थे कि उनके वैगनर ग्रुप के लड़ाकों को पर्याप्त हथियार नहीं भेजे जा रहे हैं। मंगलवार को रूस के विक्ट्री डे परेड के दौरान प्रिगोझिन ने मैसेजिंग एप टेलीग्राम पर एक वीडियो जारी किया। जिसमें उन्होंने आरोप लगाया कि रूसी सेना के कमांडरों की बेवकूफी की वजह से सैनिक अपनी पोजिशन छोड़कर भाग रहे हैं।

प्रिगोझिन ने कहा कि एक सैनिक इसलिए नहीं मरना चाहिए क्योंकि उसका लीडर बेवकूफ है। सैनिकों को जो कमांड मिल रही हैं, वो पूरी तरह से आपराधिक हैं। हालांकि रूस के रक्षा विभाग ने अपने बयान में कहा कि वैगनर ग्रुप बाखमुत के पश्चिमी हिस्से में लड़ रहा है। रक्षा विभाग ने कहा कि सैनिकों को मदद दी जा रही है। वैगनर ग्रुप चीफ ने ये भी कहा कि 'अगर उनके सैनिक अपनी पोजिशन छोड़ देते हैं तो उन्हें गद्दार समझा जाएगा लेकिन अगर हमारे पास हथियार ही नहीं होंगे तो हम अपनी पोजिशन छोड़ देंगे और फिर पूछा जाना चाहिए कि असल में मातृभूमि से गद्दारी कौन कर रहा है? ये वो लोग हैं, जो हथियारों की सप्लाई के आदेश पर हस्ताक्षर करते हैं।'

ट्यूनीशिया में यहूदी धार्मिक स्थल के पास गोलीबारी में तीन की मौत, 10 से अधिक घायल

मॉस्को। ट्यूनीशिया के जेरबा में एक यहूदी धर्मिक स्थल के पास हुई गोलीबारी में एक सुरक्षा गार्ड समेत तीन की मौत हो गई, जबकि 10 अन्य घायल हो गए। यरुशलम पोस्ट ने यह जानकारी दी। ट्यूनीशियाई आंतरिक मंत्रालय ने कहा कि नौसेना के एक जवान ने एक सहयोगी और दो नागरिकों की गोली मारकर हत्या कर दी, क्योंकि उसने वार्षिक यहूदी तीर्थयात्रा के दौरान जेरबा के एक धार्मिक स्थल तक पहुंचने की कोशिश की थी। हमलावर को सुरक्षा गार्डों ने मार गिराया है। विदेश मंत्रालय ने कहा कि मारे गए नागरिक फ्रांसीसी और ट्यूनीशियाई थे। अभी यह स्पष्ट नहीं है कि मारे गए नागरिक तीर्थयात्री थे। गृह मंत्रालय ने कहा कि घायलों में छह सुरक्षा एजेंट और चार नागरिक शामिल हैं।

सुरक्षा के लिए धार्मिक स्थल को किया गया बंद

मंत्रालय ने कहा कि धार्मिक स्थल को बंद कर दिया गया था और जो लोग अंदर थे उन्हें सुरक्षित रखा गया। अधिकारी घटना की जांच कर रहे हैं। जेरबा ट्यूनीशिया का मुख्य यहूदी समुदाय का धार्मिक स्थल है।

20 लोगों की हो गई थी मौत

2002 में जेरबा में तीर्थयात्रा के दौरान मंदिर के प्रवेश द्वार पर एक ट्रक बम विस्फोट में करीब 20 लोगों की मौत हो गई थी। अल कायदा ने उस हमले की जिम्मेदारी ली थी। हमले में मारे गए लोग जर्मन, फ्रांसीसी और ट्यूनीशियाई थे। मंत्रालय ने कहा कि आरोपी ने धार्मिक स्थल पर पहुंचकर वहां तैनात सुरक्षा इकाइयों पर गोलियां चलाईं। हालांकि, सुरक्षा कर्मियों ने भी जवाबी फायरिंग की। जवाबी फायरिंग में आरोपी प्रवेश द्वार पर पहुंचने से पहले ही मारा गया। घटना का एक वीडियो भी वायरल हो रहा है।

यूक्रेन में रॉकेट हमले की चपेट में आया पत्रकार, मौके पर हुई मौत

नई दिल्ली। रूस-यूक्रेन के बीच चल रहे संघर्ष का क्या हल निकलेगा इसका अभी अंदाजा लगाना काफी मुश्किल है। दोनों देशों के बीच लड़ाई को एक साल से ज्यादा होने को है, दोनों तरफ के लोग मारे जा रहे हैं। इन सब के बीच युद्ध को कवर करने वाले पत्रकार भी बलि चढ़ रहे हैं। एक रिपोर्ट मे मुताबिक, मंगलवार को अंतरराष्ट्रीय समाचार एजेंसी एएफपी न्यूज के लिए काम करने वाले एक पत्रकार की रॉकेट हमले में मौत हो गई। एक मीडिया रिपोर्ट में कहा कि 32 वर्षीय अरमान सोल्डिन यूक्रेनी सैनिकों के साथ यात्रा कर रहे एएफपी पत्रकारों की एक टीम के साथ थे। इस दौरान एक रॉकेट ऊपर से गिरा फिर वह आग की चपेट में आ गए। बाकी किसी सदस्य को कोई चोट नहीं आई। आगे मीडिया रिपोर्ट में बताया कि दोपहर हमला बखमुत के निकट चासिव यार कस्बे में हुआ। रूसी सेना नौ महीने से शहर पर कब्जा करने की कोशिश कर रही है, जिससे बखमुत युद्ध की सबसे लंबी लड़ाई का केंद्र बन गया है। न्यूज एजेंसी एएफपी के अध्यक्ष फैब्रिस फ्राइज ने कहा कि उनकी मौत यूक्रेन में संघर्ष को कवर करने वाले पत्रकारों के सामने आने वाले जोखिम और खतरों की एक भयानक याद होगी।

इमरान की गिरफ्तारी के बाद पूरे पाकिस्तान में हिंसा, इस्लामाबाद में निषेधाज्ञा लागू

इस्लामाबाद। पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद उनकी पार्टी पाकिस्तान तहरीक-ए-इंसाफ (पीटीआई) के कार्यकर्ताओं ने इस्लामाबाद में प्रदर्शन और हंगामा किया। इसके बाद पाकिस्तान पुलिस ने शहर में निषेधाज्ञा लागू कर दी है। प्रदर्शनकारी लाहौर में सेना के कमांडरों के आवास और रावलपिंडी में सेना मुख्यालय के परिसर में घुस गए हैं। पाकिस्तानी सेना के रावलपिंडी मुख्यालय में तोड़फोड़ की गई और इमरान खान समर्थकों ने कोर कमांडर हाउस में आग लगा दी। धारा 144 लागू कर दी गई है और पाक सेना ने देखते ही गोली मारने का आदेश दिया है। इमरान खान के समर्थकों ने लाहौर कैंट स्थित कॉर्प्स कमांडर के घर पर हमला किया। सरगोधा, पेशावर, लाहौर और मर्दन में कोर कमांडर मुख्यालय पर बड़ा हमला किया गया है।

पूर्व पीएम इमरान खान की गिरफ्तारी के बाद पाकिस्तान में प्रदर्शनकारी लाहौर में सेना के कमांडरों के आवास और रावलपिंडी में सेना मुख्यालय के परिसर में घुस गए हैं। केपीके के इमरान खान समर्थकों के एक बड़े पठान समूह ने पीएम हाउस, जीएचक्यू, आईएसआई कार्यालयों, कोर कमांडर हाउस, 111 ब्रिगेड और सीएम हाउस पर हमला करने के लिए हथियारों के साथ इस्लामाबाद और रावलपिंडी की ओर मार्च करना शुरू कर दिया है। इस्लामाबाद हाईकोर्ट

परिसर से इमरान खान की गिरफ्तारी पर हाई कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश आमेर फारूक ने नाराजगी जताते हुए मामले का संज्ञान लिया है। उन्होंने इस्लामाबाद के पुलिस प्रमुख और गृह सचिव को 15 मिनट के भीतर तलब किया। इमरान खान की गिरफ्तारी से पहले मंगलवार को एक आतंकवाद रोधी अदालत ने कई मामलों में उनकी अंतरिम जमानत अर्जी मंजूर कर ली थी। खान अभी देश भर में 121 मामलों का सामना कर रहे हैं, जिनमें राजद्रोह, आतंकवाद, ईशनिंदा और हिंसा भड़काने के आरोप शामिल हैं। जज ने अतिरिक्त अटॉर्नी जनरल को भी 15 मिनट में अदालत के सामने पेश होने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि अगर इस्लामाबाद पुलिस प्रमुख कोर्ट में पेश नहीं होते हैं, तो वो पाकिस्तान के प्रधानमंत्री को समन करेंगे। उन्होंने कोर्ट परिसर में गिरफ्तारी पर तल्ख़ रूख अपनाते हुए पूछा कि आप हमें बताएं कि गिरफ्तारी किस मामले में की गई है। अटॉर्नी जनरल 15 मिनट के बजाय 45 मिनट के बाद कोर्ट में पहुंचे जिसके बाद चीफ जस्टिस भड़क गए। दोबारा सुनवाई शुरू होने के बाद ची फ जस्टिस ने गुस्से में कहा कि हमने आपको 15 मिनट के भीतर अदालत में पेश होने के लिए कहा था, लेकिन आप 45 मिनट के बाद आए। इस्लामाबाद के आईजी ने जवाब दिया कि उन्हें इमरान की गिरफ्तारी के बारे में मीडिया से पता चला था। उन्होंने अदालत में इमरान खान की गिरफ्तारी का वारंट पेश करते हुए जज से कहा कि उन्हें भ्रष्टाचार से जुड़े एक मा मले में गिरफ्तार किया गया है। जज ने कहा कि अगर गिरफ्तारी कानून का उल्लंघन है तो मैं उचित आदेश जारी करूंगा।

नेपालः प्रचंड ने की भ्रष्टाचार के खिलाफ जनयुद्ध की तरह आक्रामक होने की घोषणा

काठमांडू। नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल प्रचंड ने भ्रष्टाचार के खिलाफ 'माओवादी जनयुद्ध' की तरह आक्रामक होने की घोषणा की है। उन्होंने लोगों से भ्रष्टाचार के खिलाफ नई लड़ाई का समर्थन करने की भी अपील की है। प्रचंड ने कावरे जिले के कार्यक्रम में कहा कि वह फिर से भ्रष्टाचार के खिलाफ माओवादी जनयुद्ध की तरह समर्थन चाहते हैं। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए जनयुद्ध की तरह सहयोग की जरूरत है। प्रचंड का यह बयान ऐसे समय में आया है, जब सरकार फर्जी भूटानी शरणार्थियों के मामले में अपनी जांच जारी रखे हुए है। उन्होंने यह भी बताया है कि इस मामले में उन पर दबाव और धमकियां आ रही हैं। विपक्षी सीपीएन (यूएमएल) के अध्यक्ष

केपी शर्मा ओली ने प्रचंड से मुलाकात की और उन पर दबाव बनाया। फर्जी शरणार्थियों के मामले में यूएमएल नेताओं और उनके परिवार के सदस्यों पर जांच की गई है। इस मामले में सत्तारूढ़ पार्टी नेपाली कांग्रेस के अध्यक्ष शेर बहादुर देउबा की पत्नी आरजू देउबा, पूर्व गृह मंत्री बालकृष्ण खांड के अलावा कई हाई प्रोफाइल नाम जुड़े हैं। नेपाल की संसद अब इस मुद्दे को लेकर गरमा गई है। संसद में फर्जी शरणार्थियों के मामले पर गरमागरम बहस हो रही है।

अदालत ने यौन शोषण मामले में डोनाल्ड ट्रंप को ठहराया दोषी, पांच मिलियन अमेरिकी डॉलर का लगाया जुर्माना

वाशिंगटन। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को मैनहैटन संघीय अदालत ने यौन शोषण और मानहानि के मामले में दोषी ठहराया है। अदालत ने डोनाल्ड ट्रंप पर पांच मिलियन अमेरिकी डॉलर का जुर्माना लगाया है। बता दें कि पूर्व राष्ट्रपति ट्रंप पर 1990 के दशक में एक महिला के साथ यौन शोषण का आरोप लगा है।

79 वर्षीय पूर्व लेखिका जीन कैरोल ने ट्रंप पर मुकदमा दायर किया था। जिसमें आरोप लगाया गया था कि उन्होंने बर्गडॉर्फ गुडमैन स्टोर के चेंजिंग रूम में उसके साथ दुष्कर्म किया था। उन्होंने कहा कि इस मामले को सार्वजनिक करने में 20 साल से अधिक का समय लगा क्योंकि वह ट्रंप से डरी हुई थी। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि अक्टूबर 2022 में सोशल मीडिया पर एक पोस्ट लिखकर उनकी प्रतिष्ठा को नुकसान पहुंचाया। हालांकि, अदालत ने ट्रंप को दुष्कर्म का दोषी नहीं पाया है। अदालत ने कैरोल के इस दावे को खारिज कर दिया कि डोनाल्ड ट्रंप ने उसके साथ दुष्कर्म किया।

ट्रंप ने आरोपों को नकारा था- हालांकि ट्रंप ने खुद पर लगे आरोपों को नकारते हुए कहा था कि 'यह घटिया और हास्यास्पद कहानी है और यह बनाई गई है, इसमें कोई सच्चाई नहीं है।' उल्लेखनीय है कि लेखिका कैरोल ने अक्तूबर 2022 में एक सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए खुलासा किया था कि 90 के दशक में ट्रंप ने उसके साथ दुष्कर्म किया था। वहीं ट्रंप ने इसे बनाई गई कहानी करार दिया था और दुष्कर्म के आरोपों से इंकार किया था।

दो अन्य महिलाओं ने भी लगाए हैं ट्रंप पर आरोप

ट्रंप के खिलाफ दो अन्य महिलाओं ने भी यौन उत्पीड़न के आरोप लगाए हैं। जिनमें पीपल मैगजीन की पूर्व रिपोर्टर नताशा स्टेनॉफ का नाम शामिल है। नताशा का आरोप है कि ट्रंप ने 2005 में अपने फ्लोरिडा स्थित मार ए लोगो क्लब में उसके साथ बदतमीजी की थी। वहीं ट्रंप पर आरोप लगाने वाली दूसरी महिला जेसिका लीड्स ने भी आरोप लगाए हैं कि साल 1979 में ट्रंप ने उसका यौन उत्पीड़न किया था।

कैलाश मानसरोवर यात्रा हुई मुश्किल, चीन ने वीजा शुल्क बढ़ाया

काठमांडू। कैलाश मानसरोवर की यात्रा पर जाने वाले नेपालियों, भारतीयों और अन्य विदेशी यात्रियों के लिए चीन ने वीजा शुल्क में बढ़ोतरी और सख्त एंट्री करके मुश्किलें बढ़ा दी हैं। चीन सख्त नियम बनाकर भारत से तीर्थयात्रियों को रोकने की कोशिश कर रहा है। विशेष रूप से भारतीय तीर्थयात्रियों को लक्ष्य बनाकर नए नियम पेश किए गए हैं। नेपाल की ट्रैवल एजेंसियों ने यात्रियों के लिए नियमों को आसान बनाने की पहल शुरू की है। ट्रेकिंग एजेंसी एसोसिएशन ऑफ नेपाल और एसोसिएशन ऑफ कैलाश टूर ऑपरेटर्स नेपाल ने चीनी राजदूत चेन सॉन्ग को एक ध्यानाकर्षण पत्र दिया है। इसमें अन्य देशों के पर्यटकों की तुलना में भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए अधिक यात्रा शुल्क और कई सख्त नियमों का उल्लेख किया गया है। नए नियमों के मुताबिक भारत के पर्यटकों को तिब्बत जाने की अनुमति के लिए नई दिल्ली में वीजा लेना आवश्यक कर दिया

गया है। वीजा के लिए पर्यटक को स्वयं उपस्थित होना होगा, ऑनलाइन आवेदन करना संभव नहीं है। दूतावास में बायोमेट्रिक विवरण लेना अनिवार्य है। इससे पहले यह जानकारी सीमा पर अप्रवासन कार्यालय में प्रस्तुत की जा सकती थी। नए नियमों के मुताबिक कैलाश मानसरोवर यात्रा पर जाने वाले भारतीय पर्यटकों को वीजा के लिए कम से कम पांच लोगों के समूह में होना चाहिए। वीजा लेते वक्त कम से कम चार पर्यटक शारीरिक रूप से मौजूद होने चाहिए। नेपालियों के लिए वीजा शुल्क भी बढ़ा दिया गया है। कोरोना महामारी से पहले नेपाली वीजा शुल्क 4200 रुपये से चुकाते थे, जिसे बढ़ाकर 13 हजार रुपये कर दिया गया है। तीर्थयात्रियों के कुली बनकर जाने वालों को अब 300 डॉलर देने होंगे, जबकि पहले 100 डॉलर देना ही काफी होता था। काठमांडू में नेपालियों को ले जाने के लिए बायोमेट्रिक डिटेल्स की भी व्यवस्था की गई है।

भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए सख्त नियम लाने के बाद नेपाल की ट्रैवल एजेंसियों के हौसले पस्त हो गए हैं। हवाई मार्ग से काठमांडू से ल्हासा तक कैलाश मानसरोवर की यात्रा नेपालगंज से सिमिकोट से हिलसा तक की यात्रा से अधिक महंगी है। 2016 के बाद से कैलाश मानसरोवर की यात्रा में काफी इजाफा हुआ है। चीन ने कैलाश मानसरोवर यात्रा से जुड़ी ट्रैवल एजेंसियों के लिए भी 60 हजार डॉलर का बॉन्ड रखने का मानक तय किया है। कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए चीन की सख्ती और फीस में बढ़ोतरी से नेपाल के कारोबारी चिंतित हैं।

नेपाल के सांसद ने बोलने का समय नहीं दिए जाने पर सदन में कपड़े उतारे

काठमांडू। नेपाल में निर्दलीय सांसद अमरेश कुमार सिंह ने बोलने का समय नहीं दिए जाने के विरोध में सदन में अपनी कमीज और बनियान उतार दी। नेपाली कांग्रेस के पूर्व नेता सिंह ने पिछले साल सरलाही से निर्दलीय उम्मीदवार के रूप में चुनाव लड़ा था, क्योंकि नेपाली कांग्रेस ने उन्हें टिकट नहीं दिया था। भारतीय राजधानी दिल्ली स्थित जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय से पीएचडी करने वाले सिंह ने उस समय अपने कपड़े उतार दिए, जब प्रतिनिधि सभा (एचओआर) के अध्यक्ष देवराज घिमिरे ने उन्हें बोलने की अनुमति नहीं दी। घिमिरे ने उन्हें चेतावनी दी कि अगली बैठक में अगर उन्होंने विनम्रता से व्यवहार नहीं किया तो कार्रवाई की जाएगी। अपने कपड़े उतारने से पहले सिंह ने कहा, मैं भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने के लिए शहीद होने के लिए तैयार हूं। घिमिरे ने उनसे संसदीय मर्यादा का ख्याल रखने को कहा। सिंह ने, हालांकि अध्यक्ष के किसी भी अनुरोध को सुनने से इनकार कर दिया और अपने कपड़े उतारने लगे। इस पर प्रतिक्रिया देते हुए कुछ सांसदों ने सिंह की मेडिकल जांच कराने की मांग की है। नेपाल की संसद के इतिहास में इस तरह की यह पहली घटना थी।

विक्ट्री डे पर गरजे पुतिन, यूक्रेन से युद्ध का नतीजा तय करेगा रूस की किस्मत

मॉस्को। रूस की राजधानी मॉस्को में विक्ट्री डे परेड के दौरान राष्ट्रपति व्लादिमिर पुतिन की गर्जना सुनाई दी। देशवासियों को संबोधित करते हुए पुतिन ने कहा कि यूक्रेन से युद्ध का नतीजा रूस की किस्मत तय करेगा। मंगलवार को आयोजित विक्ट्री डे परेड में रूसी सेना ने अपनी ताकत दिखाकर दुनिया को चुनौती

रूस ने इंटरकॉन्टिनेंटल बैलेस्टिक मिसाइल लॉन्चर का भी प्रदर्शन किया।

इस मौके पर राष्ट्रपति पुतिन ने कहा कि सभ्यता बदलाव के कगार पर है। रूस के खिलाफ युद्ध छेड़ा गया है और रूस अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करेगा। हमारे लिए देश से बढ़कर कुछ नहीं है। उन्होंने कहा कि यूक्रेन पश्चिमी देशों का गुलाम बन गया है, लेकिन रूस को पता है कि उसे क्या करना है। सर्वोच्चता की कोई भी विचारधारा रूस को स्वीकार नहीं है। पुतिन ने यूक्रेन की तुलना नाजियों से की और कहा कि रूसी मातृभूमि के खिलाफ युद्ध छेड़ा गया है।

पुतिन ने कहा कि इस युद्ध का नतीजा ही हमारी मातृभूमि की किस्मत तय करेगा। विक्ट्री डे परेड में पुतिन ने अपने भाषण में कहा कि जो सैनिक यूक्रेन युद्ध में भाग ले रहे हैं, उन्हें उन पर गर्व है। पुतिन ने यूक्रेन युद्ध को स्पेशल मिलिट्री ऑपरेशन करार देते हुए कहा कि रूस का भविष्य इन्हीं सैनिकों पर निर्भर है। पुतिन ने सभी लोगों से एकजुट होकर अपने इन नायकों का समर्थन करने की अपील की।

अमेरिकी मॉल में गोलीबारी में मारी गई भारतीय इंजीनियर का शव भारत भेजने की तैयारी

ह्यूस्टन। अमेरिका के ह्यूस्टन स्थित भारतीय वाणिज्य दूतावास ने कहा कि वह टेक्सास के मॉल में हुई गोलीबारी में जान गंवाने वाली भारतीय इंजीनियर ऐश्वर्या थतिकोंडा का पार्थिव शरीर स्वदेश ले जाने के लिए औपचारिकताएं पूरी करने में परिजनों की मदद कर रहा है। इसके साथ दूतावास ने यह भी पुष्टि की कि इस दुखद घटना में दो भारतीय घायल भी हुए हैं। मैककिनी निवासी ऐश्वर्या (26) अपने एक दोस्त के साथ मॉल में खरीदारी कर रही थीं कि तभी डलास में ऐलेन प्रीमियम आउटलेट्स में बंदूकधारी मौरिसियो गार्सिया ने उन पर गोली चला दी। गोलीबारी शनिवार को अपराह्न लगभग साढ़े तीन बजे हुई जब मॉल का बाहरी हिस्सा खरीदारों की भीड़ से भरा था। गोलीबारी में कम से कम आठ लोग मारे गए और हमलावर मौरिसियो गार्सिया (33) को भी पुलिस ने मार गिराया था।

भारत के तेलंगाना राज्य में रंगा रेड्डी जिला अदालत में जिला न्यायाधीश की बेटी ऐश्वर्या परफेक्ट जनरल कॉन्ट्रैक्टर्स एलएलसी में प्रोजेक्ट मैनेजर थीं। ह्यूस्टन स्थित भारतीय

वाणिज्य दूतावास ऐश्वर्या के तथा गोलीबारी में घायल दो अन्य भारतीयों के परिवार के संपर्क में है। ह्यूस्टन में भारतीय महावाणिज्य दूत असीम महाजन ने बताया कि वे ऐश्वर्या का पार्थिव शरीर उनके परिवार के पास भेजने के लिए औपचारिकताएं पूरी करने में परिजनों की मदद कर रहे हैं। महाजन ने कहा, गोलीबारी की इस दुखद घटना में दो अन्य भारतीय नागरिक भी घायल हुए हैं। हम स्थानीय एवं अस्पताल प्रशासन, घायलों के रिश्तेदारों और समुदाय के नेताओं के साथ लगातार संपर्क में हैं। सूत्रों के अनुसार घायलों में से एक की हालत गंभीर है।

वाणिज्य दूतावास के अधिकारी हरसंभव मदद करने के लिए डलास में मौजूद हैं।

ऐश्वर्या के सुपरवाइजर श्रीनिवास चालुवाड़ी के अनुसार, सभी उसे अच्छे व्यवहार के लिए याद कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि वह 18 मई को 27 साल की होने पर उसका परिवार उसके लिए जन्मदिन की पार्टी की योजना बना रहा था। तेलुगु एसोसिएशन ऑफ नॉर्थ अमेरिका के नेता अशोक कोल्ला थतिकोंडा के पार्थिव शरीर को भारत भेजने की व्यवस्था कर रहे हैं। मारे गए अन्य लोगों में तीन साल का एक बच्चा, उसके माता पिता, एक सुरक्षा गार्ड और प्राथमिक स्कूल जाने वाली दो बहन शामिल हैं। घटना में सात अन्य लोग भी घायल हुए हैं और उनका अस्पताल में इलाज हो रहा है।

भारत और कनाडा निवेश बढ़ाने, छात्रों की आवाजाही को लेकर बातचीत में तेजी लाने पर सहमत

नई दिल्ली। भारत और कनाडा समन्वित निवेश बढ़ाने, सूचना आदान-प्रदान, कुशल कामगारों, पेशेवरों तथा छात्रों की आवाजाही को लेकर बातचीत में तेजी लाने पर सहमति जताई है। दोनों देश यह मानते है कि द्विपक्षीय आर्थिक संबंधों को मजबूत बनाने में इनका महत्वपूर्ण योगदान है।

व्यापार और निवेश पर भारत-कनाडा के बीच छठी मंत्रिस्तरीय वार्ता बुधवार को कनाडा में हुई। वार्ता के बाद एक संयुक्त वक्तव्य जारी किया गया। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने बताया कि वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और कनाडा की अंतरराष्ट्रीय व्यापार, निर्यात संवर्धन, लघु उद्यम तथा आर्थिक विकास मंत्री मैरी एनजी ने बैठक में व्यापक व्यापार समझौते के महत्व पर जोर दिया।

बयान के मुताबिक गोयल और एनजी के बीच कृषि वस्तुओं, रसायन, हरित प्रौद्योगिकी, बुनियादी ढांचा, वाहन, स्वच्छ ऊर्जा तथा इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्रों में भी सहयोग बढ़ाने के उपायों पर चर्चा हुई। दोनों पक्षों ने पलायन और आवाजाही पर बातचीत बढ़ाने पर सहमति जताई है। इसके साथ ही दोनों मंत्रियों ने महत्वपूर्ण खनिजों के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने को लेकर सरकार के स्तर पर तालमेल के महत्व पर सहमति जताई।

इस बीच मेरी एनजी ने भारत के जी-20 समूह की अध्यक्षता के प्रति कनाडा का समर्थन व्यक्त किया। उन्होंने जी-20 व्यापार और निवेश कार्यसमूह में भारत द्वारा प्राथमिकताओं को जारी रखने का समर्थन किया। उन्होंने संकेत दिया कि वे भारत में अगस्त महीने में होने वाली निर्धारित आगामी जी-20 व्यापार और निवेश मंत्री स्तरीय बैठक में भाग लेने की इच्छुक हैं। उल्लेखनीय है कि भारत ने वित्त वर्ष 2022-23 में अप्रैल-फरवरी के दौरान कनाडा को 3.8 अरब डॉलर का निर्यात किया है, जबकि वित्त वर्ष 2021-22 में यह 3.76 अरब डॉलर रहा था। कनाडा से आयात वित्त वर्ष 2022-23 के पहले 11 महीनों में 3.77 अरब डॉलर रहा जो वित्त वर्ष 2021-22 में 3.2 अरब डॉलर था। दरअसल भारत में लिथियम, टाइटेनियम, वैनेडियम, कोबाल्ट, निकल और ग्रेफाइट जैसे महत्वपूर्ण खनिजों की भारी मांग है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित।
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI No: UPHIN/2001/09025
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:-
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादों का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा।